

*Published by*  
Shri Mangaldas L. Gbadiali  
For  
The Managing Trustees of  
Shri VIJAYADEVSUR SANGH G'AN SAMITI  
The Godiji Jain Temple and Charities  
Pudhoni, Bombay 3

The Trustees of ( Shri Vijayadevsur Sangh )  
The Godiji Jain Temple & Charities

- (1) Sheth Gokuldas Lalubhai
- (2) Sheth Parachand Rupchand
- (3) Sheth Laxmichand Durlabhji.
- (4) Sheth Bhaichandbhai Naginbhai Jhaveri.
- (5) Sheth Keshavlal Bulakhidas
- (6) Sheth Mohanlal Maganlal.
- (7) Sheth Mohanlal Tarachand J P
- (8) Sheth Laxmichand Raichand Sarvaiya
- (9) Sheth Ratanchand Choonilal Dalia
- (10) Sheth Mulchand Vadilal
- (11) Sheth Fulchand Naginbhai Jhaveri.
- (12) Sheth Ranchhodas Chhotalal.

*Printed by*  
K. G SHARANGPANI  
Aryabhushan Press  
915/1 Shivnagar Poona 4.

SHRI VIJAYADEVSUR SANGH

SERIES No 9

# श्री मद्भगवतीसूत्रम्

( पञ्चदश गोशालकाख्य शतकम् )

श्रीमदभयदेवसूरिवर्यविहितविवरणयुतम् ॥

EDITED BY

Prof N V VAIDYA M. A

*Fergusson College Poona 4*

1954



## Preface

The University of Bombay has prescribed the Fifteenth *Sāhita* from the *Bhagavata Sūtra* (Gosāla Mata) for the M A examination for the years 1954 and 1955. It was edited by Dr P L. Vaidya as an Appendix to his edition of *Uvaśagadaśāo*. But that edition is now out of print and the students, therefore are finding it difficult to procure the copies of the text. Many students wrote to me requesting me to undertake the publication but I was hesitating—for obvious reasons I then requested my friend Shri Popatlal Shah M L A., to do something in the matter and I am glad to state that he immediately promised to defray the entire publication costs and asked me to proceed with the work immediately. It was a very generous gesture on his part and I am indeed very grateful to him for the same.

In the meantime I had also written to the Trustees of the Shri Godiji Maharaj Jain Temple and charities regarding the difficulty experienced by the students and the Trustees though none of them knew me personally very kindly and generously agreed to publish the text as well as the commentary on behalf of their series viz The Vijayadevsur Sangh Series. I am indeed grateful to the enlightened Trustees of the above-mentioned charities for their very generous & spontaneous response to my request. I have no doubt that the students of the M A class would also be equally grateful to the Trustees for this *Dnyāna Dāna*.

I am indebted to my student friend Shri P N Mulay B A B T, for preparing the Press-copy of the commentary.

18-12-54

Fergusson College }  
Poona 4

N V VAIDYA

श्री गोर्दी पञ्चनाथाय नमः ।

## PUBLISHERS NOTE

We the members of Shree Vijayadevsur Sangh Gnan Samiti are glad to publish this **GOSĀLA-MATA** the Fifteenth chapter of Shree Bhagavati Sūtra-as the 9th Volume of Vijayadevsur Sangh Series We are very much grateful to Professor N V Vaidya, M A for advising us to take up the publication work and for his taking so much interest to give facilities to the student world All honour goes to Shri N V Vaidya for editing this work and giving his valuable time without any expectations

We will feel ourselves doubly rewarded if more and more students come forward to take up the study of Ardha-Magadhi Language

Members Of  
Vijayadevsur Sangh Gnan Samiti

- (1) Sheth Keshavlal Bulakhidas
- (2) Sheth Ratanchand Chunilal Dalia
- (3) Sheth Panachand Rupchand
- (4) Sheth Laxmichand Ratchand Saravaiya
- (5) Sheth Fattehchand Zaverbhai
- (6) Narottamdas Bhagvandas Shah.
- (7) Mohanlal Dipchand Choksi
- (8) Chhotalal Girdharbhai
- (9) Mangaldas Lallubhai Ghadiali

### OUR PUBLICATIONS

- |  |       |
|--|-------|
| (1) श्री सुब्रह्मण्यस्य भाग १                  | ४-०-० |
| (२) ' ' भाग २                                  | ३-०-० |
| (३) श्री पञ्च मतिब्रह्मण्यस्य सार्थ (द्वितीयः) |       |
| विशेषतः द्वितीयः पृष्ठ ४४                      | २-०-० |
| (४) नामाङ्कित नागरिक, शेठ मोतीशह (द्वितीयः)    | २-०-० |
| (5) JAINISM IN GUJARAT                         |       |
| ( 1100 A D to 1600 A. D )                      | 5 0-0 |

# ॥ श्रीमद्भगवतसूत्रम् ॥

पद्मरसम सय ॥ (मूत्राणि ५३९-५६०)

नमो मुयदेवयाप भगवईप ॥

१ तेण कालेण तेण समणण सावथी नाम नयरी होत्था ।  
 वण्णो । तीस ण सात्थीण नयरीए वट्ठिया उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाए 5  
 तत्थ ण कौट्टए नाम चेशए होत्था वण्णआ । तत्थ ण सात्थीए  
 नयरीए हालाहला नाम कुंभकारी आजीविओवासिया परिचसइ  
 अट्ठा जात्र अपरिभूया, आजीवियसमयसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा  
 त्रिणिच्छियट्ठा अट्ठिर्मिजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो आजीवियसमए  
 अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे ति आजीवियसमणण अप्पाण 10  
 भावेमाणी विहरइ ॥

१ तेण कालेण तेण समणण गोसाले मत्तलिपुत्ते चउब्बीसरास-  
 परियाए हालाहलाए कुमकारीए कुमकरावणसि आजीवियसध-  
 सपरिवुड आजीवियसमणण अप्पाण भावेमाणे विहरइ । तए ण तस्स  
 गोसालस्स मत्तलिपुत्तरस्स अन्नया कयाइ इमे छ दिसायरा अतिय 15  
 पाउठमवित्था । त जहा-१ साणे, १ कलदे, ३ कण्णियारे, ४ अच्छिद्धे,  
 ५ अग्निप्रेसायणे, ६ अज्जुणे गोमायुपुत्ते । तए ण ते छ दिसायरा  
 अट्ठिमेह पुव्वगय भगवसम सप्यहिं १ भइइसणेहिं निज्जुहति, २ सा  
 गोसाल मत्तलिपुत्त उवट्ठाइसु । तए ण से गोसाले मत्तलिपुत्ते तेण  
 अट्ठगस्स महानिमित्तस्स केणइ उलोयमेत्तेण सत्वेसिं पाणाण सत्वेसिं 20  
 भूयाण सत्वेसिं जीणाण सत्वेसिं सत्ताण इमाइ छ अणइकमाणिज्जाइ  
 वागरणाइ वागरेइ । त जहा-१ लाम , २ अलाम १ सुह ४ इक्ख

५ जीविय ६ मरण तथा । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते तेण  
अट्टगस्स मत्तानिमित्तस्स केणइ उलोयमेत्तेण सावत्थीए नयरीए  
अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली कवलप्पलावी,  
असंखू सय्यसुप्पलावी अजिण जिणसद्ध पगासेमाणे विहरइ ॥  
( सू० ५३९ )

३ तए ण सात्थीए नयरीए सिंघाडग णव पेटसु बहुजणे  
अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव एव पस्वेइ—‘एव खलु देवाणुप्पिया,  
गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी णव पगासेमाणे विहरइ, से  
कहमेय मत्ते एय १’ । तए कालेण तए समण्ण सामी समासद्ध, जाव  
10 परिता पडिगया । तेण कालेण तेण समण्ण समणस्स भगवआ  
महावीरस्स जट्टे अन्तेवासी इदभूइ नाम अणगारे गोश्रमणेत्तेण जाव  
उट्टुउट्टेण एव चहा विस्सण निवेदुदए णव अडमाणे बहुजणसद्ध  
निसामेइ, बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४—‘एय खलु  
देवाणुप्पिया, गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे  
15 विहरइ, से कहमेय मत्ते एय १’ ॥

४ तए ण भगव गोयमे बहुजणस्स अतिय एयमट्टु सोच्चा निसम्म  
जाव जायसद्धे णव भत्तपारणं पडिइसद्ध, जाव पज्जुवासमाणे एय  
वयासी—‘एव खलु अह भते, छट्टु त चव णव जिणसद्ध पगामेमाण  
विहरइ; से कहमेय भते, एय १’ । त इच्छामि ण भते गोसालस्स  
20 मखलिपुत्तस्स उट्टाणपरियाणिय परिकहिय । ‘गोयमा’ इ समणे भगव  
महावीरे भगव गायम एव वयासी—‘ज ण गोयमा से बहुजणे अन्न  
मन्नस्स एवमाइक्खइ ४— एव खलु गोसाले मखलिपुत्ते जिणे  
जिणप्पलावी जाव पगामेमाणे विहरइ त ण मिच्छा । अह पुण  
गोयमा, एवमाइक्खामि जाव पस्वामि—‘एव खलु एयस्स गोसालस्स  
25 मखलिपुत्तस्स मखलिनाम मख विया हीत्था । तस्स ण मखलिस्स  
मखस्स महा नाम भारिया हात्था, सुकुमाल जाव पडिइया । तए

ण सा भद्रा भारिया अन्नया कयाइ गुद्विणी यावि होत्या । तेण कालेण तेण समएण सरवणे नाम सनिवेसे होत्या, रिद्धत्थिमिय जाव मन्निभप्यगासे वासादीए ४ । तत्थ ण सरवणे संनिवेसे गोवहुले नाम माहणे परिवसइ, अट्टे जाव अपरिभूए, रिउन्वेय जाव सुपरिनिट्टिए यावि होत्या । तस्स ण गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला 5 यावि होत्या । तए ण से मंखली मखे अन्नया कयाइ भद्राए भारियाए शुट्टिणीए सट्टि चित्तफलगहत्थयए मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे पुट्टाणुपुत्ति चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सनिवेसे जेणेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ २ गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि भडनिकपेय करेइ, २ सरवणे 10 सनिवेसे उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अट्टमाणे वसहीए सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेइ, मग्गणगवेसण करेमाणे तस्सेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि वासावासं उवागए ॥

५ तए ण सा भद्रा भारिया नण्ह मासाण धहुपडिपुण्णाण 15 अट्टट्टमाण राइदियाण धीइकताण सुकुमाल जाव पडिरूयग दारग पयाया । तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पक्कारसमे दिवसे धीइकते जाव दारसाहे दिवसे अयमेयारूव गोण गुणनिप्फन्न नाम धेज्ज करति - जम्हा ण अट्ट इमे दारए गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाए त हीउ ण अट्ट इमस्स दारगस्स नामधेज्ज 20 'गोसाले', 'गोसाले' ति । तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्ज करति 'गोसाले' ति । तए ण से गोसाले दारए उम्मुक्कवालभावे त्रिण्णायपरिणयमेत्ते जोत्तणगमणुप्यत्ते सयमेव पाडिपक्क चित्तफलग करेइ ३ चित्तफलगहत्थयए मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥ (सू० ५४०)



६ तेण कालेण तेण समएण अह गोयमा, तसि वासाइ अगार-  
 वासमग्गहे वसित्ता अम्मापिअहिं देवत्तगणहिं एवे जहा भावगाए पाव  
 एण दवदूसमादाय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पवइत्तए ।  
 तए ण अह गोयमा, पढम वास अद्धमासअद्धमासण खममाणे  
 5 अट्टियगाम निरसाए पढम अतरावास वासावास उवागए । दोअ  
 वास मासमासेण खममाणे पुट्ठाणुपुट्ठिव चरमाणे गामाणुगाम  
 दूइज्जमाणे जेणए रायगिहे नयरे, जेणए नालदा धाहिरिया, जेणए  
 तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, अहापट्टिअ उग्गह आगिण्टामि,  
 \* तंतुवायसालाए एगदेससि वासावास उवागए । तए ण अह  
 10 गोयमा, पढम मासखमण उवसपज्जित्ताण विहरामि ॥

७ तए ण से गोसाल मखलिपुत्ते चित्तफलगत्यगए  
 मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे पुट्ठाणुपुट्ठिव चरमाणे जाव  
 दूइज्जमाणे जेणए रायगिहे नगरे, जेणेव नालदा धाहिरिया,  
 जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, \* २ तंतुवायसालाए  
 15 एगदेससि भडानिकवेव करइ, \* रायगिह नयरे उच्चनीय जाव अन्नथ  
 कथ वि वसहिं अलममाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेससि वास-  
 वास उवागए, जत्थेव ण अह गोयमा । तए ण अह गोयमा, पढममास-  
 वखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्कमामि, २ नालदा-  
 धाहिरिय मज्झमज्जेण जेणए रायगिह नयरे तेणेव उवागच्छामि  
 20 २ रायगिहे नयरे उच्चनीय जाव अद्धमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिह  
 अणुपविट्ठे । तए ण से विजए गाहावइ मम एज्जमाणे पासइ,  
 २ ता दइत्तु<sup>०</sup> सिप्पामेव आसणाओ अभुट्ठइ, २ पायपीढाओ पच्चोरुहइ,  
 २ पाउयाआ ओमुयइ, २ एगसाठिय उत्तरासग करेइ, २ अजलि-  
 मउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, २ मम तिकवुत्तो  
 5 आयाहिणपयाहिण करेइ, २ मम वइइ नमसइ, २ मम विउलेण

असणगणखाइमसाइमण पडिलाभेस्तामि ति कहु तुट्ट, पडिलाभेमाणे  
 रि तुट्टे, पडिलाभिए वि तुट्टे । तए ण तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेण  
 द मसुद्धमं दायगसुद्धेण पडिगाएगसुद्धेण तिग्गिहेण तिकरणसुद्धेण  
 दाणण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निवद्ध, ससारं पारितीकए,  
 गिहसि य से दमाइ पच दिग्गाइ पाउभूयाइ, त जहा-१ वसुधारा बुट्टा, 5  
 २ दमद्धरणे कुसुमे निवाइए, ३ चसुक्खेरे कए, ४ आहयाआ देव  
 दुइमीआ ५ अतरा विय ण आगासे 'अहा दाणे दाणे' ति घुट्टे । तए ण  
 रायगिहे नगरे सिंघाडग णव पहेसु घट्टजणो अमन्नस्स एउमाइक्खइ  
 ४, धत्ते ण देवाणुप्पिया, विजए गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया  
 विजए गाहावई, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया विजए गाहावई, कय 10  
 लक्खणे ण देवाणुप्पिया, विजए गाहावई, कया ण लीया देवाणुप्पिया,  
 विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया, माणुस्सए जम्म-  
 जीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स ण गिहसि तहाखवे साहु  
 साहुखरे पडिलाभिए समाणे इमाइ पच दिग्गाइ पाउभूयाइ, त जहा-  
 १ वसुधारा बुट्टा, वाव 'अहो दाणे दाणे' ति घुट्टे । त धत्ते कयत्थे 15  
 कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लीया, सुलद्धे माणुस्सए जम्म-  
 जीवियफले विजयस्स गाहावइस्स ॥

८ तए ण स गोसाले मत्तल्लिउत्ते बहुजणस्स अतिए एयमट्ट  
 सांञ्जा निसम्म समुप्पइस्सए समुप्पन्नकोउहत्ते जेणेए विजयस्स  
 गाहावइस्स गिहे तेणेए उरागच्छइ, १ सा पासइ विजयस्स 20  
 गाहावइस्स गिहसि वसुधार बुट्ट, दसद्धरणे कुसुमे निवाडिय, मम  
 च ण विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाण पासइ,  
 २ सा एट्टुट्टे जेणेए मन अतिए तेणेए उरागच्छइ, २ सा मम  
 तिक्खुतो आयादिगपयाहिण करेइ, २ सा मम धइ नमसइ,  
 २ सा मम एवं वयासो- 'तुज्जे ण भने, मम धम्मावरिथा,' अह ण 25

- तुञ्ज भग्मतवासी । तए ण अह गोयमा, गोसालरस्स मखलिपुत्तरस्स  
 एयमट्ट नो आट्टामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए सच्चिट्टामि । तए ण  
 अह गोयमा, रायगिहाओ नयरओ पडिनिवसमामि, २ ता नालद  
 वाहिरिय मज्झमज्झेण जणेउ ततुवायसाला, तेणव उवागच्छामि  
 5 २ ता दोच्च मासवसमण उवसपज्जित्ताण विहरामि । तए  
 ण अह गोयमा, दोच्च मासवसमणपारणगसि ततुवायसालाओ  
 पडिनिवसमामि, २ नालद वाहिरिय मज्झमज्झेण जणेउ रायगिट्ठे नये  
 जाव अट्टमाणे आणन्दस्स गिह अणुप्पविट्टे । तए ण से आणदे  
 गाहावई मम एज्जमाण पासइ, एवं षट्ठ विजयरस नवरं मम त्रिउलाए  
 10 खज्जगविहीए पडिलाभेरसामि ति तुट्ठे, सेव तं चव चाव तच्च  
 मासवसमण उवसपज्जित्ताण विहरामि । तए ण अह गोयमा, तच्च  
 मासवसमणपारणगसि ततुवायसालाओ पडिनिवसमामि, २ तहेव  
 जाव अट्टमाणे सुणदस्स गाहावस्स गिह अणुपविट्ठे । तए ण से  
 सुणदगाहावई, एव जहेव विजग्गाहवई नवरं मम सच्चकामगुणिण्ण  
 15 भौयणेण पडिलाभेद, सेव तं चव चाव चउत्थ मासवसमणं  
 उवसपज्जित्ताण विहरामि । तसिं ण नालदाए वाहिरियाए अदूरसाम्भते  
 एत्थ ण कोहाए नाम सनिवेसे होत्था वण्णओ । तत्थ ण कोहाए  
 सनिवेसे बहुले नाम माहणे परिवसइ अट्ठे जाव अपरिभूए, रिउ दय  
 जाव सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था । तए ण से बहुले माहणे  
 20 कत्तियचाउम्मासियपाडिवगसि विउलेण महुघयसज्जुत्तेण परमन्नेण  
 माहणे आयामेत्था । तए ण अह गोयमा, चउत्थमासवसमणपारणगसि  
 ततुवायसालाओ पडिनिवसमामि २ नालद वाहिरिय मज्झमज्झेण  
 निग्गच्छामि २ जेणेव कोहाए सनिवेसे तेणव उवागच्छामि कोहाए  
 सनिवेसे उच्चनीय जाव अट्टमाणे बहुलस्स माहणस्स गिह  
 25 अणुप्पविट्ठे । तए ण से बहुले माहणे मम एज्जमाण, तहेव चाव,

मम विउलेण बहुधयसजुत्तेण परमत्तेण पडिलामेऱसामि त्ति तुट्टे ।  
सकं ऱहा विउयस्म ॥

९ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम ततुवायसालाप अपासमाणे  
रायगिहे नयरे सद्धिभतरवाहिरियाए मम सच्चओ समता भग्गणगवेसण  
करेइ, मम कत्थ वि सुइ वा खुइ वा पयत्ति वा अलभमाणे जेणेव 5  
ततुवायसाला तेणेऱ उवागच्छइ, २ साडियाओ य पाडियाओ य  
कुडियाओ य वाहणाओ य चित्तफलग च माहणे आयामेइ,  
२ सउत्तरोट्ट मुइ करेइ, २ ततुवायसालाओ पडिनिक्खमइ, २ नालद  
वाहिरिय मज्झमज्झण निग्गच्छइ, २ जेणेऱ कोहागसनिवेसे तेणेव  
उवागच्छइ । तए ण तस्स कोहागस्स सनिवेसस्स वाहिया बहुजणो 10  
अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४—‘ धत्ते णं देवाणुप्पिया, बहुले माहणे  
त वेव जाव, जीवियफले बहुलस्स माहणस्स । तए ण तस्स गोसालस्स  
मखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अतिय पयमट्ट सोच्चा निसम्म अयमेयास्से  
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—‘ जारीसिया ण मम धम्मायरियस्स  
धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इट्ठी जुत्ती जसे बल 15  
वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, नो रलु अत्थि  
तारिसिया ण अन्नस्स कस्सइ तहाएवस्स समणस्स वा माहणस्स वा  
इट्ठी जुत्ती जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, त निस्सदिद्ध च  
ण एत्थ मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगए महावीरे भविस्सइ  
त्ति कट्टु कोहागसनिवेसे सद्धिभतरवाहिरिए मम सच्चओ समता 20  
भग्गणगवेसण करेइ, मम सच्चओ जाव करेमाणे कोहागसनिवसस्स  
वाहिया पणियभूमीए मए सद्धि अभिसमन्नागए । तए ण से गोसाले  
मखलिपुत्ते इट्टुत्तुट्टे मम तिक्खगुत्तो आयाहिण पयाहिण जाव नमसित्ता  
एव ययासी—‘ तुव्भे ण भतं मम धम्मायरिया, अहं ण तुज्झ अतेवासी’ ।  
तए ण अहं गोयमा गोसालस्स मखलिपुत्तस्स पयमट्टं पडिसुणेमि । 25

तए ण अह गीयमा, गोसालेण मन्वलिपुत्तेण सद्धि पणियभूमीए  
छासाइ लाभ अलाभ सुख दुक्ख सक्कारमसक्कार पच्चणुभवमाणे  
अणिच्चजागरिय विहस्तिथा ॥ (सू० ५४१)

- १० तए ण अह गायमा, अब्बया कयाइ पट्टमन्वरयकालसमयासि  
अप्पजुट्टिकायासि गोसालेण मन्वलिपुत्तेण सद्धि सिद्धत्थगामाओ  
नयरओ कुम्मगाम नयर मपट्टिण विहाराए । तस्स ण सिद्धत्थगामस्स  
नयरस्स कुम्मगामस्स नयरस्स य अतरा एत्थ ण मह एगे तिलथभए  
पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरेज्जमाणे सिरीए अर्द्धे उवसोभेमाणे २ चिट्ठे ।  
तए ण से गोसाले मन्वलिपुत्ते त तिलथभग पासइ, २ ता मम वदइ  
१० नमसइ, २ ता नमसित्ता एव वयासी-‘एस ण भन्ने, निलथभए किं  
निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सइ? एण य सत्त तिलपुप्फजीवा  
उदाइत्ता २ काहिं गच्छिहिंति, काहिं उवज्जिहिंति?’ तए ण अह  
गीयमा, गोसाल मन्वलिपुत्त एव वयासी-‘गोसाला, एस ण तिलथभए  
निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ, एण य सत्त तिलपुप्फजीवा  
१० उदाइत्ता २ एयस्स चेव तिलथभगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त  
तिला पच्चायाइस्सति । तए ण से गोसाल मन्वलिपुत्ते मम एव  
आइक्खमाणस्स एयमट्ट नो सइहइ, नो पत्तियइ, नो रोप्पइ, एयमट्ट  
असइहमाणे अपत्तियमाणे अरोपमाणे मम पणिहाए ‘अय ण  
मिच्छावादी भयउ’ ति कट्टु मम अतियाओ साणिय २ पच्चोसक्कइ,  
२० २ ता जेणव से तिलथभए तेणेव उवागच्छइ, २ त तिलथभग  
सलेट्टुयाय चेव उप्पाहेइ, २ ता एगत एहेइ । तक्खणमत्त च ण  
गायमा, दिग्घे अभज्जइए पाठभूए । तए ण मे दि व अट्ठभवइलए  
खिप्पामेव पतणतणाएइ, खिप्पामेव परिज्जुयाइ, खिप्पामेव नच्चोदग  
नाइमट्टिय परिणएपकुसिय रयरएणविणासण दिअ सलिलादग वास  
२५ वासइ, जेण से तिलथभए आसत्थ पच्चायाए, तत्थेव वद्धमूले, तत्थेव

पशट्टिण । ते य नत्त तिलपुत्तज्जावा उदाइत्ता २ तन्सय तिलथमगस्स  
एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पच्चायाया ॥ (सू० ५४०)

११ तए ण अह गायमा गोसालेण मंगलिपुत्तेण सद्धि जेणेय  
कुम्मगामे नयरे तणेय उपागग्गामि । तए ण तस्स कुम्मगामस्स  
नयरस्स वहिया वेसियायण नाम बालतयस्सी छट्टुत्तुण 5  
आगेक्खित्तण तपाक्खमेण उट्टु बाहाओ पागिज्जिय २ सूराभिमुहे  
आयाणभूर्माए आयाणमाणे विहरइ । आदच्चतेयताप्रियाओ य से छप्प-  
दीआ सयआ समता अभिनिस्सयति, पाणभूयज्जीयसत्तदयट्टयाए च ण  
पडियाआ २ तथय भुज्जो २ पच्चोरुभइ । तए ण स गालाल मंगलिपुत्ते  
वेसियायण बालतयस्सि पासइ, २ ता मम अतियाओ सणिय १ 10  
पच्चोसक्कइ, २ सा जेणेय वेमियायणे बालतयस्सी तणय उपागच्छइ,  
२ वेसियायण बालतयस्सि एय वयासी—‘ किं भय मुणी, मुणिण,  
उदाट्टु जूयासेज्जायरए ’ । तए ण से वेमियायणे बालतयस्सी गोसालस्स  
मंगलिपुत्तस्स एयमट्टु नो आहाइ नो परियाणइ, तुमिणीए सच्चिट्टइ ।  
तए ण से गालाले मंगलिपुत्ते वेसियायण बालतयस्सि दोच्च पि 15  
तच्च पि एय वयासी—‘ किं भय मुणी, मुणिण, जाय सेज्जायरए ’ । तए  
ण स वेसियायणे बालतयस्सी गोसालेण मंगलिपुत्तेण दोच्च पि तच्च  
पि एय बुत्त समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाण आयाणभूर्माओ  
पच्चोरुहइ २ तेयासमुग्घाएण समोहन्नइ, २ सत्तट्टपयाइ पच्चोसक्कइ,  
२ गोसालस्स मंगलिपुत्तस्स गहाए सरीरणस्सि तेय निसिरइ । 20  
तए ण अह गायमा, गोसालस्स मंगलिपुत्तस्स अणुकपणट्टयाए  
वेसियायणस्स बालतयस्सिस्स तेयपडिसाहरणट्टयाए एत्थ ण  
अतरा अह सीयलिय तयलस्स निसिरामि, जाए सा मम सीयलियाए  
तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतयस्सिस्स मा जसिणा तेयलेस्सा  
पडिहया । तए ण से वेमियायण बालतयस्सी मम सीयलियाए 25

- तेयलेस्साए सीओसिण तेयलेस्स पडिह्य जाणित्ता गोसालस्स  
 मरालिपुत्तरस्स सररिगस्स किंचि आवाह वा वावाह वा छविच्छय  
 वा अकीरमाण पासित्ता सीओसिण तेयलम्म पडिसाहरइ, १ मम एव  
 वयासी- 'से गयमेय भगव, से गयमेय भगव ।' तए ण गोसालं  
 5 मरालिपुत्ते मम एव वयासी- किं ण भते, एस जूयासेज्जायरए तुम्मे  
 एव वयासी- 'से गयमेय भगव, से गयमेय भगव ।' तए ण अह  
 गोयमा गोसाल मरालिपुत्त एव वयासी- 'तुम ण गोसाला  
 वेसियायण बालतवस्सि पाससि, १ त्ता मम अतियाओ सणिय  
 १ पच्चोसक्कसि, जेणेव वेसियायणे बालतरस्सी तेणेव उवागच्छसि,  
 10 वेसियायण बालतवस्सि एव वयासी- 'किं भव मुणी, मुणिण, उदाहु  
 जूयासेज्जायरए !' तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ट  
 नो आहाइ नो परिजाणइ, सुसिणीए सचिट्ठइ । तए ण तुम गोसाला,  
 वेसियायण बालतवस्सि वीच्च पि तच्च पि एव वयासी- 'किं भव  
 मुणी, मुणिण, जव सेज्जायरए !' तए ण से वेसियायणे बाल-  
 15 तवस्सी तुम वीच्च पि तच्च पि एव बुत्ते समाणे आसुरुत्ते जव पच्चो-  
 सक्कइ, १ त्ता तव वहाए सररिगसि तेयलेस्स निस्सिरइ । तए ण अह  
 गोसाला तव अणुक्कपणट्टयाए वेसियायणस्स बालतवस्सि मम  
 सीयतेयलेस्सापडिसाहरणट्टयाए पत्थ ण अतरा सीविलिय तेयलेस्स  
 निस्सिरामि, जव पडिह्य जाणित्ता तज य सररिगस्स किंचि आवाह  
 वा वावाह वा छविच्छेय वा अकीरमाण पासित्ता सीओसिण तेयलेस्स  
 20 पडिसाहरइ मम एव वयासी- 'से गयमेय भगव, से गयमेय भगव ।  
 तए ण से गोसालं मरालिपुत्ते मम अतियाओ एयमट्ट मीच्चा निसम्म  
 भीए ज व सजायमए मम वदइ नमसइ, १ त्ता एव वयासी- 'कह ण  
 भते, सवित्तविउत्तयलेस्से भवइ !' तए ण अह गोसालं, गोसालं

मखलिपुत्त एव वयासी- 'जे ण गोसाला, एगाए सणहाए कुम्मास-  
पिडियाए एगेण य वियडासएण छट्टउट्टण अणिविखत्तेण तवोकम्मेण  
उट्टु वाहाओ पगिज्झय १ जाव विहरइ स ण अतो छण्हं मामाण  
सखित्तपिउल्लतेयलेभ्भे भउइ । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम  
एयमट्टु सम्म त्रिणएण पडिसुणइ ॥ (सू० ५४३)

5

१५ तए ण अह गायमा अक्षया कयाइ गोसालेणं मखलि-  
पुत्तेण सद्धिं कुम्मगामाओ नयराओ सिद्धत्थगाम नयर  
सपट्टिए विहाराए, जाहे य मो त वेस हव्वमागया, जत्य ण से  
तिलथमए । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एव वयासी-  
'हुव्वे ण भत, तथा मम एव आइक्खट्ठ जाव पट्ठवट्ठ-10  
गोसाला एस ष तिलथमए निप्फज्जिरसइ, नो न निप्फज्जिरस',  
तं चव जाव पञ्चायाइससति, 'त ण मिच्छा । इम च ण पच्चक्खमेउ  
ईसइ- 'एस ण से तिलथमए नो निप्फन्ने, अनिप्फन्नमेउ ते य  
सत्त तिलपुप्फजीवा उदाइत्ता १ नो एयस्म च्चेउ तिलथंमगस्स एगाए  
तिलसगलियाए सत्त तिला पञ्चायाया । तए ण अह गोयमा, गोसालं 15  
मखलिपुत्त एव वयासी- तुम ण गोसाला, तथा मम एव आइक्ख-  
माणस्म जाव पट्ठवमाणस्स एयमट्टु नो सइहमि, नो पत्तियमि, ना  
रोणमि, एयमट्टु अम्मइहमाण अपत्तियमाणे अरोणमाणे मम पणिहाए  
'अय ण मिच्छावादी भवउ' ति कट्टु मम जातियाओ सणिय २  
पञ्चोसक्कसि, १ ता जेणेउ से तिलथमए तेणेव उवागच्छसि जाव 20  
एगतमते एवेसि । तक्कएणमेस गोसाला, दिव्वे अम्मइहएण पाउभूए ।  
तए ण से दिव्वे अम्मइहएण खिप्पामेव त थव जाव तस्स च्चेउ  
तिलथमगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पञ्चायाया । त एस  
ण गोसाला, से तिलथमए निप्फन्ने, नो अनिप्फन्नमेव । ते य सत्त  
तिलपुप्फजीवा उदाइत्ता १ एयस्स च्चेव तिलथंमयस्स एगाए 25



तिलसगलियाण सत्त तिला पञ्चायाया। एउ खलु गोसाला, यणस्मड-  
काइया पउट्टपरिहारं परिहरति । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम  
एउमाइवउत्तमाणस्स जाव पएउमाणस्म एयमट्ट नो सददद ३, एयमट्ट  
असददमाणे जाव अरापमाणे जेणेउ से तिलथमए तेणेउ उवागउउद,  
5 ताओ तिलथमयाओ त तिलसगलिय सुहुइ, २ ता करयलसि सत्त  
तिले पप्फोडेइ । तए ण तस्स गोसालस्म मखलिपुत्तस्म ते सत्त तिने  
गणमाणस्स अयमेयास्वे अउत्तियए जाव समुप्पज्जित्था-‘एव खलु  
सउजीया वि पउट्टपरिहार परिहरति’ । एउ ण गोयमा, गोसालस्स  
मखलिपुत्तस्स पउट्टे एउ ण गोयमा, गोसालस्स मखलिपुत्तस्म मम  
10 अतियाओ आयाण अउक्रमणे पणत्ते ॥ (सू० ५४४)

१३ तए ण स गोसाले मखलिपुत्ते एगाए सगहाए कुम्मासिपोडेयाए  
उ एगण च त्रियडासएण उट्टउट्टेण अणिकिखत्तेण तवाकस्सेण उट्ट  
वाहाओ पगिज्जिय २ जाव विहरइ । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते  
अतो छण्ह भासाण सखित्तिउल्लेखलेसे जाए ॥ (सू० ५४५)

15 १४ तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अन्नया कयाइ इम  
उ दिसाचरा अतिय पाउउभवित्था । त जहा १ साणे त चउ सउ  
जाव अजिणे जिणसइ पगासेमाणे विहरइ । त ना खलु गोयमा,  
गोसाले मखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलारी जाव जिणसइ पगासेमाणे  
विहरइ । गोसाल ण मखलिपुत्ते अजिणे, जिणप्पलारी जाव पगासे-  
20 माणे विहरइ । तए ण सा महइमहालया महच्चपरिसा उहा सिवे  
(भग० ३ ११) जाव पडिगया । तए ण सावत्थीए नयरीए सिंघाडग  
जाव वउज्जणो अन्नमत्तस्स जाव पडुवेइ—‘ज ण देवाणुप्पिया,  
गोसाले मखलिपुत्त जिणे जिणप्पलारी जाव विहरइ तं  
मिउता । समणे भगव महापारे एव आइक्खइ जाव पडुवेइ । एव  
०८ खलु तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स मखली नाम मत्ते पिया हित्था ।

तए ण तस्स मखालस्स, एव तं चव सधं भणिय व जाव अजिणे  
जिणसद्ध पगासेमाणे विहरइ; त मो खलु गोसाले मखलिपुत्ते जिण,  
जिणप्पलावी जाव विहरइ । गोसाले मखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी  
जाव विहरइ । समणं भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव  
जिणसद्ध पगासेमाणे विहरइ । तए ण से गोसाले मखलिपुत्तं 5  
बहुजणस्म अतिय एयमट्ट सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव  
मिसिमिसमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, १ सावर्धिय नयर्णि  
मज्झमज्झेण जेणेत्तं हालाहलाए कुमकारीए कुमकारावणे तणव  
उवागच्छइ २ हालाहलाए कुमकारीए कुमकारावणसि आजीवियसध-  
सपरिवुडे मट्टया अमारिस्स वट्टमाणे एव यावि विहरइ ॥ (सू० ५४२) 10

१५ तेण कालेण तेण समणं समणस्स भगवओ महावीरस्स  
अतेवासी आणदे नामं येरे पगम्भइए जाव विणीए छट्टुछट्टेण  
अणिक्खिरत्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भायेमाणे विहरइ ।  
तए ण से आणदे थेरे छट्टुक्खमणपारणगत्ति पट्टमाए पोरिसीए, एव  
त्था गोवमसामी तहेत्तं आपुच्छइ, तहेव जाव उच्चर्नायमाज्झिम जाव 15  
अट्टमाणे हालाहलाए कुमकारीए कुमकारावणस्स अदूरसामते  
वीश्वयइ । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते आणदं येर हालाहलाए  
कुमकारीए कुमकारावणस्स अदूरसामतेण वीश्वयमाण पासइ, २ ता  
एव वयासी-‘एहि ताव आणदा, इओ एग मह उयमिय निसामेहि’ ।  
तए ण से आणदे थेरे गोसालेण मखलिपुत्तेण एव वुत्ते समाणे जेणत्तं 20  
हालाहलाए कुमकारीए कुमकारावणे, जेणेत्तं गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव  
उवागच्छइ । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते आणदं येर एव वयासी-  
“एत्तं खलु आणदा इओ चिराश्याए अट्टाए केइ उच्चावया वणिया  
अत्थत्थी अत्थग्रेसी अत्थकखिया अत्थपिजासा अत्थग्रेसणयाए  
नाणाविहविउत्पणियमट्टमायाए सगढीसागडेण सुवहुं भत्तपाण 25

- पत्ययण गहाय एग मह अगामिय अणाहिय डिम्भायाय दीहमद्ध  
 अडविं अणुप्पारिट्ठा । तए ण तमिं वणियाण तीसे अगामियाए जाव  
 दीहमद्धाए अडवीए किंचि देस अणुप्पत्ताण समाणाण से पुच्चगहिए  
 उदए अणुपुच्चोण परिभुजेमाणे परिभुजेमाणे गवीणे । तए ण ते वणिया  
 5 खीणोदगा समाणा तण्हाए परिभयमाणे अन्नमन्ने सद्दावति, १ एव  
 वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया, अहं इमींसे अगामियाए जाव अडवीए  
 किंचि देस अणुप्पत्ताण समाणाण से पुच्चगहिए उदए परिभुजेमाणे  
 खीणे, त सेय खलु देवाणुप्पिया, अहं इमींसे अगामियाए जाव  
 अडवीए उदमस्स सच्चओ समता मग्गणावेसण करेत्तए' ति कट्ठु  
 10 अन्नमन्नस्स अतिय एयमट्ठ पडिसुणाति, १ तीसे ण अगामियाए जाव  
 अडवीए उदमस्स सच्चओ समता मग्गणावेसण करति, उदमस्स  
 सच्चओ समता मग्गणावेसण करेमाणे एग मह वणसड आसादति  
 किण्ह किण्होभास जाव निटुरवभय पासादीय जाव पडिच्च ।  
 तस्स ण वणसडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ ण महेग वम्मीय  
 15 आसादति । तस्स ण वम्मीयस्स चत्तारि वप्पुओ अब्भुग्गयाओ  
 अभिनिसडाओ तिरिय सुसपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ,  
 पन्नगद्धमद्राणसडियाओ पामादीयाओ जाव पडिरूयाओ । तए ण  
 ते वणिया हट्ठुट्ठु अन्नमन्न सद्दावति, १ एव वयासी- 'एव खलु  
 देवाणुप्पिया, अहं इमींसे अगामियाए जाव सच्चओ समता मग्गणा-  
 20 वणसण करेमाणेहिं इमे वणसडे आसादिए, किण्हे किण्होभास ।  
 इमस्स ण वणसडस्स बहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए,  
 इमस्स ण वम्मीयस्स चत्तारि वप्पुओ अब्भुग्गयाओ जाव पडि-  
 रूवाओ । त सेय खलु देवाणुप्पिया अहं इमस्स पढम वरिपि  
 भिदित्तए, अवियाइ ओराले उदगरयण अस्सादेस्सामो । तए ण ते  
 । अन्नमन्नस्स अतिय एयमट्ठ पडिसुणाति, १ तस्स वग्गीयस्स

पद्म वप्प भिद्वति । त ण तत्थ अच्छ पत्थ जच्च तणुय फालिय-  
 वण्णाभ ओराल उदगरयण आसादति । तए ण ते वणिया हट्टुत्तु  
 पाणिय पिवाति, २ वाहणाइ पज्जति, ३ भायणाइ भरति, भरेत्ता दोच्च  
 पि अन्नमन्न एव वयासी- एव खलु देवाणुप्पिया, अम्हेहि इमस्स  
 यम्मीयस्स पद्माए वप्पाए भिक्षाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, त  
 सेय खलु देवाणुप्पिया, अम्ह इमस्स यम्मीयस्स दोच्च पि वप्प  
 भिद्वत्तए; अवियाइ एत्थ ओरालं सुवण्णरयण आमादेस्सामो । तए  
 ण ते वणिया अन्नमन्नस्स अतिय एयमट्ट पडिसुणति, २ तस्स  
 यम्मीयस्स दोच्चं पि वप्प भिद्वति । ते ण तत्थ अच्छ उच्च तावणिज्ज  
 महत्थ महग्घ महरिह ओराल सुवण्णरयण अस्सादोत्ति । तए ण ते 10  
 वणिया हट्टुत्तु भायणाइ भरति, पट्टणाइ भरति २ ता तच्च  
 पि अन्नमन्न एव वयासी- 'एव खलु देवाणुप्पिया, अम्हे इमस्स  
 यम्मीयस्स पद्माए वप्पाए भिक्षाए ओराले उदगरयणे आसादिए,  
 दोच्चाए वप्पाए भिक्षाए ओराल सुवण्णरयणे अस्सादिए, त सेय खलु  
 देवाणुप्पिया, अम्ह इमस्स यम्मीयस्स तच्च पि वप्प भिद्वत्तए । अवि 15  
 याइ एत्थ ओराल मणिरयण अस्सादेस्सामो । तए ण ते वणिया  
 अन्नमन्नस्स अतिय एयमट्ट पडिसुणति, २ तस्स यम्मीयस्स तच्च पि  
 वप्प भिद्वति । त ण तत्थ रिमल निम्मल नित्तल निकल महत्थ  
 महग्घ महरिह ओराल मणिरयण अस्सादति । तए ण ते वणिया  
 हट्टुत्तु भायणाइ भरति, २ ता चउत्थ पि अन्नमन्न एव वयासी- 20  
 'एव खलु देवाणुप्पिया, अम्हे इमस्स पद्माए वप्पाए भिक्षाए ओराल  
 उदगरयणे अस्सादिए दोच्चाए वप्पाए भिक्षाए ओराले सुवण्णरयणे  
 अस्सादिए, तच्चाए वप्पाए भिक्षाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए,  
 त सेय खलु देवाणुप्पिया, अम्ह इमस्स यम्मीयस्स चउत्थ पि वप्प  
 भिद्वत्तए, अवियाइ उत्तम महग्घ महरिह ओराल -वणरयण 20

- अस्सादेस्सामो । तए ण तेसिं वणियाण एगे वणिए हियकामए,  
सुहकामए, पत्थकामए, आणुक्कपिए, निस्सेसिए हियसुहनिस्सेस-  
कामए ते वणिए एव वयासी- 'एव एलु देवाणुप्पिया, अहं इमस्स  
वम्मीयस्स पट्टमाए वप्पाए जाव तच्चाए वप्पाए भिसाए ओराले  
5 मणिरयणे अस्सादिए, त ह्योउ अलाहि पज्जत्त, एसा चउत्थी वप्पा  
मा भिज्जउ, चउत्थी ण वप्पा सउयसग्गा यावि होत्था । तए ण ते  
वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स जाव हियसुहनिस्सेस-  
कामगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ट नो सइहाति,  
जाव नो रोएति, एयमट्ट असइहमाणा जाव अरोणमाणा तस्स  
10 वम्मीयस्स चउत्थ वि वप्प भिंदति । ते ण तत्थ उग्गविस जाव  
अणागलियच्चडतिव्वरोस समुहिं तुरिय चवल धमत दिट्ठीविस सप्प  
सघट्टेति । तए ण से दिट्ठीविसे सप्पे तेहिं वणिएहिं सघट्टिए समाणे  
आसुक्कते जाव मिसिमिस्सेमाणे सणिय १ उट्टेइ १ ता सरसरसरस्स  
वम्मीयस्स सिहरतल इरुहेइ, १ आइच्च निज्झाइ, १ ते वणिए  
15 अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समता समभिलोएइ । तए ण ते वणिया  
तेण दिट्ठीविसेण सप्पेण अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समता समभि-  
लोइया समाणा खिप्पामेव सभइमत्तोवगरणमायाए एगाहच्च कूढाहच्च  
भासरासीकया यावि होत्था । तत्थ ण जे से वणिए तेसिं वणियाण  
हियकामए जाव हियसुहनिस्सेसकामए से ण अणुक्कपयाए देवयाए  
20 सभइमत्तोवगरणमायाए नियम नगर साहिए" । एवामेव आणडा, तव  
वि धम्मायरिण्ण धम्मीयएसएण समणेण नायपुत्तेण ओराले परियाए  
आसाइए, ओराला क्खिण्णसइसिलागा, सइयमणुयासुरे लाए  
पुव्वति गुवति धुरति इति खलु 'समगे भगव महावीरे, इति १' ।  
त जइ मे से अज्ज किंचि वि वयइ, तो ण तवेण तेएण एगाहच्च  
भासरासिं करोमि, जहा धा चालेण ते वणिया । तुम च ण

आणदा, सारकणामि संगोवामि, जहा वा से वणिप तेसि वणिप्याण  
हियकामण जाव निस्सेसकामण अणुकपयाण देवयाण समड जाव  
साहिण। त गच्छ ण तुम आणदा, तत्र धम्मायरियस्स धम्मोवपसगस्स  
समणस्स नाथपुत्तम्म एयमट्ठं परिकट्ठेहि १। तए ण से आणदे धेरे  
गोसालेण मंखलिपुत्तेण एव बुत्ते समाणे भीए जाव सजायमए 5  
गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अतियाओ हालाहलाए कुमकारीए  
कुमकारावणाओ पडिनिक्खमड, २ सिग्घं हरिय सारत्थि नयरिं  
मज्झमज्झेण निगच्छइ, २ ता जेणेउ कौट्टण चेइए, जेणेउ समण  
मगउ महावीरे तेणेव उयागच्छइ २ समण मगव महावीर, तिक्खुत्तो  
आयाहिण पयाहिण करेइ २ ता यइइ नमसाइ, २ ता एव वयासी- 10  
‘एव खलु अह भत, छट्ठकरमणपारणगासि तु भट्ठिं अट्ठमणुञ्जाए  
समाणे सावत्थीए नयरिंए उच्चनीय जाव अट्ठमाणे हालाहलाए  
कुमकारीए जाव वीइयामि। तए ण गोसाले मखलिपुत्ते मम  
हालाहलाए जाव पासित्ता एउ वयासी- ‘एहि, ताव आणदा, इओ  
एग मह उरमिय निसामेहि। तए ण अट्ठ गोसालेण मंखलिपुत्तेण 15  
एव बुत्ते समाणे जेणेउ हालाहलाए कुमकारीए कुमकारावणे, जेणेव  
गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उयागच्छामि। तए ण से गोसाले  
मंखलिपुत्ते मम एव वयासी- ‘एव खलु आणदा, इओ चिराईयाए  
अट्ठाए केइ उच्चाया वणिप्या, एव त चव षड निरवससं भाणियूव जाव  
नियगनयर साहिण। तं गच्छ ण तुम आणदा, धम्मायरियस्स 20  
धम्मोवपसगस्स जाव परिकट्ठेहि ॥ (सू० ५३७)

१६ त पमू ण भते, गोसाले मंखलिपुत्ते तवेण तेएण एणाहध  
कूडाहध भासरसिं करेत्तए? तिसए ण भते, गोसालस्स मखलिपुत्तस्स  
जाव करेत्तए? - समत्थे ण भते, गोसाले जाव करेत्तए? पमू ण आणदा  
गोसाले मंखलिपुत्ते तवेण जाव करेत्तए। तिसए ण

- जाव करेत्तए । समत्ये ण आणदा गोसाले जाव करेत्तए, नो चैव ण अरहते भगवते परियावणिय पुण करेज्जा । जावइए ण आणदा, गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवतेए, एत्तो अणतगुणविसिट्ठयराए चैव तवतेए अणगाराण भगवताण, खतिखमा पुण अणगारा भगवतो ।
- 5 जावइए ण आणदा, अणगाराण भगवताण तवतेए, एत्तो अणतगुणविसिट्ठयराए चैव तवतेए थेराण भगवताण, खतिखमा पुण थेरा भगवतो । जावइए ण आणदा, थेराण भगवताण तवतेए एत्तो अणतगुणविसिट्ठयराए चैव तवतेए अरहताण भगवताण, खतिखमा पुण अरहता भगवतो । त पभू ण आणदा
- 10 गोसाले मखलिपुत्ते तवेण तेएण जाव करेत्तए विसए ण आणदा, जाव करेत्तए, समत्ये ण आणदा, जाव करेत्तए नो चैव ण अरहते भगवते, परियावणिय पुण करेज्जा ॥ (सू० ५४८)

- १७ त गच्छ ण तुम आणदा, गोयमारुण समणाण निग्गयाण एयमट्ठे परिकहेहि-<sup>१</sup> मा ण अज्जी, तुब्भ केइ गोसाल मखलिपुत्त
- 15 धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएण पडोयारेण पडोयारेउ, गोसाले ण मखलिपुत्ते समणेहि निग्गयोहि मिच्छ विप्पडिवच्चे । तए ण से आणदे येरे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, १ ता जेणेव गोयमाइसमणा निग्गया तेणेव उवागच्छइ २
- 20 गोयमाइसमणे निग्गये आमतेइ, २ ता एव दयासी-<sup>१</sup> एव खलु अज्जी, छट्ठंवरमणपारणगासि समणेण भगवया महावीरेण अइमणुजाए समाणे सायत्थीए नयरीए उच्चनीय तं चए सव जाव नायपुत्तस्स एयमट्ठे परिकहेहि, त मा अज्जी, तुब्भ केइ गोसाल मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ न व मिच्छ विप्पडिवच्चे ॥ (सू० ५०९)

- 25 १८ जाव च ण आणदे थेरे गोयमारुण समणाण निग्गयाण

एयमद्वं परिकहेइ ताव च ण से गोसाले मंगलिपुत्ते हालाहलाण  
 कुमकारीण कुमकारावणाओ पडिनिक्खमइ १ ता आजीवियसघ-  
 सपरिखुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घ तुरिय ताव सार्वार्थ  
 नयारि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ २ ता जेणेव कोट्टण चेदए जेणेव  
 समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ समणस्स भगवओ 5  
 महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समण भगव महावीर एव ययासी-  
 ' सुट्टु ण आउसो कासवा, मम एव ययासी, साहु ण आउसो कासवा,  
 मम एव ययासी, गोसाले मत्तलिपुत्ते मम धम्मतेवासी २ । जे ण से  
 मत्तलिपुत्ते तव धम्मतेवासी से ण सुक्खे सुक्खाभिजाइए भवित्ता कालमासे  
 काल किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्ते, अट ण उवाइनाम 10  
 कुट्टियायणाए, अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पजहामि  
 २ गोसालस्स मत्तलिपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि, २ इम सत्तम  
 पउट्टपरिहार परिहरामि । जे वि यावि आउसो कासवा, अम्ह  
 समयसि केइ सिज्झति वा सिज्झिस्सति वा सज्ये ते चउरासीइ  
 महाकप्पसयसहस्साइ सत्त दिश्वे, सत्त सान्निग्गमे, सत्त पउट्टपरिहारे, 15  
 पच कम्मणि सयसहस्साइ सट्ठि च सहस्साइ छच्च सए तिन्नि य  
 कम्मसे अणुपुब्बेण खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झति धुज्झति मुच्चति  
 परिनिव्वायति सज्यइक्खाणमत करेसु वा करेति वा करिस्सति वा ।  
 से जहा धा गगा महानदी जओ पवूहा, जहिं वा पज्जुवत्थिया, एस  
 ण अट्टा पचजोयणसयाइ आयामेण, अट्टजोयणं त्रिक्खमेण, पच 20  
 धणुसयाइ उच्चेहेण, एएण गगापमाणेण सत्त गगाओ सा एगा महा  
 गंगा, सत्त महागगाओ सा एगा सादीणर्गगा, सत्त सादीणर्गगाओ सा  
 एगा मच्चुगगा, सत्त मच्चुगगाओ सा एगा लोहियगगा, सत्त लोहिय-  
 गगाओ सा एगा आरतीगगा, सत्त आवतीगगाओ सा एगा परमावती,  
 एवामेव सपुब्बावरेण एग गंगासयसहस्स सत्तर सहस्सा छच्च 25



- गुणपक्ष गगासया भवतीतिमन्त्राया । तासि द्विविधे उद्धारे पणत्ते,  
 त जहा-सुहुमवादिकलेवरे चय, वायरवादिकलेवरे चय । तथ ण  
 जे से सुहुमवादिकलेवरे से ठप्पे । तथ ण ज से वायरवादिकलेवरे  
 तथो ण वाससए २ गए ३ एगमेग गगाद्यालय अवहाय जावदपणे  
 5 कालेण से कोट्टस्तीणे नीरण निह्ववे निट्टिप भवइ से त सरे सरप्पमाण ।  
 एएण सरप्पमाणेण तिलि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाक्कप ।  
 चउरासीइ महाक्कपसयसहस्साइ से एग महामाणसे । अणताओ  
 सजूहाओ जीवे चय चइत्ता उवरिल्ले माणसे सजूह देव उववज्जइ १ ।  
 से ण तथ दिवाइ भांगमोगाइ भुजमाणे विहरइ, २ ता ताओ देव  
 10 लोगाओ आउक्खण ३ अणतर चय चइत्ता पदमे सान्निगभे जीवे  
 पच्चायाइ १ । से ण तओर्हितो अणतर उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे  
 सजूहे देवे उववज्जइ २ । से ण तथ दिव्वाइ भांगमोगाइ जाव विहारित्ता  
 ताओ दवलोगाओ आउक्खण ३ बव चइत्ता, दाच्चे सान्निगभे जीवे  
 पच्चायाइ २ । से ण तओर्हिता अणतर उव्वट्टित्ता हेट्टिल्ले माणसे  
 15 सजूहे देवे उववज्जइ ३ । से ण तथ दिव्वाइ जाव चइत्ता तच्चे  
 सान्निगभे जीवे पच्चायाइ ३ । से ण तओर्हितो जाव उव्वट्टित्ता उवरिल्ले  
 माणसुत्तरे सजूहे देवे उववज्जइ ४ । स ण तथ दिव्वाइ भोग  
 जाव चइत्ता चउत्थे सान्निगभे जीवे पच्चायाइ ४ । से ण तओर्हितो  
 अणतर उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसुत्तरे सजूहे देव उववज्जइ ५ । से ण  
 20 तथ दिव्वाइ भोग जाव चइत्ता पचम सान्निगभे जीवे पच्चायाइ ५ ।  
 स ण तओर्हितो अणतर उव्वट्टित्ता हेट्टिल्ले माणसुत्तरे सजूहे देवे  
 उववज्जइ ६ । से ण तथ दिव्वाइ भोग जाव चइत्ता छट्ठे सान्निगभे  
 जीवे पच्चायाइ ६ । से ण तओर्हितो अणतर उव्वट्टित्ता बमलोमे  
 नाम से कप्पे पणत्ते, पाइणपट्टीणायए उर्दीणदाहिणवित्थिणणे बहा  
 25 अणपदे जाव पच धर्दिसगा पणत्ता । त जहा- १ असोगर्दिसए,

जाव पडिहया । से णं तत्थ देवे उववज्जइ ७ । से ण तत्थ दस  
 सागरोयमाइ दिव्वाइ भोग जाव चइत्ता मत्तमे सन्निगंभे जीवे  
 पच्चायाइ ७ । से ण तत्थ नवण्ह मासाण धहुपडिपुण्णाण अद्धट्टमाण  
 जाव वीइकताण सुकुमालगमदलण मिउडुडलकुचियकेसण मट्टगडतल-  
 कण्णपीटण देवाडुमारमप्यभए दारए पथायइ । से ण अह कासवा । तए 5  
 ण अह आउसो कामया, कोमारियपवज्जाए कोमारएण धमचेरवासेण  
 अविद्धकण्णए चेव सगराण पडिलभामि १ इमे सत्त पउट्टपरिहारे  
 परिहरामि । त जहा- १ एणेज्जस्स, २ महारामस्स, ३ मडियस्स,  
 ४ रोहस्स, ५ भारद्वायस्स, ६ अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स,  
 ७ गोसालरस्स मखलिपुत्तस्स । तत्थ ण जे से पट्टमे पउट्टपरिहारे से ण 10  
 रायगिट्ठस्स नयररस्स बहिया मडिडुर्चिंछासि चेइयसि उदाइस्स  
 कुडियायणरस्स सरीर विप्पजहामि, १ एणेज्जगस्स सरीरग अणुप्प-  
 विसामि, २ वावीस वासाइ पट्टम पउट्टपरिहार परिहरामि । तत्थ ण जे  
 से दोच्चे पउट्टपरिहारे से ण उद्धडपुरस्स नयरस्स बहिया चदोयरणसि  
 चेइयसि एणेज्जगस्स सरीरग विप्पजहामि, १ महारामस्स सरीरग 15  
 अणुप्पविसामि, २ ण्णवीस वासाइ दोच्चं पउट्टपरिहार परिहरामि ।  
 तत्थ ण जे से तच्चे पउट्टपरिहारे से ण च्वाए नयरीए बहिया  
 अगमदिहामि चेइयसि महारामस्स सरीरग विप्पजहामि, १ मडियस्स  
 सरीरग अणुप्पविसामि, २ वीस वासाइ तच्च पउट्टपरिहार परिहरामि ।  
 तत्थ ण जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से णं वाणारसीए नयरीए बहिया 20  
 काममहावणसि चेइयसि मडियस्स सरीरग विप्पजहामि, १ रोहस्स  
 सरीरग अणुप्पविसामि, १ एणुण्णीस वासाइ चउत्थ पउट्टपरिहार  
 परिहरामि । तत्थ ण जे भे पचमे पउट्टपरिहारे से ण आल्भियाए  
 नयरीए बहिया पत्तकालगयसि चेइयसि रोहस्स सरीरग विप्पजहामि,  
 १ भारद्वायस्स सरीरग अणुप्पविसामि, १ अट्टारस्स वासाइ पचम 25

- पठट्टपरिहार परिहरामि । तत्थ ण जे से छट्टे पठट्टपरिहारे से ण  
 वेसालीण नयरीण वहिया काडियायणासे चंदयसि भारद्वायस्स सरीर  
 विप्पजहामि, १ अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि,  
 २ सत्तरस वासाइ छट्ट पठट्टपरिहार परिहरामि । तत्थ ण जे से सत्तमे  
 5 पठट्टपरिहारे से ण इहेय सावथीण नयरीण हालाहलाण कुभकारीण  
 कुभकारावणासि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पजहामि,  
 २ गोसालस्स मरुलिपुत्तस्स सरीरग 'अल थिर धुव धारणिज्ज  
 सीयसह उण्टसह खुरासह त्रिविट्ठसमसगपरोसहोवसगसह थिर-  
 सघयण' ति कट्टु त अणुप्पविसामि, १ सोलस वासाइ इम सत्तमे  
 10 पठट्टपरिहार परिहरामि । एवामेव आउसो कासवा, एगण तेत्तीसेण  
 घामसएण सत्त पठट्टपरिहारा परिहरिया भवतीतिमक्खाया । त सुट्टु  
 ण आउसो कासवा, मम एव वयासी-साहु ण आउसो कासवा, मम एव  
 वयासी- 'गोसाले मरुलिपुत्ते मम धम्मतेवासि' ति १ ॥ (सू० ५५०)
- १९ तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मरुलिपुत्त एव वयासी-  
 15 'गामाला, स जटानामए तणए सिया, गामेह्वर्येहि परभजमाणे १ कत्थ  
 य गहु वा दरि वा दुग्ग वा निच्च वा पण्य वा विसम वा अणस्साएमाणे  
 एगण मए उण्णालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपमएण वा तणसूएण  
 वा अत्ताण आउरेत्ताण चिट्टज्जा, से ण अणाउरिण आउरियामिति अप्पाण  
 मच्चइ, अप्परुउच्च य पच्छुत्तामिति अप्पा ण मच्चइ, अणिलुक्के निलुक्क-  
 20 मिति अप्पाण मच्चइ, अपलाए पलायामिति अप्पाण मच्चइ, एवामेव तुम  
 पि गासाला, अणधे सत अत्तामिति अप्पाण उपलभसि । त मा एउ  
 गासाला नारिहासि गोमाला, सघयते सा छाया नोअया ॥ (सू० ५५१)
- २० तए ण से गासाले मरुलिपुत्त समणेण भगवया महावीरेण  
 एयं धुत्ते ममाणे आसुरुत्त ५ समण भगव महावीर उच्चारयाहि  
 25 आउसणाहि आउसर, १ उच्चारयाहि उच्चसणाहि उच्चसेइ, १ चा

उद्याययाहिं निष्कण्ठ्याहिं निष्कण्ठ्याहिं २ उद्याययाहिं निष्कण्ठ्याहिं  
निष्कण्ठ्याहिं, २ एव ययासी- 'नष्टे सि कयाइ, निष्कण्ठ्याहिं सि कयाइ, मष्टे  
सि कयाइ, मष्टेनिष्कण्ठ्याहिं सि कयाइ, अज्जन न भवति नाहि ते  
भमाहिंते सुहमथि' ॥ (सू० ५५२)

२१ तेण कालेण तेण समणसं समणस्स भगवओ महावीरस्स 5  
अतिशामी पाइणजाणवणं सत्थाणुभूई नाम अणगारे, पगइमइए जाव  
विणीए, धम्मायारियाणुरागेणं एयमट्ट असइएमाणे उट्टाप उट्टेइ, २  
जेणेव गोसाले मगलिपुत्ते तेणेण उद्यायच्छइ, २ गोसाल मखलिपुत्त  
एव ययासी- 'जे वि ताव गोसाला, तहाइएस्स समणस्स वा  
माएणस्स वा अतियं पगमवि आरियं धम्मिथं सुजयणं निमायेइ, से वि 10  
तायं वंदइ नमसइ, जाव वट्ठाणं मगलं दययं चेश्यं पउज्जुयास्सइ,  
जिमिणं पुणं तुमं गोसाला, भगवया चेषं पत्थाविणं, भगवया चेषं  
मुढाविणं, भगवया चेषं सेहाविणं, भगवया चेषं सिक्खाविणं, भगवया  
चेषं वहुस्सइएणं, भगवओ धवमिच्छं त्रिप्पडिविजे । तमाएव गोसाला,  
नारिहंति गोसाला, सच्चेव तं सा छाया नो अन्ना । तएण से गोसाले 15  
मगलिपुत्तं सत्थाणुभूइणामं अणगारेणं एव वुत्ते समाणे आसुरत्ते  
५ सत्थाणुभूई अणगारं तरेणं तेणं एगाहच्चं कृडाहच्चं मामंणंतिं  
करेइ । तएण से गोसाले मखलिपुत्ते सत्थाणुभूइ अणगारं तरेणं तेणं  
एगाहच्चं कृडाहच्चं भासरांतिं करेत्ता वीचं पि समणं भगवं  
महावीरं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ जाव सुहं नथि ॥ 20

२२ तएण कालेण तेण समणसं समणस्स भगवओ महावीरस्स  
अतिशामी कोसलजाणवणं सुनकरत्ते नाम अणगारे पगइमइए जाव  
विणीए धम्मायारियाणुरागेणं जहा सत्थाणुभूई तदेव जाव स च्चेव  
ते सा छाया नो अन्ना । तएण से गोसाले मखलिपुत्ते सुनकरत्तं  
अणगारेणं एव वुत्ते समाणे आसुरत्ते ५ सुनकरत्तं अणगारं 25

तवेण तेएणं परितावेइ । तए ण से भुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं  
 मखलिपुत्तेण तवेण तेएण परिताविए समाणे जेणेव समणे भगवं  
 महावीरे तेणेव उवागच्छइ, १ समण भगव महावीर तिक्रवुत्तो वदइ  
 नमसइ, २ ता सयमेअ एव महव्वयाइ आरुभेइ, २ समणा य समणीओ  
 5 य खामेइ, २ आलोइयपाडिक्कते समाएपत्ते आणुपुब्बीए कालगए ॥

१३ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सुनक्खत्त अणगारं तवेण  
 तेएण परितावेत्ता तच्च पि समण भगव महावीर उच्चावयाहिं  
 आउसणाहिं आउसइ, सवं त चव जाव सुट नत्थि । तए ण समणे  
 भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—‘ जे वि ताव गोसाला,  
 10 तहारुवस्स समणस्स वा माहणस्स वा त चव जाव पज्जुवासइ,  
 किमंग पुण गोसाला तुम मए चेअ पव्वाविए जाअ मए चेव बहुस्सुई-  
 कए, मम चेव मिच्छु विप्पट्टियत्ते ? त मा एव गोसाला, जाव नो  
 अत्ता । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेण भगवया महावीरेण  
 एव बुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ तेयासमुग्घाएण समोहसइ, सत्तट्ट पयाइ  
 15 पच्चोसक्कइ १ ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगसि  
 तेय निसिरइ । से जहानामए वाउक्कालिया इ वा वायमडलिया इ वा  
 सेलासि वा कुट्टुसि वा थभासि वा थूमसि वा आवारेज्जमाणी वा  
 निवारिज्जमाणी वा सा ण तत्थ नो कमइ नो पक्कमइ एवामेव  
 गोसालस्स वि मखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स  
 20 वहाए सरीरगसि निसिट्ठे समाणे से ण तत्थ नो कमइ नो पक्कमइ  
 आन्वियाचिर्यं करेइ, १ ता आयाहिणपयाहिण करेइ, १ उहु वेहास  
 उप्पइए । से ण तओ पडिहए पडिनियत्ते समाणे तमेअ गोसालस्स  
 मखलिपुत्तस्स सरीरग अणुडहमाणे २ अतो अणुप्पचिट्ठे । तए ण से  
 गोसाले मखलिपुत्ते सएण तएण अन्नाइट्ठे समाणे समण भगव महावीर  
 २५ एव वयासी—‘ तुमं ण आउसो कासवा, मम तवेण तेएण अन्नाइट्ठे

समाने अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे द्वाह्वकतीए छउमत्थे चेंव काले करेस्सासि । तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एव दयासी— 'नो खलु अह गोसाला, तव तयेण तेएण अन्नाइट्ठे समाने अतो उण्ह नाव काल करेस्सामि, अह ण अन्नाइ सोलस वासाइ जिणे सुहृत्थी विहरिस्सामि । तुम ण गोसाला, 5 क्षप्पणा चेंव सएण तेएण अन्नाइट्ठे समाने अतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे नाव छउमत्थे चेंव काल करेस्सासि' ॥

२४ तए ण सान्त्थीए नयरीए सिंघाडग नाव पहेसु बहुजणो अन्नमत्तस एवमाइक्कइ, नाव एव पक्खेइ— 'एव खलु देवाणुप्पिया, सान्त्थीए नयरीए वहिया कोट्टए चेइए इवे जिणा सलयेति, एण 10 ययति- तुम पुंरि काल करेस्सासि, एणे वदति- तुम पुंरि काल करेस्सासि । तत्थ ण के पुण सम्मादाई के पुण मिच्छादाई । तत्थ ण जे से अहप्पहाणे जणे से घयइ- समणे भगव महावीरे सम्मादाई, गोसाले मखलिपुत्ते मिच्छादाई । 'अज्जो' इ समणे भगव महावीरे समणे निग्गये आमतेत्ता एव दयासी- अज्जो, से जहानामए तणरासी 15 इ वा कट्टरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी इ वा तुसरासी इ वा थुसरासी इ वा भोमयरासी इ वा अवकरासी इ वा अगणिश्रामिए अगणिश्रुसिए अगणिपरिणामिए हयतेए गयतेए नट्टतेए भट्टतेए लुत्ततेए त्रिणट्टतेए नाव एवामेअ गोसाले मखलिपुत्ते मम यहाए सरीरासि तेय निसिरेत्ता हयतेए गयतेए नाव विणट्टतेए जाए । त 20 छडेण अज्जो, तुदमे गोसाल मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोण्ट, २ धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेट, २ धम्मिएण मडोयारेण पडोयारेह, २ अट्टेहि ष हेउहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्टपसिणयागरण करेह ॥

२५ तए ण ते समणा निग्गया समणेण भगवया महावीरेण एव 25

बुक्ता समाणा समण भगव महावीर वदाति नमसति २ जेणव गोस  
 मखलिपुत्त तेणेव उवागच्छति २ ता गोसाल मखलिपुत्त धम्मिय  
 पडिचोयणाए पडिचोपति, २ धम्मियाए पडिसारणाए पडिसार  
 १ धम्मिएण पडोयारणं पडोयारति, २ अट्टेहि य हेऊहि य कारणाहे  
 5 जाव यागरण करति ॥

२३ तए ण से गोसाल मखलिपुत्त समणेहिं निग्गथेहिं धम्मियाए  
 पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणे जाव निप्पट्टपसिणयागरण करिमाणे  
 आसुरुत्ते जाव मिसिमिसमाण नो संचाण्ड समणाण निग्गथाण  
 सरारगस्स किंचि आवाह वा वावाह वा उप्पापत्तए, छविच्छेइ वा  
 10 करत्तए । तए ण ते आजीविया थए गोसाल मखलिपुत्त समणेहिं  
 निग्गथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोपज्जमाण धम्मियाए  
 पडिसारणाए पडिसारिज्जमाण, धम्मिएण पडोयारण पडोयारज्जमाणं  
 अट्टेहि य हेऊहि य जाव करिमाण आसुरुत्त जाव मिसिमिसमाणं,  
 15 वा अकरमाण पासंति, १ गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अतियाओ  
 आयाए अयकमाति, १ जेणव समणे भगव महावीरे तणव उवागच्छति,  
 २ समणं भगव महावीर तिक्खुत्ता आयादिणं पयादिण करति २ वदाति  
 नमसति, १ समणं भगव महावीर उवसपाज्जित्ताण विहरति । अथेगइया  
 आजीविया थए गोसालं थए मखलिपुत्त उवसपाज्जित्तार्णं विहरति ॥

२७ तए णं म गोसाले मखलिपुत्त जन्मट्टाप हव्यमाण तमट्टं  
 असाहमाण, रुदाई पलाण्माण, वीट्टण्णाई नीमणमाणे वाट्टियाण  
 लामाए लुण्णमाण, अयट्टुं कंठुयमाण, पुयल्लिं पण्णाटमाण हत्ये  
 रिण्णसुण्णमाण, दादि वि पाप्पां भूमिं काट्टमाण, 'हा हा अहा हा अह-  
 त्थि कट्टु ममज्जम भगव ना महावीरस्स अतियाआ काट्टयाआ  
 रयाभां पट्टिनिवत्तमर, १ जणव सावथी मयत्ते, जाव हलाहलाण

कुमकारीए कुमकारावणे तेणेउ उवागच्छइ, १ हालाहलाए कुमकारीए  
कुमकारावणसि अब्रूणगहृत्यगए, मज्जपाणग पियमाणे, अभिक्खण  
गायमाणे, अभिक्खण नच्चमाणे, अभिक्खण हालाहलाए कुमकारीए  
अजलिकम्म करमाणे, सीयलएण मट्टियापाणएण आयचणिउदएण  
गायाइ परिस्सिचमाणे विहरइ ॥ (सू० ५५३) 5

१८ 'अज्जो' ति समणे भगव महार्यारे समण निग्गथे आमतेत्ता  
एव वयासी—' जाउइए ण अज्जो गोसालेण मखलिपुत्तेण मम  
वहाए सर्रीरगसि तए निसट्ट, से ण अलाहि पज्जत्ते सीलसण्ह  
जणवयाण । त जहा—१ अगाण, २ वगाण, ३ मगहाण, ४ मल्याण,  
५ मालवगाण, ६ अच्छाण, ७ वच्छाण, ८ कोच्छाण, ९ पाट्टाण, 10  
१० लाट्टाण, ११ वज्जाण, १२ मोलाण, १३ कासीण, १४ कोसलाण,  
१५ अवाहाण, १६ सभुत्तराण घायाए वहाए उच्छादणयाए भासी-  
करणयाए । ज पि य अज्जा, गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए  
कुमकारीए कुमकारावणसि अब्रूणगहृत्यगए, मज्जपाण पियमाणे,  
अभिक्खण ण अजलिकम्म करमाणे विहरइ, तस्स वि य ण 15  
वज्जस्स पच्छायणट्टयाए इमाइ अट्ट चरिमाइ पन्नवेइ । त जहा-  
१ चरिमे पाणे, २ चरिम गेय, ३ चरिमे नट्टे, ४ चरिमे अजलिकम्मे,  
५ चरिमे पोवखलसवट्टए महामहे, ६ चरिमे सेयणए गघहत्थी, ७ चरिमे  
महासिलाकटण सगामे, ८ अह च ण इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए  
तित्थकरण चरिमे तित्थकरे सिज्झिस्स जाव अत करिस्स ति । ज 20  
पिय अज्जो गोसाले मखलिपुत्ते सीयलएण मट्टियापाणएण आयचाणि  
उदएण गायाइ परिस्सिचमाणे विहरइ, तस्स वि य ण वज्जस्स  
पच्छायणट्टयाए इमाइ चत्तारि पाणगाइ चत्तारि अपाणगाइ पन्नवेइ ॥

२९ से किं त पाणए? पाणए चउविहे पणत्ते । त जहा—  
१ गोपुट्टए, २ हत्थमादियए, ३ आयतत्तए, ४ सिलापट्टमट्टए, से त 25



- पाणय ॥ से किं त अपाणय ? अपाणय चउच्चिहे पण्णत्ते । त जहा—  
 १ थालपाणय २ तथापाणय, ३ सिंवल्लिपाणय, ४ सुद्धपाणय ॥ से  
 किं त थालपाणय ? ज ण दाथालम वा दाधारम वा दाकुमम वा  
 दाकलम वा सीयलम उल्लम हत्थेहिं परामुसत्ति, न य पाणिय पियइ,  
 5 से त थालपाणय ॥ से किं त तथापाणय ? ज ण अब्ब वा अब्बाडम वा  
 ब्बदा पभाणद जाव बोए वा तिंदुक्य वा तरुणम वा आमम वा  
 आसगसि आर्वालेइ वा पवीलेइ वा, न य पाणिय पियइ से त  
 तथापाणय ॥ से किं त सिंवल्लिपाणय ? ज ण कलसगलिय वा मुग्ग-  
 सिंगलिय वा माससगलिय वा सिंवल्लिसगलिय वा तरुणिय आमिय  
 10 आसगसि आर्वालेइ वा पवीलेइ वा, न य पाणिय पियइ, से त  
 सिंवल्लिपाणय ॥ से किं त सुद्धपाणय ? ज ण उम्मासे सुद्धखाइम  
 खाइ, दो मासे पुटविसथारोवणय य, दो मासे कट्टसथारोवणय, दो  
 मासे इम्मसथारोवणय । तस्स ण बहुपाडिपुण्णाण छण्ह मासाण  
 अतिमरारुण इमे दो देवा महद्दिया जाव मह्हेसक्खा अतिय पाउच्चभवति ।  
 15 त जहा—पुण्णमहे य माणिमहे य । तए ण ते देवा सीयल्लण्णि  
 उल्लण्णि हत्थेहिं गायइ परामुसत्ति । जे ण ते देवे साइज्जइ, से ण  
 आसीविसत्ताए कम्म पकरेइ, जे ण ते देवे नो साइज्जइ तस्स ण सासे  
 सरीरगसि अगणिकाण समवइ, से ण सएण तैएण सरीरग इामेइ  
 १ ता तओ पच्छा सिज्जइ जाव अत्त करेइ, से त सुद्धपाणय ॥
- 20 ३० तत्थ ण सावत्थाए नयरीए अयपुल्ले नाम आजीविओवासए  
 परिवसइ, अट्टे जाव अपरिभूए, जहा हालहला जाव आजीवियसमएण  
 अप्पाण भावेमाणे विहरइ । तए ण तस्स अयपुल्लम्म आजीवि-  
 ओवासगस्स अरुया कयाइ पुट्टरत्तापरत्तकालसमयासि खुडुव्रजागरिय  
 जागरमाणस्स अयमेयास्से अज्झात्थिए जाव समुप्यज्जित्था— किंसठिया  
 25 हत्ता पण्णत्ता ? तए ण तस्स अयपुल्लस्स आजीविओवासगस्स दोच्चं

पि अयमेवाह्वे अज्जात्थिए जाव ममुप्याञ्जिया-‘एणं सलु मम  
 धम्मायारिए धम्मोवदेसए गोसाले मखलिपुत्ते उप्पन्नानणइसणधरे जाव  
 सञ्चन्नु सञ्चइरिसी इहेव सावर्थाए नयरीए हालाहलाए कुमकारीए  
 कुंमकाराणसि आजीवियसधसपरिवुढं आजीवियसमणण अप्पाण  
 भाणंमाणे विहरइ । त सय रलु मे कइ जाव जलते गोसाल 5  
 मंखलिपुत्तं वडिंत्ता जाव पञ्जुवासित्ता इम एयाणं घागरण घागरित्तए’  
 ति वट्टु एवं सपइइ २ ता कइ जाव जलत ण्हाए ३ व जाव  
 अप्पमहग्घामरणालक्रियसरिए साओ गिहाओ पाडिनिक्खमइ १ ता  
 पायट्ठिहारधारण सावर्थां नयरीं मज्झमज्झेण जेणव हालाहलाए  
 कुमकारीए कुमकाराणणे तेणं उवागच्छइ, २ ता गोसाल मंखलिपुत्तं 10  
 हालाहलाए कुमकारीए कुमकाराणमि अवट्टणगहत्थगय जाव  
 अजालिक्खम करेमाण सीयलएण मट्ठिया जाव गायइ परिसिंचमाण  
 पासइ, २ ता लज्जिए विलिए विट्टु सणिय १ पघोसइइ । तए ण ते  
 आजीविया थेरा अयपुल आजीविओयासग लज्जिय जाव पघासकमाण  
 पासइ (पासति ?), २ ता एव घयासी-‘एहिं ताव अयपुला, एत्तओ’ । 15  
 तए ण से अयपुले आजीविओयासए आजीवियथेरेहिं एणं वुत्ते  
 समाणे जणेव आजीविया थेरा तेणेव उवागच्छइ, २ आजीविए थेरे  
 वइइ नमंसइ, १ नघासन्न जाव पञ्जुवासइ । ‘अयपुला’ इ  
 आजीविया थेरा अयपुल आजीविओयासग एव घयासी-‘से नूण ते  
 अयपुला, पुञ्जरत्तापरत्तकालसमयसि जाव किंसट्टिया हए पण्णत्ता ?’ 20  
 तए ण तए अयपुला, दोच्च पि ते चव सव माण्डिव जाव सावर्थां  
 नपरिं मज्झमज्झेण जेणव हालाहलाए कुमकारीए कुमकाराणणे,  
 जेणव इह तेणव हव्वमागए । स नूण ते अयपुला अट्टे समट्टु ! इत्ता  
 अत्थि’ । ‘ज पि य अयपुला, ताव धम्मायारिए धम्मोवदेसए गोसाले  
 मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुमकारीए

जाव अजलिं करेमाणे विहरइ, तत्थ वि ण भगवें इमाइ अट्ट चरिमाइ पन्नवेइ, त जहा-चरिमे पाणे जाव अत करेस्सइ । जे वि य अयपुला, तव धम्मायरिण धम्मोवदेसण गोसाले मखलिपुत्ते सीयलण्ण मट्टिया जाव विहरइ, तत्थ वि ण भगव इमाइ चत्तारि पाणगाइ चत्तारि 5 अपाणगाइ पन्नवेइ । से किं त पाणए ? १ जाव तओ पच्छा सिज्झइ जाव अत करेइ । त गच्छ ण तुम अयपुला, एस चेव तव धम्मायरिण धम्मोवदेसण गोम ले मखलिपुत्ते इम एयाकूज वागरण वागारिस्सण ति ।

३१ तए णं से अयपुले आजीविओवासण आजीविण्हिं येरोहिं एव वुत्ते समाणे हट्टतुट्टे उट्टाप उट्टेइ, १ जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते 10 तेणेव पहरित्थ गमणाए । तए ण ते आजीविया थेरा गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अब्बकूणगण्णवाणट्टयाए एगतमंते सगार बुच्चति । तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते आजीवियाण थेराण सगार पडिच्छइ, १ अब्बकूणग एगतमंते पडेइ । तए ण से अयपुले आजीविओवासण जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, १ गोसाल मखलिपुत्त 15 तिवबुत्तो जाव पज्जुवासइ । 'अयंपुला, इ गोसाले मखलिपुत्ते अयपुल आजीविओवासण एव वयासी-' से नूण अयपुला, पुच्चरत्ता-वरत्तकालसमथसि जाव जेणेव मम अतिय तेणेव हव्वमागण । से नूण अयपुला, अट्टे समट्टे ! 'एता अत्थि । त नो रालु एम अब्बकूणए, अब्बचोयए ण एसे ।' 'किंसठिया हत्ता पण्णत्ता ?' वंसीमूलसठिया एत्ता 20 पण्णत्ता । वीण वाण्हि रे वीरगा, वीण धाण्हि । तए ण सं अयपुले आजीविओवासण गोसालेण मखलिपुत्तेण इम एयाकूव वागरण वागरिण समाणे हट्टतुट्टे जाव हियण गोसाल मखलिपुत्त वदइ नमसइ, १ पत्तिणाइ पुच्छइ, १ अट्टाइ परियाइयइ, १ उट्टाप उट्टेइ, १ ता गोसाल मखलिपुत्त वदइ नमसइ, १ ता जाव पडियए ॥

25 ३१ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते अप्पणो भरण आभोणइ, १ त

आजीविष्य धरे सदाविद्, १ एष ययासी- 'तुभ्ये ण देवाणुप्पिया, मर्म  
 कालगय जाणेत्ता सुरभिणा गधोवृषणं ण्ढाणं, १ पण्डलसुधुमालाप  
 गधकासाईप गायाइ ल्हं, १ सरसेण गासीसचदणेणं गायाई  
 अणुलिपट, १ मटरिह ईसलक्खण पढसाढग नियंसेह, १ सय्यालकार-  
 विभूसिय करट, १ पुरिसहस्सवाहीर्णं सीयं इरुद्ध, १ सावत्थीप 5  
 नयरीप मिंघाढग नाव पदेसु महया महया रद्देण उग्घोसेमाणा  
 पयं घदह 'एव खलु देवाणुप्पिया, गोसाले मंग्वालेपुत्ते जिणे जिणप्पलावी  
 नाव जिणसद्द पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसाप्पिणीप चउर्वासाप  
 तित्थयराणं चरिमे तित्थयरेसिद्धे नाव सव्यदुक्खप्पदीण। इद्धिसक्कार-  
 समुद्वपण मम सरीरगस्स नीहरण करह' । तप ण ते आजीविया धेरा 10  
 गोसालस्स मत्तालिपुत्तस्स एयमद्द विणपण पटिसुणेंति ॥ (सू० ५५४)

३३ तप ण तस्म गोसालस्स मत्तालिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणम-  
 माणंसि पटिलद्धसम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिय नाव समुप्पाज्जित्या-  
 'नो खलु अह जिणे जिणप्पलावी नाव जिणसद्द पगासेमाणे विहरिप ।  
 अह ण गोसाले चंप मत्तालिपुत्ते समणघायप समणमारप समणपटिणीप 15  
 आयरियउज्जायाण अयसकारप अयणकारप अकित्तिकारप धट्ठि  
 असत्तभावुद्वभाणणादि मिच्छत्ताभिनिवेसहि य अप्पाणं वा पर वा तद्दुमय  
 वा धुग्गाहेमाणे धुप्पापमाणे विहरित्ता सपण तेपण अन्नाइट्ठे समाणे  
 अतां सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कातीप छउमत्थे चैव  
 काल करेस्स । समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी नाव 20  
 जिणसद्द पगासेमाणे विहरह', - एष मपदेह, १ आजीविष्य धरे  
 सदाविद्, १ उच्चारायसवहसात्रिप करेह १ एषं ययासी- 'नो  
 खलु अह जिणे, जिणप्पलावी पगासेमाणे विहरिप । अह  
 ण गोसाले मत्तालिपुत्ते समणघायप नाव छउमत्थे चैव काल फरिस्सं ।  
 समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी नाव जिणसद्द पगासेमाणे 25

विहरत् । त त्वभे ण देवाणुप्पिया, मम कालगय जाणेत्ता वामे पाप  
 सुवेण वधत्, १ तिकवुत्तो मुहे उठुत्त, २ ता सावर्थाए नयरीए  
 सिंघाडग जाव पहेसु आकट्टिकिट्ठि करेमाणा महया महया सदेणं  
 उग्यासेमाणा २ एव वदत्- 'नो खलु देवाणुप्पिया, गोसाले मग्गलिपुत्ते  
 5 जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए । एस ण गोसाले चैव मग्गलिपुत्ते  
 समणघायए जाव छउमत्थे चैव कालगए । समणे भगव महावीरे जिणे  
 जिणप्पलावी जाव विहरत् । महया अणिट्ठीअसक्कारसमुदणण मम  
 सरीरगस्स नीहरण करेज्जाह । एव घट्ठिता कालगए ॥ (सू० ५१५)

३४ तए ण आजीविया थेरा गोसाल मग्गलिपुत्तं कालगय जाणित्ता  
 10 हालाहलाए कुमकारीए कुमकारावणस्स दुवाराइ पिहति २ ता  
 हालाहलाए कुंभकारीए कुमकारावणस्स बहुमज्जवेसभाए सावर्थि  
 नयरीं आलिहति २ ता गोसालस्स मग्गलिपुत्तम्म सरीरग वामे पादे  
 सुवेण वधति २ ता तिकवुत्ता मुहे उठुमति, २ ता सावर्थाए नगरीए  
 सिंघाडग जाव पहेसु आकट्टिकिट्ठि करेमाणा नीय २ सदेण उग्यास-  
 15 माणा २ एव वयासी- 'नो खलु देवाणुप्पिया, गोसाले मग्गलिपुत्ते  
 जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए । एस ण गोसाले चैव मग्गलिपुत्ते  
 समणघायए जाव छउमत्थे चैव कालगए । समणे भगव महावीरे  
 जिणे, जिणप्पलावी जाव विहरत् । सवहपडिमोक्खणग कराति २  
 दोच्च पि पूयासक्कारथिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मग्गलिपुत्तस्स  
 20 वामाओ पादाओ सुवं मुयति, २ हालाहलाए कुमकारीए कुमकारा-  
 वणस्स दुवारवयणाइ अवगुणति, २ गोसालस्स मग्गलिपुत्तस्स सरीरग  
 सुग्गिणा गंधोदणण ण्हाणति, ते चैव जाव महया इड्डिसक्कारसमुदणण  
 गोसालस्स मग्गलिपुत्तस्स सरीरस्स नीहरण करति ॥ (सू० ५५६)

३५ तए ण समणे भगव महावीरे अन्नया कयाइ सावर्थाओ नयरीओ  
 25 कोट्टयाओ चइयाओ पडिनिक्खमइ, २ वहिया जणउयविहार विहरत् ॥

३२ तेण कालेण तेण समणं मडियगामे नाम नयरे होत्था,  
 चण्णा। तस्स ण मडियगामस्स नयरस्स गहिया उत्तरपुरत्थिमे  
 द्विसीमाण णत्थ ण साण(ल)कोट्टण नाम चेइण होत्था, वण्णो वाव  
 पुट्टगिस्सिलापट्टओ। तस्स ण साण(ल)कोट्टणस्स ण चेइयस्स अदूरस्सामते  
 एत्थ ण महंगे मालुयाकच्छण यात्रि होत्था, किण्हे किण्होभास वाव ७  
 निट्टरवभूए, पत्तिण पुत्तिण फलिण हत्थियगरेरिज्जमाणे सिरीण अईव  
 २ उअमोभमाणे चिट्टइ। तत्थ ण मडियगामे नयरे रेवइ नाम गाहावइणी  
 परिवसइ अट्टा वाव अपरिभूया। तए ण समणे भगव महावीरे  
 अज्जया कयाइ पुत्ताणुत्तिं चरमाणे वाव जणेअ मडियगामे नयरे  
 जेणेव साण(ल)कोट्टण चेइए वाव परिसा पडिगया। तए ण समणस्स 10  
 भगवओ महावीरस्स सरिरगसि विउल रोगायके पाउभूए, उज्जले  
 वाव इरहियास पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कीण यावि जिहरइ,  
 अविद्याइ लोहियअन्धाइ पि पक्खेइ, चाउज्जण धामरेइ—‘एअ खलु  
 समणे भगव मत्तारीरे गोसालस्स मरालिपुत्तस्स तणेण तेण्ण अत्ताट्टे  
 समाणे अतो उण्ट मामाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कीण 1७  
 उउमत्थे चैव काल करिस्सइ’। तेण कालेण तेण समणं समणस्स  
 भगवओ महावीरस्स अनेवासी सीहे नाम अणगारे पगइमइए वाव  
 धिणीए मालुयाकच्छणस्स अदूरस्सामते उट्टउट्टेण अनिक्खित्तेण २  
 तवोकम्मेण उट्टवाहा वाव जिहरइ। तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स  
 ज्ञाणतरियाण वट्टमाणस्स अयमेयाहणे वाव समुप्पज्जित्था— 20  
 ‘एअ खलु मम धम्मपरियस्स धम्मोअइत्तणस्स समणस्स भगवओ  
 महावीरस्स सरिरगसि विउले रोगायके पाउभूए उज्जले वाव  
 उउमत्थे चैव काल करिस्सइ। वदिस्सनि य ण अत्तत्थिया—  
 ‘उउमत्थे चैव कालेण’। इमेण ययाहणेण महया मगोमाणसिण्ण  
 इइत्तेण अभिमूए—समाणे आयाअगभूमीओ प—चोहइ, २ जेणेअ २5

- मालुयाकच्छुए तेणेव उवागच्छइ, २त्ता माडुयाकच्छुग अतो  
 अणुपरिसइ २ भट्या २ सहेण कुहुकुहुस्स परुन्ने। 'अज्जो' ति  
 समणे भगव महावीरे समणे निग्गये आमतेइ, २ एउ वयासी—  
 5 'एव खलु अज्जो मम अतेवासी सीहे नाम अणगारे पगइमइए,  
 त चव सव भाण्णिव्व जाव परुन्ने। त गच्छए ण अज्जो, तुभे सीह  
 अणगार सइह'। तए ण ते समणा निग्गथा समणेण भगवया  
 महावीरेण एउ वुत्ता समाणा समण भगव महावीर वइति नमसति, २  
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ साण'ल'कोट्टयाओ चेइयाओ  
 पडिनिव्वमाति, २ जेणेव मालुयाकच्छुए जेणेव सीहे अणगारे तेणेव  
 10 उवागच्छति २ सीहे अणगार एवे वयासी—'सीहा, धम्मायरिया  
 सइयाति'। तए ण से सीहे अणगारे समणेहिं निग्गयेहिं सइहे  
 मालुयाकच्छुगाओ पडिनिव्वरमइ २ जेणेउ साण(ल)कोट्टए चेइए,  
 जेणेव समणे भगव महावीरे तणेव उवागच्छइ २ समण भगव महावीर  
 तिउवुत्तो आ यहिणपथाहिण जाव पज्जुवासइ। 'सीहा' इ समणे  
 15 भगव महावीरे सीहे अणगार एउ वयासी— से नूण ते सीहा  
 ज्ञाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयाएव जाव परुन्ने। से नूण ते  
 सीहा अट्ट समट्टे?' हता अत्थि'। 'त नो खलु अह सीहा,  
 गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अच्चाट्टे समाण अतो छणह  
 मासाण जाव काल करेस्स; अह ण अन्नाइ सोलस वासाइ जिणे  
 20 सुहत्थी विहरिस्सामि। त गच्छए ण तुम सीहा मच्चियगाम नयर  
 रेवईए गाहाउरणीए गिहे। तत्थ ण रेवईए गाहाउरणीए मम अट्टाए  
 डुवे कयोयसरीरा उवक्खडिया ताहिं नो अट्टो। अत्थि से अस्से  
 पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमसए, तमाहराटि, एएण अट्टा'।  
 तए ण से सीहे अणगारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते  
 25 समाणे इट्टइ जाव हियए समण भगव महावीर वइइ नमसइ

२ सा अतुरियमचवलमसमत मुहपोत्तिय पडिलेहइ, २ जहा गायमगामी  
 वाव जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ० समण  
 भगव महावीर वदइ नमसइ २ सा समणस्स भगवओ महावीरस्स  
 अतियाओ साण(ल)कोट्टयाओ चेइयाओ पाडिनिक्खमइ, ० अतुरिय  
 वाव जेणेव माट्टियगामे नयरं तेणेव उवागच्छइ ० माट्टियगाम नयरं  
 मज्झमज्झेण जेणेव रेवईए गाहावइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ  
 ० रेवइए गाहावइणीए गिह अणुप्पाविट्ठे। तए ण सा रेवई गाहावइणी  
 सीह अणगार एज्जमाण पासइ, ० हट्टुत्तु खिप्पामेव आसणाओ  
 अणुत्तु ० सीह अणगार सत्तु पयाइ अणुगच्छइ, २ तिक्खुत्तो  
 आयाहिणपयाहिण करेइ, ० वदइ नमसइ ० एव वयासी- 'सइसत्तु ण 10  
 देवाणुप्पिया, किमागमणप्पओयण'। तए ण से सीहे अणगारं रइ  
 गाहावइणी एव वयासी- 'एव खलु तुमे देवाणुप्पिए, समणस्स भगवओ  
 महावीरस्स अट्ठाए दुये कयोयसरीरा उरक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो अत्थि  
 त अत्ते पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमसए, एयमाहराहि, तेण  
 अट्ठा'। तए ण सा रेवइ गाहावइणी सीह अणगार एव वयासी- 15  
 कस ण सीहा, से नाणी वा तत्रस्सी वा, जण तव एस अट्ठे मम ताव  
 रहस्सकडे एवमकएए, जए ण तुम जाणासि? एव जहा खए वाव  
 जआ ण अह जाणामि। तए ण सा रेवइ गाहावइणी सीहस्स  
 अणगारस्स अतिथ एयमट्ठ सोचा निसम्म हट्टुत्तु जणव भत्तघरे  
 तेणेव उवागच्छइ २ सा पत्तग भोएइ, ० सा जेणव सीहे अणगार 20  
 तणव उवागच्छइ, ० सा सीहस्स अणगारस्स पाडिगारगसि त स्स  
 सम्म निस्सरइ। तए ण तीण रेवईए गाहावइणीए तेण वत्तुत्तु  
 वाव दाणण सीहे अणगारे पाडिलाभिए समाण देवाउए निरद्धं, जहा  
 विषयस्य वाव जम्मजीविषफल रेवइए गाहावइणीए रेवईगाहा-  
 वइणीए। सीह अणगारं रेवइए गाहावइणीए 23



पडिनिक्खमइ, १त्ता मद्धियगाम नयर मज्झमज्जेण निग्गच्छइ १ ब्हा  
शोयममामी नाव भत्तपाण पडिदसेइ, १ समणस्स भगवओ महावीरस्स  
पाणिंसि त सव्व सम्म निस्सिरइ । तए ण समणे भगव महावीरे  
अमुच्छिउए नाव अणज्झोपवत्ते त्रिलमिअ पक्षगभूएण अप्पाणेण

5 तमाहार सर्रीरकोट्टुगसि पक्खिवइ । तए ण समणस्स भगवओ  
महावीरस्स तमाहार आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायके  
खिप्पामेव उअसम पत्ते हट्ठे जाए, आरोगे, वलियसर्रीरे तुट्ठा समणा,  
तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा साअया तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा  
तुट्ठाओ देवीओ सद्देवमणुयासुरे लोए तुट्ठे, 'हट्ठे जाए समणे भगव  
1। महावीरे, हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे ।' ॥ (सू० ५५७)

३७ 'भते' ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वइइ नमसइ,  
१ एव वयासी- एअ खलु देवाणुप्पियाण अतेयासी पाइणजाणवए  
सअणुभूइनाम अणगारे पगइभइए नाव विणीए । से ण भते तदा  
गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएण भासरासीकए समाणे कहिं गए,

10 कहिं उववत्ते ?' 'एव खलु गोयमा, मम अतेयासी पाइणजाणवए  
सअणुभूइनाम अणगारे पगइभइए नाव विणीए । से ण तदा  
गोसालेण मखलिपुत्तेण भासरासीकए समाणे उहु चद्धिमसूरिय नाव  
अमलतक्कमहासुक्के कप्पे वीइवदत्ता सहस्सारे कप्पे देअत्ताए उववत्ते ।  
तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण अट्टारस सागरोवमाइ डिई पणत्ता । तत्थ  
20 ण सअणुभूइस्स वि देवस्स अट्टारस सागरोवमाइ डिई पणत्ता । से ण  
सअणुभूइ देवे ताओ देवलोगाआ आउक्कएण भअक्कएण  
टिइक्खएण नाव महाविदेहे वामे सिज्झिहिइ नाव जत करेहिइ ॥

३८ एअ खलु देवाणुप्पियाण अतेयामी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते  
नाम अणगारे पगइभइए नाव विणीए । से ण भते, तदा ण गोसालेण  
25 मखलिपुत्तेण तवेण तेएण परिताविए ममाणे कालमासे काल किच्चा

कहिं गण, कहिं उवउन्ने ! एउ खलु गोयमा, मम अतेवासी सुनकरत्ते नाम अणगारे पगइमइए ताव विणीए । से ण तदा गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेषण परिताविण समाने जेणेव मम अतिए तेणेउ उवागच्छइ, ० घदइ नमसइ, २ सयमेउ पच महव्वयाइ आरुभेइ २ समणा य समणीओ य रामेइ, २ आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे ० काल किच्चा उट्ट चंदिमसूरिय ताव आणयपाणधारणकप्पे वीईवइत्ता अच्युण कप्पे देवत्ताए उउन्ने । तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण वागीस सागरोवमाइ डिई पण्णत्ता । तत्थ ण सुनक्खत्तस्स वि देवस्स वागीस सागरोवमाइ सेव तदा सव्वाणुभूत्स जाव अत काहिइ ॥ (सू० ५५८)

३९ एव खलु देवाणुपियाण अतेवासी कुसिस्से गोसाले नाम 10 मखलिपुत्ते । से ण भत्ते, गोसाले मखलिपुत्ते कालमासे काल किच्चा कहिं गण कहिं उउन्ने ! एउ खलु गोयमा, मम अतेवासी कुसिस्से गोसाले नाम मखलिपुत्त समणथायए जाव छउमत्थे चेव कालमाने काल किच्चा उट्ट चंदिमसूरिय ताव अच्युण कप्पे देवत्ताए उउन्ने । तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण वागीस सागरोवमाइ डिई पण्णत्ता । तत्थ 15 ण गोसालेस्स वि देवस्स वागीस सागरावमाइ डिई पण्णत्ता ॥

४० से ण भत्ते गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्कएण ३ जाव कहिं उवउन्निहिइ ! गोयमा, इहेव जजुइीवे दीवे भारटे वासे विंझगिरिपायमूले पुढेसु जणउएसु सयइउारे नयरे समुइस्स रत्ता मइए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिइ । से ण तत्थ नयण्ट 20 मासाणं वणुपडिपुण्णाण ताव वीइक्कताण जाव सुख्खे दारए पयाहिइ ॥

४१ ज रयणि च ण से दारए जाइहिइ, त रयणि च ण सयइवार नयरं सन्मितरवाटिरिण भारग्गसो य कुमग्गसी य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिइ । तए ण तस्स दारगस्स अग्गापियरो एकारसमे दिउसे वीइक्कते ताव सपत्ते वारसाहद्विस अयमेयाइय 25

गोष्ण शुणनिष्फन्न नामधेज्ज कार्हेति- 'जम्हा ण अम्ह इमसि  
 दारगसि जायसि समाणसि सयदुवारे नयरे सर्म्मनरजाहिरिण जाव  
 रयणगसे बुद्धे, त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज महापउमे  
 महापउमे' । तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्ज करेहेति  
 5 महापउमे' ति । तए ण त महापउम दारग अम्मापियरो साइरेगइ-  
 वासजायम जाणित्ता सोभणसि तिहिकरणादिवसनक्खत्तमुहुत्तसि  
 महया ९ रायाभिसेणेण अभिसिंचेहेति । से ण तत्थ राया भविस्सइ,  
 महयाहिमयत जाव विहरिस्सइ । तए ण तस्स महापउमस्स रत्तो अन्नया  
 कयाइ दो देवा महद्विया ताव भहेसकरा सेणाक्म्म कार्हेति । त जहा  
 10 पुण्णमइ य माणिमइ य । तए ण मयदुवारे नयरे वहवे राईसरतलवर  
 जाव सथगहप्पभिइओ अन्नमन्न सदावेहेति, २त्ता एव वप्पहेति-  
 जम्हा ण देवाणुप्पिया, अम्ह महापउमस्म रत्तो दो देवा महद्विया  
 ताव सेणाक्म्म करति, त जहा-पुण्णमइ य माणिमइ य, त होउ  
 ण देवाणुप्पिया, अम्ह महापउमस्म रत्तो दोच्चे पि नामधेजे 'देवसेणे  
 15 देवसेणे' । तए ण तस्स महापउमस्स रत्तो दोच्चे वि नामधेजे  
 भविस्सइ 'देवसेणे' ति ॥

४२ तए ण तस्स देवसेणस्स रत्तो अन्नया कयाइ सेए सखतल-  
 धिमलसनिगासे चउइते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ । तए ण से  
 देवसेणे राया त सेय सगगतलसिमलसनिगास चउइते हत्थिरयण दुरुद्धे  
 20 समाणे सयदुवार नयर भज्जमज्जेण अभिकरण २ अभिजाहिइ  
 निज्जाहिइ य । तए ण सयदुवारे नयरे वहवे राईसर जाव पमिइओ  
 अन्नमन्न सदानेहेति, १ वप्पहेति- 'जम्हा ण देवाणुप्पिया अम्ह  
 देवसेणस्स रत्तो सेए सगगतलसनिगासे चउइते हत्थिरयणे समुप्पन्ने,  
 त होउ ण देवाणुप्पिया, अम्ह देवसेणस्स रत्तो तच्चे वि नामधेज्जे

‘विमलवाहणे विमलवाहणे’ ति । तए ण तस्स देवसेणस्स रत्तो  
तच्च वि नाम्भेज्जे ‘विमलवाहणे’ ति ॥

धरे तए ण से विमलवाहणे राया अन्नया कयाइ समणेहिं  
निग्गयोहिं मिच्छ विप्पडिवज्जिहहिइ, अप्पेगइए आउसेहिइ, अप्पेगइए  
अग्रहसिहिं अप्पेगइए निच्छेडोडोहिइ, अप्पेगइए निभत्थे(च्छे)हिइ, 5  
अप्पेगइए वधेहिइ, अप्पेगइए निरुभेहिइ अप्पेगइयाग छाविच्छेइ  
करेहिइ अप्पेगइए पमारहिइ, अप्पेगइयाण उद्वेहिइ, अप्पेगइयाग  
वत्थ पडिग्गह कवल पायपुउण आउडिहिइ विच्छिउडिहिइ भिदिहिइ  
अग्रहरेहिइ, अप्पेगइयाण भत्तपाण योउडिहिइ अप्पेगइए निन्नगरे  
करेहिइ, अप्पेगइए निविस्सए करेहिइ । तए ण सयइवारे नगरे बहवे 10  
राईस्सए जाव वडिहिइ - एव खलु देवाणुप्पिया, विमलवाहणे राया  
समणेहिं निग्गयोहिं मिच्छ विप्पडिवन्ने अप्पेगइए आउस्सइ जाव  
निविस्सए करेइ । त नो खलु देवाणुप्पिया, एव अहं सेय नो खलु  
एव विमलवाहणस्स रत्ता सेय, नो खलु एव रज्जस्स वा रट्टस्स वा  
वलम्भस्स वा वाहणम्भस्स वा पुरस्स वा अतेउरस्स वा जणयस्स वा सेय, 15  
ज ण विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गयोहिं मिच्छ विप्पडिवन्ने, त  
सेय खलु देवाणुप्पिया, अहं विमलवाहण राय एयमट्ट विक्खचित्तए ।  
त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अनिय एयमट्ट पडिस्सुणति, २ जेणेव विमल-  
वाहणे राया तेणेउ उपागच्छउनि, २ करयल्पदिग्गहिय विमलवाहण  
राय जण्ण विजएण वड्ढावति, २ एव वडिहिइ-‘एव खलु देवाणु- 20  
प्पिया समणेहिं निग्गयोहिं मिच्छ विप्पडिवन्ना, अप्पेगइए आउ-  
स्सति जाव अप्पेगइए निविस्सए करंति । त नो खलु एव देवाणु-  
प्पियाण सेय नो खलु एव अहं सेय नो खलु एव रज्जस्स वा जाव  
जणयस्स वा सेय ज ण देवाणुप्पिया, समणेहिं निग्गयोहिं मिच्छ  
विप्पडिवन्ना । त विरमत्तुण देवाणुप्पिया एयस्स अट्टस्स अकरगणोए ॥ 25

४८ तए ण से विमलवाहणे राया तर्हि बहूहि राईसर ण  
 सत्यगहण्यभिर्दृष्टि एयमद्द पिबन्ते समाणे 'नो धर्म्मो', 'त्ति' नो  
 तवा 'त्ति' मिच्छाविणयण एयमद्द पडिस्सुणादि । तस्स ण स-  
 दुवारस्स नगरस्स वदिया उत्तरपुरात्थिमे दिसीभाए एत्थ ण सुभूमि-  
 5 भागे नाम उज्जाणे भविस्सइ सन्धीय\* वण्णो । तेण कालेण तण  
 समएण विमलरस्स अरहन्थो पउप्पए सुमगल नाम अणगारे जाइ-  
 सपन्न वद्दा धम्मयोगस्स वण्णो णव सारिप्ताविउल्लतेयलेरसे तिजाणे-  
 चगए, सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठउट्ठेण  
 अणिकिप्पत्तेण णव आयावेमाणे विहरिस्सइ ॥

- 10 ४९ तए णं मे विमलवाहणे राया अन्त्या कयाइ रत्थरिय वउ  
 निज्जाहिइ । एए ण से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स  
 अदूरसामंते रत्थरिय करेमाण सुमगल अणगार छट्ठउट्ठेण णव  
 आयावेमाण पासिदि १ आसुद्धत्ते णव मिस्सिमिहेमाणे सुमगलं  
 अणगार रत्थिरेण नोहावहिइ । तए ण से सुमगले अणगारे विमल-  
 15 वाहणेण रत्था रहसिरेण नोहाविए समाणे सणिय २ उट्ठेहिइ, २ सा  
 दोच्च पि उट्ठ बाहाओ पमिज्जिय २ णव आयावेमाणे विहरिस्सइ ।  
 तए ण से विमलवाहणे राया सुमगल अणगार दोच्च पि रहसिरेण  
 नोहावेहिइ । तए ण सं सुमगले अणगारे विमलवाहणेण रत्था दोच्च  
 पि रहसिरेण नोहाविए समाणे सणिय २ उट्ठेहिइ २ ओहिं पउज-  
 20 हिइ १ विमलवाहणस्स रण्णे तीयद्ध ओहिणा आमोणहिइ \*  
 विमलवाहण राय एव वइहिइ- 'नो खलु तुम विमलवाहणे राया नो  
 खलु तुम देवत्तेणे राया नो खलु तुम महापउमे राया । तुम ण इओ तन्चे  
 भवग्गहणे गोसाले नाम मंगलियुत्ते होत्था स्सणघायए णव छउमत्थे  
 चेंव कोलगए । त जइ ते तदा सवाणुभूइणा अणगारेण पभुणा वि  
 25 होऊण सम्म सहिय समिय तिइकिरय आहियासिय जइ ते तदा

सुनक्वत्तेण अणगारेण जाव अहियासिय, जइ ते तदा समणेण मगय्या महारारेण पभुणा त्रि जाव अहियासिय, त नो खलु ते अहं तहा सम्म सहिस्स जाव अहियासिस्स। अह ते नगर सहय सरह ससारहिय तणेण तेएण एगाहच्च कृडाहच्च भासरारसि करेज्जामि ॥

४६ तए ण से त्रिमलवाहणे राया सुमगलेण अणगारेण एए वुत्ते 5 समाण आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे सुमगल अणगार तच्च पि रहसिरण नोटावेहिइ। तए ण से सुमगले अणगारे विमलवाहणेण रण्णा तच्च पि रहसिरण नोटाविए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, ७ तेयासमुग्घाएण समोहन्निहिइ, ९ सत्तट्ट पयाइ पच्चोसक्किहिइ, ९ त्रिमलवाहण राय 10 सहय सरह ससारहिय तणेण जाव भासरारसि करेहिइ ॥

४७ सुमगले ण भते, अणगारे विमलवाहण राय सहय जाव भासरारसि करेत्ता कहिं गच्छिइहिइ कहिं उपवज्जिहिइ? गोयमा सुमगल अणगारे ण त्रिमलवाहण राय सहय जाव भासरारसि करेत्ता वट्ठिं छट्ठमदसमदुवालस जाव विचित्तेहिं तवोइम्मोहिं अप्पाण 15 भावमाण वट्ठइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणिहिइ, २ मासियाए सलेहणाए सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए जाव छपत्ता आलोइयपट्टिकते समाहिपत्ते उट्टु च्चदिम जाच गेचिज्जविमाणावाससय चीईइत्ता सत्तट्टिसिद्धे मदाग्गिमाणे देवत्ताए उपवज्जिहिइ । तत्थ ण देवाण अजहत्तमणुक्कासण तेत्तीस सागयेवमाइ तिई पण्णत्ता । तत्थ ण 20 सुमगलरम वि देवरस अजहत्तमणुक्कासण तेत्तीस सागयेवमाइ तिई पण्णत्ता । से ण भते, सुमगले देवे ताओ देवलोगाओ जाव मदाग्गिदेहे यास निज्जिहिइ जाव अत काहिइ ॥ (सू० ५१९)

४८. विमलवाहणे ण भंते, राया सुमगलेण अणगारेण सहय जाव भासरारसिक्कए समाण कहिं गच्छिइहिइ, कहिं उपवज्जिहिइ? गोयमा. १.

- द्विमलवाटणे ण राया सुमगलेण अणगारेण सहए णव भासरिसाकए  
समाणे अहेसत्तमाए पुटवीण उक्कोसकालट्टियसि नरगसि नेरइयत्ताए  
उपवज्जिहिइ । से ण तओ अणतर उ चट्टिता मच्छेसु उपवज्जिहिइ ।  
से ण तत्थ सत्थवज्जे दाटयक्कतीए कालमासे काल किच्चा दोच्च  
० पि अहेसत्तमाए पुटवीए उक्कोसकालट्टियसि नरगसि नेरइयत्ताए  
उपवज्जिहिइ । से ण तओ अणतर उ चट्टिता दोच्च पि मच्छेसु  
उपवज्जिहिइ । तत्थ वि ण सत्थवज्जे णव किच्चा छट्टीए तमाए  
पुटवीए उक्कोसकालट्टियसि नरगसि नेरइयत्ताए उपवज्जिहिइ ।  
से ण तओरितो णव उ चट्टिता इत्थियासु उपवज्जिहिइ ।  
10 तत्थ वि ण सत्थवज्जे दाट णव दोच्च पि छट्टीए तमाए पुटवीए  
उक्कोसकाल णव उ चट्टिता दोच्च पि इत्थियासु उपवज्जिहिइ ।  
तत्थ वि ण सत्थवज्जे णव किच्चा पचमाए धूमप्पभाए पुटवीए  
उक्कोसकाल णव उ चट्टिता उरएसु उपवज्जिहिइ । तत्थ वि ण  
सत्थवज्जे णव किच्चा दोच्च पि पचमाए णव उ चट्टिता दोच्च  
15 पि उरएसु उपवज्जिहिइ णव किच्चा चउत्थीए पक्कप्पमाए पुटवीए  
उक्कोसकालट्टियसि णव उ चट्टिता सीहेसु उपवज्जिहिइ । तत्थ वि  
ण सत्थवज्जे तहे णव किच्चा दोच्च पि चउत्थीए पक्क णव  
उ चट्टिता दोच्च पि सीहेसु उपवज्जिहिइ णव किच्चा तच्चाए  
वालुयप्पमाए पुटवीए उक्कोसकाल णव उ चट्टिता पक्कीसु उप-  
20 वज्जिहिइ । तत्थ वि ण सत्थवज्जे णव किच्चा दोच्च पि तच्चाए  
वालुय णव उ चट्टिता दोच्च पि पक्कीसु उपवज्जिहिइ णव किच्चा  
दोच्चाए सक्करप्पमाए णव उ चट्टिता सिरीसवेसु उपवज्जिहिइ ।  
तत्थ वि ण सत्थ णव किच्चा दोच्च पि दोच्चाए सक्करप्पमाए णव  
उ चट्टिता दोच्च पि सिरीसवेसु उपवज्जिहिइ णव किच्चा इमीसे  
रयणप्पमाए पुटवीए उक्कोसकालट्टियसि नरगसि नेरइयत्ताए उप-

यज्जिह्विह्वा वा उग्रद्विन्ता मर्त्रीसु उवयज्जिह्विह्वा । तत्थ वि ण सत्थयज्जे  
 वाव किच्चा असर्त्रीसु उग्रद्विन्ता । तत्थ वि ण सत्थयज्जे वाव  
 किच्चा दोच्च पि इमीसे रयणप्यमाण पुट्ठीण पलिओवमस्स  
 असखेज्जइभागद्विइयमि नरगसि नेरइयत्ताण उग्रद्विन्ता । से ण  
 तओ वाव उग्रद्विन्ता जाइ इमाइ रय्यरविहाणाइ भवति, त जहा 5  
 चम्मपक्खीण, लोमपक्खीण, समुग्गपक्खीण, विययपक्खीण, तेसु  
 अणेगसयसहस्सकुत्तो उद्दाइत्ता २ तत्थेय २ भुज्जो २ पच्चायाहिइ ।  
 नत्थ वि ण सत्थयज्जे दाहयक्खीण कालमासे काल किच्चा जाइ  
 इमाइ भुयपरिसप्पविहाणाइ भवति, त जहा- गोहाण, नउलाण, जहा  
 पन्नवगाए वाव जाह्मण चउप्पाइयाण, तेसु अणेगसयसहस्सकुत्तो 10  
 सय जहा सत्थराण वाव किच्चा जाइ इमाइ उरपरिमप्पविहाणाइ  
 भवति त जहा- अहीण, अयगराण, आसालियाण, महोरगाण, तेसु  
 अणेगसयसहस्स वाव किच्चा जाइ इमाइ चउप्पद्विहाणाइ भवति  
 त जहा- ण्णारुराण, दुरुराण, गडीपद्दाण, सणट्पद्दाण, तेसु अणेगसय-  
 सहस्स वाव किच्चा जाइ इमाइ जलयरविहाणाइ भवति, त जहा- 15  
 मच्छाण, फच्छमाण वाव सुसुमारण, तेसु अणेगसयसहस्स वाव  
 किच्चा जाइ इमाइ चउरिंदियविहाणाइ भवति, त जहा- अधियाण,  
 पोत्तियाण, जहा पन्नवगाए वाव गोमयकीडाण तेसु अणेगसय  
 वाव किच्चा जाइ इमाइ तेइदियविहाणाइ भवति, त जहा- उवचियाण  
 वाव हत्थिसाडाण तेसु अणेग वाव किच्चा जाइ इमाइ वइदिय- 20  
 विहाणाइ भवति त जहा- पुलकिमियाण वाव समुद्धलिकराण तेसु  
 अणेगसय वाव किच्चा जाइ इमाइ उणस्सद्विहाणाइ भवति, त जहा-  
 रुक्खाण गुच्छाण वाव कुहणाण, तेसु अणेगसय वाव पच्चायाइस्सइ ।  
 उस्सन्न च ण कदुयदक्खेसु कदुयदक्खेसु सत्थय वि ण सत्थयज्जे  
 वाव किच्चा जाइ इमाइ चाउक्काइयविहाणाइ भवति त जहा- पार्श्व- 25



चायाण जाव सुद्धवायाण, तेसु अणेगसयसहस्स जाव किच्चा जाइ  
 इमाइ तेउक्काइयविहाणाइ भरति, त जहा- इगालाण जाव सूरकतमणि-  
 निस्सियाण तेसु अणेगसयसहस्स जाव किच्चा जाइ इमाइ आउक्काइय-  
 विहाणाइ भरति, त जहा- उस्साण जाव खातोइगाण तेसु अणेगसय जाव  
 5 पच्चायाइस्सइ । उस्सन्न च ण खारोइएसु रातोइएसु, सत्थय त्रि ण  
 सत्थयज्जे जाव किच्चा जाइ इमाइ पुट्टिक्काइयविहाणाइ भरति, त  
 जहा- पुट्टवीण सक्कराण जाव सूरकताण, तेसु अणेगसय जाव पच्चाया-  
 हिइ । उस्सन्न च ण खरवायरपुट्टिक्काइएसु, सत्थय त्रि ण सत्थयज्जे  
 जाव किच्चा रायगिहे नयरे वाहिं खरियत्ताए उववज्जिहिइ । तत्थ  
 10 त्रि ण सत्थयज्जे जाव किच्चा दोच्च पि रायगिहं नयरे अतो खरियत्ताए  
 उववज्जिहिइ । तत्थ त्रि ण सत्थयज्जे जाव किच्चा इहेव जवुद्धीवे  
 दीवे भारहे वासे त्रिजगिरिपायमूले वेभेले मनिरेसे माएणकुलासि  
 वारियत्ताए पच्चायाहिइ । तए ण त दारिय अम्मापियरो उम्मुक्कवाल-  
 भाय जेडणगमणुप्पत्त, पडिरूपएण सुक्केण, पडिरूपएण विणएण,  
 15 पडिरूपयस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलइस्सति । सा ण तस्स भारिया  
 भविस्सइ इट्टा कता जाव अणुमया, भडकरडगसमाणा तेहकेला  
 इव सुत्तगोविया, खेलपेडा इव सुत्तपरिग्गाहिया, रयणकरडओ विव  
 सुत्तारविइया, सुत्तगोविया, मा ण सयि, मा ण उण्ह जाव  
 परिस्सहोवसग्गा फुत्तनु । तए ण सा दारिया अन्नया कयाइ गुत्तिणी  
 20 समुरकुलाओ कुलघर निज्जमाणी अतरा इवग्गिजालाभिइया  
 कालमासे काल किच्चा दाहिणिहेसु जग्गिडुमारहेसु देवेसु देवत्ताए  
 उववज्जिहिइ ॥

४९ से ण तओहिंतो अणतर उव्वट्ठित्ता माणुस्स विग्गह  
 लामिहिइ, २ केवल बोहिं बुज्जिहिइ, १ मुडे भवित्ता अगाराओ  
 २५ अणगारिय पयइहिइ । तत्थ वि च ण त्रिराहियसामण्णे कालमासे

काल क्रिच्चा दाहिणिलेसु असुरकुमारेसु देवेसु देवताए उग्रवज्जि-  
हिद । से ण तओर्हितो णव उव्वट्ठित्ता माणुस विग्गह त चेउ णव  
तत्थ पि ण विराहियन्नामण्ण कालमासे णव क्रिच्चा दाहिणिलेसु  
नागकुमारेसु देवेसु देवताए उग्रवज्जिहिद । से ण तओर्हितो अणतर,  
एउ एण्ण अभिलारेण दाहिणिलेसु सुवण्णकुमारेसु, एउ विज्जु- 5  
कुमारेसु, एउ अग्गिउमारवज्ज णव दाहिणिलेसु यणियकुमारेसु ।  
से ण तओ णव उग्रवट्ठित्ता माणुस्स विग्गह लभिट्ठि णव विराहिय-  
सामण्ण जोइसिएसु देवेसु उव्वट्ठित्ठि । से ण तओ अणतर  
चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिट्ठि णव अविराहियसामण्णे  
कालमासे काल क्रिच्चा सोहम्मे कप्पे देवताए उग्रवज्जिहिद । स ण 10  
तओर्हितो अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिट्ठि, करल  
वाहिं बुज्जिहिद, तत्थ पि ण अविराहियसामण्णे कालमासे काल  
क्रिच्चा इत्ताणे कप्पे देवताए उग्रवज्जिहिद । से ण तओ चइत्ता  
माणुस्स विग्गह लभिट्ठि । तत्थ पि ण अविराहियसामण्णे काल  
मासे काल क्रिच्चा मणकुमारे कप्पे देवताए उग्रवज्जिहिद । से ण 15  
तओर्हितो एव णव मणकुमारे तहा उगल्लेण, महासुक्के, आणण  
आरणे । से ण तओ णव अविराहियन्नामण्ण कालमास काल क्रिच्चा  
मवट्ठिसिद्धे महाप्रिमाणे देवताए उग्रवज्जिहिद । से ण तओर्हितो  
अणतर चय चइत्ता महाप्रिदहे वासे जाइ इमाइ कुलाइ मण्णि-  
अट्ठाइ णव अपरिभूयाइ तट्ठप्पगारेसु कुलेसु पुत्तताए परच्चायाहिद । 20  
एवं ज्ञा उव्वगण दत्तपद्मन्तव्या ग चउ वत्तव्या निरदग्गा भाणिववा  
णव केवलवरनाणइमणे समुप्पज्जिहिद ॥

५० तए ण से दट्ठप्पइत्ते केवली अप्पणो तीअट्ठ आभाणहिद,  
२ समणे निग्गथे सदावेहिद, ० एउ चइहिद-एव एलु अह  
अज्जो, इओ चिवा गोसाल नामं मण्णलिपुत्ते होत्था, ५५

समणधायणं तत्र ह्युत्तमं चैव कालगणम् । तन्मूलगं च ण अह  
 अज्जा, अणाइय अणवदग्ग दीइमद्ध चाउरतससारकतारं  
 अणुपरियट्टिणम् । त मा ण अज्जा तु म केइ भणउ आयरियपडिणीयणं,  
 उअज्जायपडिणीयणं आयरियउअज्जायाणं अयमकारणं अरण्णकारणं  
 5 अकित्तिकारणम् । मा ण स रि ष्य चैय अणाइय अणवदग्ग ण  
 ससारकतारं अणुपरियट्टिणं जहा ण अह । तए ण ते समणा निग्गधा  
 वट्ठप्परसस्स केवलस्स अतिय एयमट्ठं सोघा निसम्म भीया तत्था  
 तसिया ससारमउअग्गिणा वट्ठप्परस केवलं घट्टिणं नमसिदिंति, ९  
 तस्स ठाणस्स आलाइएदिंति निदिंति णाय पडिवाज्जिदिंति । तए ण  
 10 से वट्ठप्परस केवली घट्टि वासाइ फवलपरियाणं पाउणिहिइ, १०  
 अप्पणी आउसेस जाणत्ता भत्तं पच्चक्खसाहिइ, एवं अदा उअरए  
 धानं सण्णकत्ताणमतं काहिइ ॥ (सू० ५६०)

संभते! संभते! त्ति जाव जिहरइ ॥

तेयनिसग्गां समत्ता ।

समत्तं च पत्तरसमं सयं पक्खसरयं ॥

# श्रीमद्भगवतीसूत्रम् ।

( व्याख्यानप्रज्ञप्ति )

अथ पञ्चदश गीशालकार्य शतकम् ।

श्रीमच्चन्द्रकुलाम्बरनभोमणिश्रीमदभयदेवमूरिप्रणीता वृत्तिः ॥

१५ गाशालकशते षड्विंशतिचरसमागम-सूत्र ५३९

‘चार्यान् चतुर्दशशतम्, अथ पञ्चदशमारम्यते । तस्य चाय पूरणं तद्वदभिसम्बन्ध — अनन्तरशतं कंचली रत्नप्रभादिकं वस्तु जानाति इत्युक्तं, तत्परिज्ञानं च आत्मसम्बन्धं यथा भगवता श्रीममहार्चारेण गीतमायं जाविभावितं गाशालकस्य स्वशिष्याभामस्य नरकादिगतिं अधिष्ठत्य तथा अनन उच्यते इति एवसम्बन्धस्य अस्य इदं आदिमूनम् —

‘तेण’ मित्यादि, ‘भरालिपुत्ते’ति मङ्गलत्रयभिधानमङ्गलस्य पुनः ‘चउवीसत्रासपरियाण’ति चतुर्विंशतिवचनमाणमनन्यापयाय, ‘द्विसाचर’ति दिश-भरा चरति—यान्ति मय त भगवता वयं शिष्या इति दिक्चरा देशाया वा, दिक्चरा भगवच्छिष्या वा वस्थाभूता इति टीकाकार, ‘पासा वच्चिञ्ज’ति घुर्णिकार, ‘अतिय पाउ-भविज’ति समीपमागता, 5 ‘अट्टमिह पुव्वगय मग्गदसम’ति अट्टमिहम्—अट्टमिह निमित्तमिति शप, तच्चेद-दिय १ औत्पात २ जान्तरिम ३ माम ४ जाङ्ग ५ स्वर ६ लक्षण ७ यजन ८ चोति, पूव्वगत-पूवाभिधानश्रुतविशेषम-यगत, तथा मार्गो-गीतमायानुत्पन्नागलक्षणा सम्भावयत, ‘दसम’ति अत्र नवमशब्दस्य लक्षणस्य दर्शनान्नवमदशमाविति वृत्त्य, ततश्च मार्गो नवमदशमा यत्र तत्तथा, ‘सण्णि’ + स्व २ स्वनीय २ 10 ‘मद्दसण्णि’ति मतं बुद्धमत्या वा दर्शनानि-प्रमेयस्य परिउद्दानि मनि दर्शनानि ते, निज्जृहंति’ति निदूथयन्ति पूर्वलक्षणश्रुत्पयाययूथान्निधारयन्ति-

उद्धरन्तीत्यर्थ, 'उद्यद्वाइसु' ति उपस्थितवन्त आभिनवन्त इत्यर्थे,  
 'अद्भुगस्म' ति अद्भुदस्य, 'क्वैणइ' ति क्वचित्—तथाविषयनारिदिन  
 स्वप्नेण, 'उह्येयमेत्सेण' ति उद्देशमात्रेण, 'इमाइ छ अणइक्रमणिज्जाइ'  
 नि इमानि पद् अननिक्रमणीयानि— 'यभिचारयितुमशक्यानि, 'वागरणाइ' भी  
 5 पुष्प सता यानि चाक्रियन्त—अभिधीयन्ते तानि चाकरणानि पुरुषार्थोपयोगि-  
 त्वाच्चेतानि पदुकानि, अथवा नष्टमुष्टिचिन्ताद्रुमभृती यन्यान्यपि नष्टानि  
 निमित्तगोचराभवन्तीति ॥ 'अजिणे जिणपरइत्तावि' ति अजिन-  
 जर्षीतराग सन् जिनमात्मान प्रकषण लपनात्येवशीलो जिनप्रतापी, एवमन्यान्यापि  
 पत्नानि वाच्यानि, नरम् अहम्—पूजाह, केवली—परिपूणशानादि, किमुक्तं  
 10 भवति ?— 'अजिणे' इत्यादि । ( सू ५३९ )

१० गोशालकशते गोशालकोत्थानपरियानिकम् सू ५४०

'एव जहा निइयसए नियइइेसए' ति द्वितीयशतस्य पञ्चमादेशके  
 'उट्ठाणपरियाणिय' ति परियान—निबिध चातिरूपरिगमन तदेव पारियानिकं—  
 चरितम् उत्थानात्—जमन आरम्भ पारियानिक उत्थानपारियानिक तत्परि  
 1 कथित भगवद्विरिति गम्यते । 'मत्ते' ति मह्त्त —चित्रफलक—दमकर भिभाक-  
 निशप, 'सुसुमाल' इह यावत्करणादेव इत्य — 'सुकुमालपाणिपाए  
 लक्खणउज्जणगुणोववेण' इत्यादि । 'रिद्धत्थिमिय' इह यावत्करणादेव  
 इत्यम्—'रिद्धत्थिमियसमिद्धे पमुइयजणजाणउण' इत्यादि, 'यारया  
 तु पुम्मन्, 'चित्तफलगहत्थगए' ति चित्रफलक हस्ते गत यस्य स तथा,  
 20 'पाडिण्ण' ति एकमात्मान प्रति प्रत्येक मितु फलकाद्विभक्तित्यर्थ । (सू ५४ )

श्रीश्रीरेण गोशालसगम —सू ५४१

'अगारवासमउझे वसिस्त' ति अगारवास—गहवासम मुण्य—आत्तेय,

'एव जहा भावणाए' ति आचारद्वितीयश्रुतस्सन्धस्य पञ्चदशोऽध्ययने,

अनन चद् सूचित — 'समत्तपइत्ते नाह समणो होह अम्मापियरामि  
 जीयते' ति समाप्ताभिग्रह इत्यर्थ, 'चिच्चा हिरण्ण चिच्चा सुग्गण  
 चिच्चा धल' इत्यादीनि, 'पट्टम वास' ति विभक्तिपरिणामात् प्रव्रज्यापति  
 पंत्ते प्रथमे वर्षे, 'निस्साए' ति निश्चाय निश्चा कृत्वत्यर्थ, 'पट्टम अतरा  
 वास' ति विभक्तिपरिणामादेव प्रथमऽन्तर अवसरा वर्षस्य—वर्षेय्यासावन्तरवर्ष, 5  
 अथवाऽन्तरेऽपि—जिगमिपतत्थेजमप्राध्यापि यत्र सति साधुभिरवश्यमारासो विधी  
 यते सोऽन्तरावासो—वर्षाकालस्तत्र, 'वासायासं' ति वषासु वाम - चातु-  
 मासिकमवस्थान वर्षावासस्तमुपागत - उपाशिन । 'दोच्च वास' ति द्वितीये  
 वर्षे, 'तंतुपायसाल' ति कुबिन्दशाला, 'अज्जलिमउलियहत्थे' ति अज  
 लिना मुकुल्लिती - मुकुलाकारौ वृती हस्तौ येन स तथा, 'द्वयसुद्धेण' ति 10  
 द्वय-ओदनादिकु शुद्ध-उद्गमादिदोषरहित यत्र दाने तत्तथा तत्र, 'दायग  
 सुद्धेण' ति दायक शुद्धो यत्रासादिदोषरहितत्वात् तत्तथा तेन, एवमितरदपि,  
 'तिविहेण' ति उक्तलक्षणैः त्रिविधत, अथवा त्रिविधेन कृतकारितानुमतिभेदेन  
 त्रिकरणशुद्धेन—मनोवाक्यायशुद्धेन, 'वसुहारा वुद्ध' ति वसुधारा—द्रवरूपा धारा  
 यत्र, 'अहो दाण' ति अहोश-दो विस्मये, 'कयत्थे ण' ति कृतार्थ -  
 कृतस्वप्रयोगेन, 'कयलङ्खणे' ति कृतफलवलक्षण इत्यर्थ, 'कया ण लोग' 15  
 ति कृतो शुभफली अवयवे समुदायोपचारात् लोकी—इहलोकपरलोको, 'जम्म-  
 जीवियफले' ति जन्मनो जीवित-यस्य च यत्फल तत्तथा, 'तहाखुवे साहु  
 साहुखुवे' ति तथारूपे तथाविधे अविज्ञातमताविशय इत्यर्थ, 'साधौ' भ्रमणे  
 'साधुरूपे' साध्वाकारे, 'धम्मतेयासि' ति शिष्यादिग्रहणार्थमपि शिष्यो  
 भवतीत्यत उच्यते—धर्मान्तोवासी, 'खज्जमविहीए' ति खण्डत्वाशादिलक्षण— 20  
 भोजनप्रकारेण, 'सत्त्वकामगुणिएण' ति सर्व कामगुणा - अभिलाषविषय-  
 भूता रसादय सजाता यत्र तत्सत्त्वकामगुणिवं तेन, 'परमखेण' ति परमाभेन—

- क्षेत्र्या, 'आयामेत्य' इति आचामितवान्, तद्भाजनदानद्वाराणोच्छ्रिता-  
 सम्यादनेन तच्छुद्धयमाचमनं कारितवान् भोजितवानिति तात्पर्यात् 'सर्व-  
 तरवाहिरिण' इति सहाय्यतरणविभागेन बाह्येन च यत्तत्तथा तत्र, 'मग-  
 णगदेसण' इति अन्वयतो मागणव्यतिरेकतो गवेपणततश्च समाहारद्वन्द्व-  
 5 'सुद व' इति श्रूयत इति श्रुति-शब्दरता, चक्षुषा किल दृश्यमानाऽथ शब्देन  
 निश्चीयत इति श्रुतिग्रहण, 'सुद व' इति क्षयणं ह्यति-हीतव्यं ताम्, एषाऽ-  
 प्यदृश्यमनुष्यादिगामिका भवतीति गर्हाता, 'पवार्त्तं व' इति प्रवृत्ति-वार्त्ता,  
 'साडियाओ' इति परिधानवस्त्राणि, 'पाडियाओ' इति उत्तरीयवस्त्राणि,  
 क्वचिन् 'भडियाओ' इति दृश्यते तत्र भण्डिका-रन्धनादिभाजनानि,  
 10 'माहण आयामेह' इति शास्त्रिकादीनर्थान् ब्राह्मणान् लम्बयति, शास्त्रिकादीन्  
 ब्राह्मणेभ्यो ददातीत्यर्थ, 'सउत्तरोट्ट' इति सह उत्तरीयेन सोत्तरोट्ट-सम्भुक्तं  
 यथा भवतीत्येव, 'मुड' इति मुण्डनं कारयति नापितेन, 'पणियभूमिण' इति  
 पणितभूमौ-भाण्डविश्रामस्थाने, प्रणतभूमौ वा-मनोशभूमौ, 'अभिसम  
 स्नापण' इति मिलित, 'एयमट्ट पडिसुणेमि' इति अभ्युपगच्छामि,  
 15 नुक्त्वासद्भावात् छन्नस्थतयाऽनागतदोषानवगमादवश्यभावित्वाच्चेतस्यार्थस्येति  
 भावनीयमिति । 'पणियभूमिण' इति पणितभूमेरात्म्यं प्रणीतभूमौ वा-मनोशभूमौ  
 विहितवानिति योग, 'अणिच्चजागरिय' इति अनित्यचिन्तां कुर्वन्निति  
 वाक्यशेष । ( सू ५४१ )

तिलस्तम्बाधिकार — सू ५४२

'पदम सरयकाल समयसि' इति समयभाषया मार्गशीर्षपौर्णमी शरदमितीयते,  
 तत्र प्रथमशरत्कालसमये मार्गशीर्ष, 'अप्यवुद्धिकायसि' इति अल्पशब्दस्य  
 अभाववचनत्वाद्द्विदशमानवर्ष इत्यर्थ, अये तु अश्वयुक्तातिके शरदित्याह,

अन्यवृष्टिकायत्वाच्च तत्रापि विहरतां न दूषणमिति, एतच्चासङ्गतमेव, भगवतोऽ  
 प्यवश्यं पशुपणस्य क्त-यत्वन पर्युपणाकल्पेऽभिहितत्वादिति । 'हरियगरेरि  
 ज्जमाने' ति हरितक इति कृत्वा, 'रेरिज्जमाने' ति अतिशयन राजमान  
 इत्यर्थ । 'तए ण अह गोयमा' गोमाल मरुलिपुत्त एव वयासि'  
 ति, इह यद्भवत पूर्वफालप्रतिपन्नमोनाभिग्रहस्यापि मत्पुत्रदान तदकादिक 5  
 वचनं मुत्कलमित्येवमभिग्रहणस्य संभावमानत्वेन न विरुद्धमिति,  
 'तिलसगलियाए' ति तिलकलिफाया, 'मम पणिहाए' ति मा प्राणिघाय  
 -मामाभित्याय मिथ्यावादी भवत्विति विकल्प कृत्वा, 'अ-भणहलए' ति  
 अन्नरूप धारो-जलस्य दलिक-कारणमप्रवादलक, 'पतणतणायइ' ति  
 मरुषेण तणतणायने गजतीत्यथ, 'नच्चोदग' ति नात्युदक यथा भवति, 10  
 'नाइमट्टिय' ति नानिरुदम यथा भवतीत्यथ, 'पविरलवप्फुसिय' ति  
 पविरला मस्पृशिका-विधुया यत्र तत्तथा, 'रयरेणुविणासण' ति रजो-  
 धानोत्पादित योमवर्ति, रेणवब्ध-भूमिस्थितपांशावस्तादिनाशन-तदुपशमक,  
 'सलिलोदगसास' ति सलिला-शीतादिमहानघस्तासामिव यदुदर-रसा  
 दिगुणसाधभ्यादिति तस्य यो वर्ष स सलिलोदकवपास्तस्त, 'वद्धमूले' ति 15  
 वद्धमूल सन्, 'तत्थेय पइट्टिए' ति यत्र पतितस्तत्रैव प्रतिष्ठित । (सू ५४२)

सू ५४३-४६ वैश्यायनतेजोलेश्या । पउट्टपरिहार । तेजोलेश्या ।  
 धीरोपर्यमप ।

'पाणभूय जीरसत्तदयट्टयाए' ति प्राणादिषु सामान्यन या दया सेनाथ  
 प्राणादिद्वयाथस्तद्भावस्तत्ता तया, अथवा पत्पदिका एव प्राणानामुच्छ्वासादीनां 20  
 भावात् प्राणा भवनधमकत्वाद्भूता उपयागलक्षणत्वाज्जात्रा सत्त्वोपपेतत्वात्सत्त्वा  
 स्तत् कर्मधारयस्तदर्धनाथै, चश-इ पुनरर्थ, 'तत्थेय' ति शिर प्रभृतिरे,



- ‘ किं भव मुनि मुनिषु ’ ति, किं भवान् ‘ मुनि ’ तन्मयी जातः, ‘ मुनिषु ’  
 ति साते तस्य तनि शब्दा वा तन्माम्, अथवा किं भवान् ‘ मुनी ’ तन्मयः,  
 ‘ मुनिषु ’ ति मुनिषु - तन्मयानि, अथवा किं भवान् ‘ मुनि ’ मान् उ  
 ‘ मुनिक ’ महर्षितः, ‘ उदात्तु ’ ति उदात्त इति विरन्त्यायां नि-कः
- 5 ‘ जूयासेञ्जायरेण ’ ति पूजानां स्थानदानेति, ‘ सत्तद्वृ पयाइ पचचोसकरं ’  
 ति ‘ यत्नविशेषाथमुत्तम इव प्रदातदानाधमिति, ‘ सीउमिण तेयलेहस ’ ति  
 -सकापासुष्णां तजालर्यां, ‘ से गयमेय भगव गयगयमेय भगव ’ ति अ  
 गत-अवगतमन-मया इ भगवन्! यथा भगवन् प्रयान्नादयं न दग्ध, सम्भनार्थ  
 त्वाच्च गतशब्दस्य पुन पुनरुच्चारण, इह च यद्गताशालस्य वाक्यं भगवन्
- 10 कृत तत्सरागत्यन दयकरत्तसाद्भगवन्, यच्च मुनपत्रसत्रातुभृतिमुनिदुह्वान  
 करित्याति तद्गीतपागत्यन लक्ष्यनुजीरत्त्वाद्दयभारिभाषतपारित्यवगपरिति  
 ‘ सत्तित्तत्रिउलतेपरसे ’ ति सद्भिः ताऽप्रयागकाल, विपुलाप्रयागकाल त  
 लेइया-लघुविशया यस्य स तथा, ‘ मनहाए ’ ति मनस्यया यस्यां सिद्धिवाक्यं  
 यद्धयमानायामङ्गुलानता अङ्गुणस्यापो लगन्ति सा मनसेयुष्यवे
- 15 ‘ कुम्मासपिडियाए ’ ति कुम्भाया - अद्धस्विभा मुग्गाद्या मारा इत्यन्थ,  
 ‘ पियडासपण ’ ति विकट-जल तस्यास्य आधया वा-मथान विकटारथं  
 विकटाग्रयो वा तन, अमुं च प्रस्ताराच्युलुकमाद्बद्धा, ‘ जाटे य मो ’ ति यदा  
 च त्मो-भगवो वय, ‘ अनिष्कभमेव ’ ति मकारस्यागमिकृत्वाद्दनिष्कन एव  
 ‘ यणस्मइकाइयाओ पउट्टपरिहार परिहरति ’ ति परिवृत्य २-मत्वा २
- 20 यस्तस्यैव वनस्पतिशरीरस्य परिहार - परिभोगस्तत्रैवोत्पादोऽर्था परिवृत्य  
 परिहारस्त परिहरन्ति-कुञ्चनीत्यथ, ‘ खुट्टइ ’ ति चोटयति, ‘ पउट्टे ’ ति  
 परिवृत्त परिवृत्तत्वाद् इत्यर्थ, ‘ आयाए अवक्रमणे ’ ति  
 चोपदेशम्, ‘ अपक्रमणम् ’ अपसरण ‘ जहा

‘महया अमारिस’ ति महान्तममयम्, ‘एव वापि’ ति एव चेति  
महापद्मोपदर्शमानोपचिद्धम्, अपीति समुच्चय । ( सू ५४३-४६ )

सू ५४७-४९—आनन्दाय गोशालोक्तो यणिवृष्टान्त ।

तेजशक्ति । नोदनानिषेध ।

‘मह उचामिय’ नि मम सम्बन्धि महद्वा विशिष्ट-ज्योत्स्यमुपमा इगन्त ६  
इत्यथ, ‘चिरार्थाए अद्वाए’ ति चिरमतीते काले, ‘उच्चायय’  
ति उच्चावचा-उत्तमानुत्तमा, ‘अत्यस्थि’ ति द्वयप्रयोजना, कुत एवम् ?  
इत्याह—‘अत्यलुद्ध’ ति द्रव्यलालसा, अन एव ‘अत्यग्रेसिय’ ति,  
अर्थगवणिगोऽपि कुत इत्याह—‘अत्यकग्रिय’ ति प्राप्त्यर्थविच्छिन्नेच्छा,  
‘अत्यपिद्यासिय’ ति अमाप्ताथविषयसञ्ज्ञानतण्णा, यन एवमत एवाह— 10  
‘अत्यग्रेस्ययाए’ इत्यादि, ‘पणियभडे’ ति पणिन-‘यवहारस्नदर्ध  
भाण्ड, पणिनं वा-क्याणरु तदूर्ध्वं भाण्ड न तु भाजनमिति पणितभाण्ड,  
‘सगडीसागडेण’ ति शरटयो-गन्त्रिका, शकृता गनीविशेषाणा समूह  
शाकट, तत समाहारद्वयोऽतस्तेन, मत्तपाणपत्थयण’ ति भक्षणरूप यत्प  
ध्यदन—शम्बल तत्तथा, ‘अगामिय’ नि अग्रामिसं अग्रामिकां वा— 15  
अनभिलाषविषयभूताम्, ‘अणोहिय’ नि अविद्यमानजलोधिभ्रमनिगदनत्वेना  
वियमानोहां वा, ‘डिनायय’ ति यवच्छिन्नसार्धघोषात्रापाता, ‘दीहमद्ध’  
ति दीर्घमार्गा दीर्घकाला वा, ‘किणह किणहोमास’ इह यावत्करणाद्दि  
द्वय-‘नीलि नीलोभास हरिय हरिओमास’ इत्यादि, व्याख्या चास्य  
प्राग्वत्, ‘महेग यम्मीय’ नि महातमेक वमक्ति, ‘वप्पुओ’ ति वपुपि 20  
शरीराणि शिखराणात्यय, ‘अभुग्गयाओ’ ति अभ्युदगतान्यधोद्वनानि  
बोच्चानीत्यर्थ, ‘अभिनि सटाओ’ ति अभिविधिना निगता सटा—  
तद्वचयवन्त्वा केशरिस्कथस्यवद्द्वेषा तान्यभिनि शानि, इदं च तेषा

उध्वगत स्वरूप अथ नियगाह— 'तिरिय सुसपग्गहियाओ' ति 'सुसपग्गही  
तानि' सुसवतानि नानि विन्नीणानीत्यथ, अथ क्रिभूतानि ? इत्याह— 'अहे  
पन्नगद्धरूपाओ' ति सर्पाद्धरूपाणि बाहूश पन्नगस्योदरच्छिन्नस्य पुच्छत  
ऊर्ध्वीकृतमद्मथो विन्नीणमुपर्युपरि चानिश्रृण्वण भवतीत्येव रूप येषां तानि  
5 तथा, पन्नगाद्धरूपाणि चवणादिनाऽपि भवन्तीत्याह— 'पन्नगद्धसठाणसठि  
याओ' ति भावितमेव। 'ओराल उदगरयण आसाइस्सामो' ति अस्या  
यनभिप्राय—एवनिधभूमिगर्ते ऋलोदक भवति बल्मीके चावश्यभाविनो गर्ता,  
अत शिखरभेदे गर्तं प्रकृतो भविष्यति तत्र च जल भविष्यतीति, 'अच्छु'  
ति निमल, 'पत्थ' ति पथ्य—रागोपशमहेतु, 'जच्च' ति जात्य सस्काररहित,  
10 'तणुय' ति तलुक सुजगमि'यथ, 'फालियवण्णाभ' ति स्फटिकवण-  
पदाभा यस्य तत्तथा, अत एव 'ओराल' ति प्रधानम्, 'उदगरयण'  
ति उदरमेव रत्नमुदरत्न उदरजाती तस्योत्कृष्टत्वात्, 'वाहणाई  
पज्जाति' ति बलात्तदादिवाहनानि पाययति, 'अच्छु' ति निमल,  
'जच्च' ति अकारिम, 'तापणिज्ज' ति तापनीय तापग्ह, 'महत्थ' ति  
15 महाप्रयोजन, 'महग्घ' ति महामूल्य, 'महरिहं' ति महता याग्य, 'विमल'  
ति विगतगतुकमल, 'निम्मल' ति स्वाभाविसम्मलरहितं, 'निस्तल' ति  
निस्तलमतिवृत्तमित्यर्थ, 'निक्कल' ति निष्कल नासादिरत्नदोषरहित, 'यइर  
रयण' ति पद्माभिधानरत्न, 'हियकामए' ति इह हित अपायाभाव, 'सुहकामए'  
ति सुरा—आनन्दरूप, 'पत्थकामए' ति पथ्यमिव पथ्य—आनन्दकारण वस्तु,  
20 'आणुकपिए' ति अनुकम्पया चरतीत्यानुकम्पिक, 'निस्मेयसिए' ति  
नि श्रेयस यन्मायमिच्छन्तानि नै श्रेयसिक, अधिभूतगणितस्याकैरव गुणे  
केचिद्युगपयोगमाह— 'हिए' त्यादि, 'त होउ अलाहि पज्जत्त णे' ति,  
तत्— तस्माद् भवतु अल पयाप्तमित्येने शब्दा प्रतिषेधवाच्यत्वेनैकार्था  
आत्पन्तिरुप्रतिषेधप्रतिपादनाथमुक्ता, 'णे' ति न —अस्माक, 'सउपसागा

यावि' ति इह चागानि सम्भावनाथ , 'उगगविस' ति दुर्जराविय, 'चडविस'   
 ति दण्डनरकायस्य ह्यगिनि 'यापकविय, 'घोरविस' ति परम्परया पुरुषसहस्र   
 स्थापि हननसमर्थविय, 'महाविस' ति जम्बूद्वीपप्रमाणस्यापि देहस्य 'यापन-   
 समर्थवियन्, 'अहकायमहाकाय' ति कायान् शेषादीनामनिदानोऽनिकायोऽन   
 एव महाकायस्त्वन कर्मवाय, अथवा अनिकायानां मये महाकायोऽनिकाय 5   
 महाकायाऽनस्तं, 'मसिमूसाकालग' ति मयी-कजल, मूवा च- सुगणादि   
 तानभानविगेषेने इव कालको य स तथा त, 'नयगविसरोसपुण्ण' ति   
 नयवियेण-वृग्वियेण रोपेण च पूर्णो य स तथा तम्, 'अजगपुजनिगर-   
 न्यास' ति अजनपुत्राना निकरस्येव प्रकाशो-दीतिर्यस्य स तथा त, पूर्ण   
 चालवणत्वमुक्तमिह तु दीतिरिति न पुनरुक्ततेति, 'रत्तच्छ' ति रत्नाभ- 10   
 'जमउजुयलचचलचलतजीह' ति, जमल-सहवति, युगल-द्वय, चञ्चल   
 पथा भक्त्येव चलत्यो - अतिचपलयोर्निह्वयोर्यस्य स तथा त, प्राङ्गत्वाच्चैव   
 श्वाय, 'घरणीतलप्रेणिमूय' ति घरणीतलस्य घेणीभूतो-यनिनाशिम्स   
 कश्च-धविशेव इव य कृष्ण-वदीर्घत्वश्चक्षणपश्चाद्भागत्वाद्दिभाधर्म्यात् स तथा   
 तम्, 'उक्कडफुडकुडिलजडुलककखडरियडफडाडोवकरणदच्छ' ति 15   
 उक्कटो बलवताऽयेनाध्यसनीयत्वात्, स्फुटो-यक्त्वं प्रयत्नविहितत्वात्,   
 कुडिलो-यक्त्वंस्वरूपत्वात्, अण्डिल -स्कन्वदेशे केशरिणामिवादीना कमर-   
 सद्भावात्, फर्कशी निष्पुगे बलवत्त्वात्, विक्कटो-विस्तीर्णा य स्फुटाणोप -   
 फणासरम्भस्तत्करणे दक्षो य स तथा त, 'लोहागरधम्ममाणधमधमेत-   
 घोस' ति लोहस्येवाकरे ध्यायमानस्य-अग्निना ताप्यमानस्य धमधमाय 20   
 माना-धमधमेतिवर्णयन्किमितीत्याद्यन् घोष -शब्दो यस्य स तथा तम्,   
 'अणागलियचडतिवरोस' ति अनिगलित -अनिवारितोऽनाकम्बितो   
 वाऽप्रमेयश्चण्ड तीमो रोपो यस्य स तथा त, 'समुहियतुरियचयल   
 धमत' ति शुनो मुख श्वमुख तस्येवाचरण श्वमुखिका -क्रीयेकस्यव

- भयं ता त्वरित च चपलमतिचटुलतया धमन्त- शब्द कुन्तमित्यय,  
 'सरस्सरस्सरस्स' ति सर्पगतेरनुकरणम्, 'आदच्च निज्ज्ञायद्' ति  
 आदित्य पश्यति वृष्टिलक्षणनिपत्य तीक्ष्णतार्थ, 'समदमत्तोवगरणमायाय'  
 ति सह भाण्डमारया-पणितपरिच्छेदेन उपररणमात्रया च ये ते तथा,  
 5 'एगात्च्च' ति एगा एव आहत्या-आहनन प्रहारो यत्र भस्मीकरण  
 तदेकाहृत्य तद्यथा भवत्येव, कथमिव ? इत्याह- 'कूडाहृच्च' ति कृत्स्न-  
 पापाणमयमारणमहाय-त्रस्येवाहत्या-आहनन यत्र तत् कृटाहृत्य तद्यथा  
 भवतीत्येव, 'परियाए' ति पयाय-अवस्था, 'किञ्चिज्जणसद्दसिलोग'  
 ति, इह बद्ध-यास्या-सर्वदिग्ग्यापी साधुवाद कीर्ति, एकदिग्ग्यापी वण,  
 10 अर्द्धदिग्ग्यापी शब्द, तन्स्थान एव श्लोक श्लाघेतिवाचत्, 'सदेवमणुयासुरे  
 लोए' ति सह द्वैमनुजरसु-अ यो लोका-जीवलोक स तथा तत्र, 'पु-पति'  
 ति 'पुवन्ते' गच्छति, 'पुङ्गता' इति वचनात्, 'गुपति' 'गुप्यन्ति'  
 व्याकुलाभवन्ति, 'गुप-याकुलत्वे' इति वचनात्, 'थुपति' ति क्वचित्तत्र  
 'स्तुपन्ते अभिष्टुपन्त-अभिन-यन्ते, क्वचित् परिभनन्तीति दृश्यते, 'यत्  
 15 चितदिति, एतदेव दशयति- 'इति खल्वि'त्यादि, इतिशब्द परयत्  
 गुणानुवादनार्थ, 'त' ति तस्मादिति निगमन, 'तत्रेण सेएण' ति  
 तपोजन्य तजस्तप एव वा तेन 'तजसा' तेजोलक्ष्यया, 'जहा या धालेण' ति  
 यथैव 'यालन' भुजगन, 'सारक्खामि' ति सरक्षामि दाहभयात्,  
 'सगोवयामि' ति सगोपयामि क्षमस्थानप्रापणन । (सू ५४७-८९)

'पधु' ति प्रभविष्णुर्गोशालनो भस्मराशिं कर्तुम् ? इत्येक प्रश्न, प्रभुत्वा च  
 द्विधा-विषयमात्रापेक्षया तत्करणतश्चति पुन पृच्छति- 'त्रिसए ण' मित्यादि,  
 अनेन च प्रथमो विकल्प पूज, 'समत्ये ण' मित्यादिना तु द्वितीय इति,

‘पारितापणिय’ नि पारितापनिकीं कियो पुन कुर्यादिति । ‘अणमारण’  
 नि सामान्यसाधूनां, ‘स्वतिक्कम्म’ इति क्षान्त्या-कोपनिग्रहण क्षमन्त इति  
 क्षान्तिक्षमा, ‘येराण’ नि आचार्यादीनां वयं मृतपर्यायस्थविराणम् ।  
 ‘पडिचोयणाए’ इति तमनप्रतिकूलोत्थोदना कर्तव्यमोत्साहना प्रतिचोदना  
 तथा, ‘पडिसाहरणाए’ इति तमनप्रतिकूलतया विस्मयार्थस्मरणा तथा, 5  
 किमुक्तं भवति !-‘घम्मिण्ण’ मित्यादि, ‘पडायारेण’ नि मृत्युपचारेण  
 मृत्युपकारेण वा, ‘पडायारेउ’ इति ‘मृत्युपचारपटु’ मृत्युपचार करोतु, एव  
 मृत्युपकारपटु वा, ‘मिच्छं पिपडियत्ते’ इति मिथ्यात्व म्लेच्छस्य वा-अनायत्व  
 विशेषत प्रतिपन्न इत्यर्थः । ‘सुट्टु ण’ नि उपालम्भयत्नम्, ‘आउसो’ इति  
 हे आयुष्मन् !- चित्तप्रसन्नजीविन ! ‘कासय’ इति काश्यपगार्गीय ! 10  
 ‘सत्तम पउट्टपरिहार परिहरामि’ इति सत्तम शरीरान्तरप्रवेशं करोमि इत्यर्थः,  
 ‘जेवि आइ’ नि जेऽपि च, ‘आइ’ इति निपातः, ‘अउरासीइ महाकप्प  
 सयसहस्साइ’ इत्यादि गीशाख्यसिद्धान्तात् स्थाय्यो, बुद्धैः स्यनारयान-  
 त्वात्, आइ च चूर्णिकार- सद्भिद्धत्ताजो तस्स सिद्धतस्स  
 न लक्खिज्जइ’ इति, तथा पि सद्धानुसारेण किञ्चिदुच्यते- चतुरशीति 15  
 महाकल्पशतसहस्राणि क्षपयित्त्वेनि योगः, तत्र कल्पा- कालविशया, ते च  
 लोकप्रसिद्धा अपि भवन्तीति तद्व्यवच्छेदाधमुक्तं महाकल्पा बक्ष्यमाण  
 स्वरूपास्तथा यानि शतसहस्राणि-लक्षाणि तानि तथा, ‘सत्त दिव्ये’ इति सत्त  
 ‘दिव्यान्’ देवभवान्, ‘सत्त सचूहे’ इति सत्त सद्युधान्- निरुपविशयान्,  
 ‘सत्त सन्निगम्भे’ इति सन्निगम्भान्- मनुष्यगणसती, एत च तमन 20  
 मोक्षयामिना सत्तसान्तरा भवन्ति बक्ष्यन्ति चैवैतान् स्वयमपि, ‘सत्त  
 पउट्टपरिहारे’ इति सत्त शरीरान्तरप्रवेशान्, एते च सत्तमसन्निगम्भान्तर  
 क्रमेणावस्यन्ति, तथा ‘पचे’ इत्यादाविद् सभाव्यत, ‘पच कम्माणि सयसहस्साइ’  
 इति कर्मणि-कर्मविषय कर्मणामित्यर्थः, पञ्च शतसहस्राणि लक्षाणि, ‘तिट्ठि

- य कम्मस्सि' ति त्रींश्च कर्मभिदान्, 'खगइत्त' ति 'क्षरायेत्वा' अनिगच्छ ।  
 'से जहे' त्यादिना महाकल्पप्रमाणमाह, तत्र 'से जहा व' ति महाकल्प-  
 प्रमाणवाक्योपन्यासात्, 'जहिं वा पञ्जुत्तिय' ति यत्र गत्वा परि-  
 सामस्त्येन उपस्थिता-उतरना समाप्ता इत्यथ, 'एस ण अद्ध' ति एषं  
 5 गङ्गाया मार्ग, 'एएण गगापमाणेण' ति गङ्गायास्त-मार्गस्य चाभेदाद्गङ्गा-  
 प्रमाणेनेत्युक्तम्, 'एवामेव' ति उक्तनैव क्रमेण, 'सपुट्ठावरेण' ति सह  
 पूषण गङ्गादिना यदपर महागङ्गादि तत् सपूर्वापर तेन भावप्रत्ययलोपदर्शनात्  
 सपूर्वापरतयेत्यर्थ । 'तास्सि हुविहे' इत्यादि, तासा गङ्गादीना गङ्गादि-  
 गनवालुकाकणादीनामित्यर्थ, द्विविध उद्धार उद्धारणाद्यद्वैविध्यात्, 'सुहुम-  
 10 षोडिकलेवरे चेव' ति सूक्ष्मबोन्दीनि-सूक्ष्माकाराणि कलेवराणि-असङ्ख्यात  
 रण्डीकृतवालुकाकणरूपाणि यजेद्वारे स तथा, 'वायरवोदिकलेवरे चेव'  
 ति [ प्रथाप्रम् १४० ] वाटरबान्दीनि-वाटुकाकणाणि कलेवराणि-  
 वालुकाकणरूपाणि यत्र तथा, 'ठप्पे' ति न -याख्येय, इतरस्तु व्याख्येय  
 इत्यर्थ, 'अवहाय' ति अपहाय-त्यक्त्वा, 'से कोट्टे' ति स कोठा-  
 15 मङ्गासमुदायात्मक, 'खीणे' ति क्षाण, स चावरापसद्भावेऽप्युच्यते,  
 यथा क्षीणधान्य क्रीडागारमत उच्यते, 'नीरण' ति नारजा स च तद्भूमि-  
 गनरजमामा-मभावे उच्यते इत्याह-'निलेरे' ति निर्लेप, भूमिभित्त्यादिसंश्लिष्ट  
 भिकनालेपाभावात्, किमुक्त भवति ? 'निट्टिण' ति निट्टिन-निरवयवीकृत  
 इति, 'सेत्त सरे' ति अथ तत्तावत्कालखण्ड सर-सरसञ्ज्ञ भवति  
 20 मानससञ्ज्ञ सर इत्यथ, 'सरप्पमाणे' ति सर एवोक्तखण्ड प्रमाण-  
 वक्ष्यमाणमहाकल्पादेर्मन सर प्रमाण, 'महामाणसे' ति मानसोत्तर, यदुक्त  
 चतुरशीनिमहाकरपश्चसहस्राणानि तत्प्रकृतम्, अथ सन्धानां दिव्यादीनां  
 प्ररूपणमाह-'अर्णताओ सजूहाओ' ति जनन्नजविसमुदायरूपाभिरुपायात्,  
 'चय चइत्त' ति चय व्युत्पा-व्यवन कृत्वा, चय वा देह, 'खइत्त' ति

त्वक्त्वा, 'उवरिल्ले' ति उपरितनमध्यमाधस्नानानां मानसानां सद्भावात्  
तद् ययवच्छुद्रायोपरितन इत्युक्त, 'माणसे' ति मङ्गादिप्ररूपणत प्रागुक्त  
स्वरूपे सरसि सर प्रमाणायुष्कयुक्त इत्यर्थ, 'सज्जूहे' ति निनायविशये द्व, 'उव-  
वज्जइ' ति प्रथमो द्विभय सञ्जिगभसङ्ख्यासूत्रात् एव, एव त्रिषु मानसेषु  
सयूथन्यायसयूथसाहितेषु चत्वारि सयूथानि त्रयश्च द्वभवा, तथा 'मानसोत्तरे' 5  
ति महामानस पूवाकमहारत्यप्रमिनायुष्कवति, यच्च प्रागुक्त चतुरशीतिं महो  
कल्पान् शतसहस्राणि क्षपयित्वति तत्प्रथममहामानसापक्षयेनि द्रव्य, अन्यथा  
त्रिषु महामानसेषु बहुतराणि तानि स्युरिति, एतेषु चोपरिमादिभेदात् त्रिषु मानसोत्त  
रपुत्रीण्यव सयूथानि त्रयश्च द्वभवा, आदितस्तु सप्त सयूथानि पद् च देवभवा,  
सप्तमद्वन्द्वस्तु ब्रह्मलोकं, स च सयूथं न भवति, सूत्रे सयूथत्वेनानभिहितत्वादिनि, 10  
'पादणपटीणायए उदीणद्वाहिणवित्थिण्णे' ति इहायामनिष्कम्भयो  
स्थापनामात्रत्वमरगत-य, तस्य प्रतिपूणच द्रवस्थानसस्थितत्वेन तथास्तुल्य  
त्वादिति, 'जहा ठाणपए' ति ब्रह्मलोकस्वरूप तथा वाच्यं यथा 'स्थान  
पद्' प्रज्ञापनाद्वितीयप्रकरणे, तच्चैव 'पडिपुण्णचदसत्ताणसठिए अच्चि  
मालीभासरासिप्पमे' इत्यादि। 'असोगवडेंसए' इत्यत्र यावत्तरणात् 15  
'सत्तिवण्णत्रडसए चपगरडेंसए चूयत्रडेंसए मज्झे य धमलोयत्रडेंसए'  
इत्यादि वृत्त्य, 'सुकुमालगभदलए' ति सुकुमारकश्वासा भद्रश्च-भद्रमूर्ति  
रिति समास, लकारककारो तु स्वार्थिकारिति, 'मिउकुडलकुचियकेसए'  
ति मदन कुण्डलमिन्-दभादि कुण्डलकमिव कुञ्चिताश्च केशा यस्य स तथा,  
'मट्टगडतलकण्णपीटए' ति मृगगण्डतले कणपीठके-कणभिरणविशयो 20  
यस्य स तथा, 'देवतुमारसप्पमए' ति देवकुमारवत्सप्रभ देवकुमारममानप्रभो  
वा य स तथा, रुशब्द स्वार्थिक इति, 'कोमारियाए पव्वज्जाए' ति  
कुमारस्येय कोमारी मव कीमारिनी तस्यां प्रम-याया विषयभूतार्था, सङ्ख्यान-बुद्धि  
श्चित्तेभ इति योग, 'अरिद्धकण्णए चय' ति कुश्रुतिशालायाऽरिद्धकर्ण



-अयुत्पन्नमतिरित्यर्थ । 'एणेज्जम्से' त्यादि, इहेणकादय पञ्च नामतीक्ष्ण  
 मिहिता द्वी पुनरन्त्यो पितृनामसन्निताविनि । 'अल धिर' नि अत्यर्थ स्थिर  
 विकसितकाल यावद्वृक्षस्थायिनात्, 'धुव' ति ध्रुव तद्गुणाना ध्रुवत्वात्, अत  
 एव 'धारणिज्ज' ति धारयितुं योग्यम्, एतदेव भावयितुमाह—'सीए'  
 5 इत्यादि, एवभूत च तत् कुत ? इत्याह—'धिरसघयण' ति अविपटमान-  
 सहननमित्यर्थ, 'इतिकट्टु' ति 'इतिकृत्वा' इतिहतास्तन्नुप्रतिशाम्भिवि ।  
 ( सू ५५० )

सू ५५१—५६ स्तेनदृष्टान्त । आक्रोश । तेजोलेख्यामोचनम् ।

गोशालतेजोलेख्याशक्ति चरमाष्टकमयपुलागमश्च ।

सम्यक्त्वोत्पाद । तदुपासककृत नीहरणम् ।

10

'गड्ड व' ति गत श्वभ्र, 'दरि' ति गगानादिङ्गतभूत्वरविशेष, 'दुग्ग'  
 ति दुःसगम्य वनगहनादि, 'निन्न' ति निम्न शुष्कसर प्रभृति, 'पण्य व'  
 ति प्रतीत, 'पिसम' ति गतपापाणादि-याकुलम्, 'एणेण मट' ति एकेन महता  
 'तणसूएण व' ति 'तणसूकेन' तणायण, 'अणावरिण' ति अनावरो  
 15 साभावरणस्याल्पत्वात्, 'उवलभसि' ति उपलम्भवसि दृशयतीत्यर्थ, 'त मा  
 एव गोसाल' ति इह कुर्विनि शेष, 'मारिहासि गोसाल' ति इह चक्र  
 कहुमिति शेष, 'सच्चैय ते सा छाय' ति सव ते छाया अन्यथा दर्शयितु  
 मिष्टा छाया-प्रवृत्ति । 'उच्चापयार्हि' ति असमअसाभि, 'आउसणार्हि'  
 ति मतोऽसि त्वमित्यादिभिवचन, 'जाक्रोशयति' शपति, 'उद्धसणार्हि' नि  
 20 दुःकुलीनेत्यादिभि कुलागभिमानपातनाथैर्वचन, 'उद्धसेइ' ति कुलायभिमाना  
 दव पातयनाव, 'निव्वभउणार्हि' ति न त्वया मम प्रयोत्तनमित्यादिभि  
 पश्यवचन, 'निभच्छेइ' ति निररा दुष्मभिधत्त, 'निच्छोटणार्हि' ति  
 त्यजास्मदीयास्तीर्थकरालद्वारानित्यादिभि, 'निच्छोट्टेइ' ति प्राप्तमर्थ

त्यानयन्ति, 'नट्टेसि क्य्याइ' ति नट्ट स्वाचारनाशान्, 'जसि' भवसि त्व,  
 'क्य्याइ' ति कदाचिद्विनि विनयार्थ, अहमव मय यदुत नष्टस्त्वमसीति,  
 'त्रिणट्टेसि' ति मताऽसि, 'भट्टेसि' ति भ्रष्टाऽसि—सम्पद् व्यपेताऽसि त्व  
 धर्मत्रयस्य योगपदेन यागात् नष्टविनष्टभ्रष्टोऽसीति, 'नाहि ते' ति नैव त ।

'पाईणजाणरए' ति प्राचीनजानपद् प्राच्य इत्यथ, 'पट्टयाणिए' ति 5  
 प्रकाजित — शिष्यत्वनाम्नुपगत, 'अभुवगमा पवज्ज' ति पचनात्,  
 'भुड्ढाविए' ति मुग्धितस्य तस्य शिष्यत्वनानुमननात्, 'सेहाविए' ति व्रतित्वन  
 सेधित व्रतिसमाचारमया तस्य भगवतो हतुभूतत्वात्, 'सिक्रयाणिए' ति  
 शिरितभजोलस्यानुपदशदानन, 'बहुस्सुइकए' ति नियतिवादात्प्रतिपानि  
 हेतुभूतत्वात्, 'कोसलजाणरए' ति अथाध्यादेशात्पत्र । 'वाउकालियाइ 10  
 य' ति वातोत्कलिकास्थित्वा २ यो वातो वाति सा वानोत्कलिका, 'घायमडल  
 याइ य' ति मण्डलिकाभिर्वा वानि, 'सलसि वा' इत्यादी तृतायाथ सप्तमी,  
 'आररिज्जमाणि' ति स्वल्प्यमाना, 'निवारिज्जमाणि' ति निवृत्त्यमाना,  
 'मो फमइ' ति न क्रमते—न प्रभवति, 'नो पक्कमइ' ति न प्रकथण क्रमते,  
 'अच्चित्ताच्चि' ति अच्चिते—सङ्कटगत अच्चितन वा—सङ्कटगमन दर्शनाधि—पुन 15  
 र्गमनमच्चिताधि, अथवा श्रया—गमनेन सह आधि—आगमनमच्चयाच्चिगमागम  
 इत्यथ, ता करानि, 'अस्साइट्टे' ति 'अन्याणिए' अभिन्यास, 'सुएत्थि' ति  
 सुहस्तास सुहस्ती, 'अहप्यहाणे जण' ति यथाप्रधाना जनो यो य प्रधान इत्यर्थ,  
 'अगणिझामिए' ति अग्निना ध्मानो—दग्गो ध्यामितो वा इपग्ग्य, 'अगणि  
 झूसिए' ति अग्निना ष्वित क्षपितो वा, 'अगणिपरिणमिए' ति अग्निना 20  
 परिणामिन—पुवस्वभावत्याजनेनात्मभाव नीत, ततश्च इततेजा धूत्यादिना  
 गनतजा, क्वचित् स्वत एव नष्टतेजा, क्वचिद् यक्ताभूततेजा भ्रष्टतेजा, क्वचित्  
 स्वरूपभ्रष्टतेजा—ध्यामतेजा इत्यर्थ, लुप्ततेजा क्वचित् अर्द्धीभूततेजा, 'लुप्ल

च्छेदने जिद्विर् इधीभावे ' इतिवचनात्, त्रिमुक्त भवति? 'त्रिणद्वतेण'—  
 विनश्येजा नि सत्तासीधूततेजा, एकाथा वेने शब्दा, 'छुदेण' नि स्वाभिप्रायेण  
 यथेष्टमित्यथ, 'निष्पट्टपन्निणवागरण' ति निर्गतानि स्थानि प्रश्नयाकरणानि  
 यस्य स तथा तम्। 'रुदाइ पलोएभाणे' चि दीर्घा वृणीर्दिशु मक्षिपन्नित्यर्थः,  
 मानधनाना इतमानानां लक्षणमिदं, 'दीट्टुणहाइ नीसासमाणे' चि नि स्वाभा-  
 निति गम्यते, 'दाट्टियाए लोमाइ' नि उत्तरीयस्य रोमाणि, 'अवड्डु (अप्रडु)'  
 नि कृकाट्टिका, 'पुयल्लि पप्फोडेमाणे' चि 'पुततटी' पुनपदेश प्रस्फोटयन्,  
 'धिणिट्टुणमाणे' चि विनिधुन्वन्, 'हाए अहो हओहमस्सीतिकट्टु'  
 चि हा हा अहो हतोऽहमस्मीति कृत्वा—इति भाषित्वत्यथ, 'अच्चकृणमहत्थगए' चि  
 आग्रफलहस्तगत, स्वकीयतपस्तेजोजनिनदाहोपशमनार्थमाग्रास्थिक चूषाभिति  
 भाव, गानादयस्तु मथपानद्विता विक्राय समरसेया, 'मट्टियापाणएण' ति  
 मत्तिकाभिहितजलन, मत्तिकाजल सामान्यमप्यस्त्यन आह—'आयचणि  
 ओदएण' ति, इह टीजायाएया—आनन्यनिक्कीदन कुम्भकारस्य यद्भाजने  
 स्थित तेमनाय ममिश्च जल तन। 'अलाहि पज्जते' चि 'जलम्' जत्यर्थ  
 'पर्याप्त' शक्तो घातायेति योग, घातायेति हननाय तदाभिननसापेभया,  
 'वहाए' चि वधाय, एतच्च तदाभितस्थावरापेभया, 'उच्छायाणयाए'  
 चि उच्छादनताय सचतनाचतनतद्गतवस्तुच्छादनायेति, एतच्च प्रकारान-  
 रेणापि भवतीत्यभिपरिणामोपदेशनायाह—'भासीकरणयाए' नि।

'यज्जस्स' चि वजस्य—जवस्य, वजस्य वा मथपानादिपापस्येत्यर्थ,  
 'चरमे' चि न पुनरिदं भविष्यतातिक्त्वा चरम, तत्र पानकादीनि चत्रारि  
 स्वगतानि, चरमता चेदा स्वस्य निवाणगमनन पुनरकरणात्, एतानि च किल  
 निवाणकाठे त्रिनस्यावश्यम्भावीतीति नास्त्यतेषु दोष इत्यस्य तथा नाहमनानि  
 दाहापशमायापसवार्मित्यस्य चार्थस्य प्रकाशनार्थत्वाद्दस्यच्छादनाथानि भवन्ति,

सुक्लसवर्तकादीनि तु नाणि बाह्यानि मृत्तानुपयागऽपि चरमसामान्या-  
 ज्ञनचिचरअनाय चरमाण्युक्तानि, जनेन हि तया सातिशयत्वाच्चरमता  
 अर्द्धीयते, ततस्ती सशेक्तानामाप्रकूणरूपानादीनामपि सा सुअर्द्धया भवत्विति  
 बुद्धयेति, 'पाणयाइ' ति जलविशेषा मतियोग्या, 'अपाणयाइ' ति पानक  
 प्रवृत्तानि शीतलत्वेन दाहोपशमहेतव, 'गोपुट्टण' ति गोपशायत्पनिन, 5  
 'दृत्थमद्वियं' ति हस्तन मर्दित-मदित मलितमित्यथ, यथतदेवान-यनिको  
 दक, 'थालपाणण' ति स्थाल-ग्रह (?) तपानकमिव दाहोपशमहेतुत्वान्  
 स्थालपानकम्, उपलक्षणत्वादस्य भाजनान्तरग्रहाऽपि दृश्य, एवमन्यान्यपि नगर,  
 त्वक्-उल्ली, सीम्बली-कलायादिफलिका, 'सुद्धपाणण' ति द्रवहस्तस्पर्श इति,  
 'दाथालय' ति उदकाई स्थालक, 'दाथारग' ति उदकवारम्, 'दाडुभग' 10  
 ति इह कुम्भो महान्, 'दाकलस' ति कलशस्तु लघुतर, 'जहा पभोगणण'  
 ति प्रज्ञापनायां षोडशपदे, तत्र चेदमवमभिधायते- 'मत्र वा फणस वा  
 दालिम वा' इत्यादि, 'तरुणग' ति अभिनवम्, 'जामग' ति अपकम्,  
 'आसगसि' ति मुखं, आचीलेइ' ति 'आपीडयत्' इपत्प्रपीडयेत्, प्ररुषत  
 इह यदिति शप, 'कल' ति कलायो-धान्यविशेष, 'सिंचलि' ति वक्षविशप, 15  
 'पुढविसथारोवगण' इत्यत्र वचत इति शेषो दृश्य, 'जे ण ते वेरे  
 साइज्जइ' ति यस्तौ दवी 'स्वदत' अनुमन्यते, 'ससि' ति स्वक स्वकीय  
 इत्यथ । 'दृल्लु' ति गोपालिकातृणसमानाकार कीटकविशेष, 'जाय सउन्नु'  
 इति इह यावत्करणादिदं दृश्य- 'जिणे अरहा केवली' ति, धागरण 'ति'  
 मश्र, 'धागरिस्तण' ति मष्ट, 'गिलिए' ति 'यलीकित' सआत-यलीन, 20  
 'विड्डे' ति मीडा अस्यास्तांनि मीड -लज्जाप्रकषवानित्यथ, धूमाथऽस्त्यथ  
 प्रत्ययोपादानात् । 'णगतमते' ति विजने मूत्रिभागे यावदयपुलो गोशालका  
 न्तिके नागच्छतीत्यथ, 'सगार' ति 'सङ्कलम्', अयपुलो भवत्समीपे जाग  
 मिष्यति ततो भवानाप्रकूणिकं परित्यजतु सवतश्च भवत्ववस्थापमिति । 'त नो रल्लु

एष अत्र कृण्वे' ति तदिदं क्लिष्टास्थिरक न भवति, यद्दन्तिनामकल्प्य यद्  
 भवती आत्रास्थिरकतया विकल्पित, स्मिन्तु इदं यद् भवता दृष्टं तदात्रत्वम्, एतदेवाह  
 'अत्रचोयण ण एसे' ति, इय च निर्वाणगमनकाले आभयर्णायैव,  
 तत्रपानकत्वादस्या इति । तथा हलासस्थानं यत्पृथग्माणात् तन्शंयनाह—'घसी-  
 मूलसठिय' ति, इदं च घसीमूलसस्थितत्व तृणगोवालिङ्गाया लोहमनीत  
 5 मनेति, एतान्त्युक्ते मद्दिरामद्विद्वलिनमपात्रुविरसात्रस्मादाह—'घाणि वाण्टि  
 रे घीरगा २' एतदेव द्दिरावत्तयति, एतच्चोमादत्रचन तन्म्योषामकस्य  
 शण्ततोऽपि न म्यलीकफाण जान, यो हि सिद्धि गच्छति स चरमे गेयादि  
 करोतीत्यादिबचनैर्विमोदितमतिव्यादिति । 'हसलस्त्रण' ति हसस्वरूपं शुक्र-  
 मित्यथ, हसचिह्नं चेति, 'इष्टीसकारसमुदयण' ऋद्ध्या ये सत्कारा -  
 10 पूजाविशेषास्तेषां च समुदय स तथा तेन, अथवा ऋद्धिसत्कारसमुदयैस्त्विर्य,  
 समुदयश्च जनानां सद्भु, 'समगघायण' ति भ्रमणयोस्तज्जालेश्याशेषलक्षण-  
 घातदानान् घातदो घातका वा, अत एव भ्रमणमारक इति, 'दाहघकृतीष' ति  
 दाहोत्पत्त्या, 'सुवेण' ति वक्ररज्ज्वा, 'उडुमह' ति अवष्टीयत-  
 निष्ठीयत, क्वचित् 'उच्छुमह' ति दृश्यते तत्र चापशब्द किञ्चित्क्षिपतेत्यर्थ,  
 15 'आकट्टविकट्टि' ति आकपपेकैर्यिकाम्, 'पूयासकारादिरीकरणट्टयाण' ति  
 पूजासत्कारयो पूर्वगतया स्थिरताहेतो यदि तु ते गोशालककाररस्य  
 विशिष्टपूजा न कुर्वन्ति तदा लोमो जानाति नार्थं जिनो बभूव, न चैने जिन  
 शिष्या इत्यवमस्थिरी पूजासत्कारो स्यात्तामिति तथा स्थिराकरणार्थम्, 'अध-  
 गुणति' ति अपावृण्वति । (सू ५५१—५५६)

20 सू ५५७—५९ सिंहर्ष्यानीतीपघादाहशाम । सर्वानुभूतिसुनक्षत्र-  
 साधुगति' । गोशालकगतिर्विमलवाहनभ्रमश्च ।

'साण( ल ) कोट्टप नाम चेष्य होत्या वण्णओ' ति तदणको

वाच्य स च 'चिरार्णव' इत्यादि 'जात्र पुढाविसिलापट्टो' ति  
 पयिर्वीशिलापट्टकवणक यावत्, स च— 'तस्स ण असोगवरपायउस्स हेट्ठा  
 इस्सिखधीसमहणीणे' इत्यादि, 'मालुयाकच्छण' ति मालुका नाम एका  
 स्थिका वक्षश्लेषोपास्तपां यत् कक्षं—गहनं तत्तथा । 'त्रिउले' ति शरीर-यापक-  
 त्वात्, 'रोगायके' ति रोग-पीडाकारी स चासावातद्वृश्च—व्याधिरिति 5  
 रोगात्क, 'उज्जले' ति उज्ज्वल पीडापोहलक्षणविषमलेशोनाप्यकलङ्कित,  
 यावत्करणादिद् दृश्य—'तिउले' नीन्—मनोवाक्कायलक्षणानर्थास्तुल्यति—  
 जयताति त्रितुल, 'पगाटे' प्रकर्षवान्, 'कक्कसे' कर्कशद्वयमिवानिष्ठ इत्यर्थ,  
 'कडुए' तथैव, 'खडे' रीद, 'तिव्ये' सामान्यस्य क्षणितिमरणहत,  
 'दुकखे' ति दु खो दु खेहेतुत्वात्, 'दुग्गे' ति क्वचित् तत्र च दुग्गमिवान 10  
 भिक्वीयत्वात्, विमुक्त भवति ?— 'दुरहियासे' ति दुरधिसह्य —सोद्धम  
 शक्य इत्यर्थ, 'दाहयकतीण' ति दाहो व्युत्क्रान्त — उत्पन्नो यस्य स,  
 स्वार्थिकप्रत्यये दाहव्युत्क्रान्तिक, 'अधियाइ' ति अधिचेत्यभ्युच्चय, 'आइ'  
 ति वाक्यालङ्कार, 'लोहियवच्छाह पि' ति लोहितवर्चास्यपि—रुधिरात्मक  
 पुरीषाप्यपि करानि किमन्येन पीडावर्णनेनेति भाव, तानि हि क्लिप्तात्यन्त 15  
 वेदनोत्पादके रोगे सति भवन्ति, 'चाउट्यण्ण' ति चातुर्वर्ण्यं—ब्राह्मणादि  
 लोक, 'झाणसरियाण' ति एकस्य ध्यानस्य समाप्तिरयस्यानारम्भ इत्येषा  
 ध्यानान्तरिका तस्या, 'मणोमाणसिण्ण' ति मनस्यैव न बहिर्वचनादिभि  
 रप्रकाशितत्वात् यन्मानसिकं दु ख तन्मनोमानसिक तेन, 'दुये कपोया'  
 इत्याद् श्रूयमाणमेवार्थं कचिन्मन्यन्ते, अन्ये त्वाद्—कपोतक — पक्षिविशेष 20  
 स्तद्दद् य फले वर्णसाधर्म्यात् ते कपोते—कूष्माण्डे, ह्रस्वे कपोते कपोतके ते च  
 ते शरीरे वनस्पनिजीवदेहत्वात् कपोतकशरीरे, अथवा कपोतकशरीरे इव  
 भूसरवर्णसाधर्म्यादेव कपोतकशरीरे कूष्माण्डफले एव ते उपससृष्टे—ससृष्टे,  
 'तेहिं नो अट्टो' ति बहुपापत्वात्, 'पारियासिण' ति परिवासित

हस्तनमित्यथ, 'मञ्जारकडण्ड' इत्यादरपि केचित् श्रूयमाणमेवार्थं मन्यन्ते,  
 अन्ये त्वाहु — माजरी — वायुविशेषस्तदुपशमनाय कृत — सस्कृत माजोर  
 कृतम्, अत्र त्वाहु — माजरी — विरालिगभिधानो वनस्पतिविशेषस्तेन  
 कृत-भाविन यत्तत्तथा, किं तत् ? इत्याह — 'कुकुटकमासक' बीजपूरक  
 5 कण्डहम्, 'आह्रादि' ति निरवयत्त्वान्ति । 'पत्तग मोण्ड' ति पात्रकं —  
 पिठाकविशेष मुञ्चति सिक्कक उपरिक्त सत्तस्मादवतारयतीत्यर्थ, 'जटा  
 विजयस्स' ति यथा इहेव — इह शते विजयस्य वसुधापायुक एव  
 तस्या अपि वाच्यमित्यथ, 'चिलमिरे' यादि 'चिले इव' रन्ध्रे इव  
 'पञ्चमभूतेन' सपरुलपन, 'आत्मना' करणभूतेन, 'त' सिंहानगारोपनीतमाहारं  
 10 शरीरकाष्ठं प्रक्षिपतीति, 'हृष्टे' ति 'हृष्ट' निर्व्याधि, 'अरोगे' ति  
 निर्व्याधि, 'तुष्टे हृष्टे जाण' ति 'तुष्ट' नोपवान्, 'हृष्ट' विस्मित, रुस्मादवम् ?  
 इत्याह — 'समणे' इत्यादि, 'हृष्टे' ति नीरोगो जात इति । 'भारगसो  
 य' ति भारपरिमाणत, भारध्व-भारः पुरुषोद्धृष्टनीयो विंशतिपलशतप्रमाणो  
 वेति, 'धुमगसो य' ति कुम्भो-जघन्य आत्कानां पट्या, मध्यमस्त्वशीत्या,  
 15 उत्कृष्टं पुन शतनति, 'पउमवासे य रयणगासे य वासे वासिहिइ'  
 ति 'वप' वृष्टिर्विष्यति, किमिध ? इत्याह — 'पञ्चवप' पञ्चवपरूप, एव  
 रत्नवर्ग इति, 'सेण' ति श्वेन, कथभूत ? — 'स्तवदलत्रिमलसजिगासे'  
 ति शङ्खस्य यत्न - सण्डं तल वा तद्रूप विमल तत्सन्निवेश - सट्टश य स  
 तथा, माकृतत्वाच्चेव समाप्त, 'आउसिहिइ' ति आक्रोशान् दास्यति,  
 20 'निच्छोडेहिइ' ति पुरुषान्तरगम्भ-धनहस्ताद्यवयवा कारणता ये श्रमणास्तां  
 स्तो विरोजयिष्यति, 'त्रिभत्येहिइ' ति आक्रोश-यनिरिक्तदुर्बचनानि  
 दास्यति, 'पमारिहिइ' ति प्रभार-भरणक्रियामारम्भं करिष्यति प्रभारविष्यति,  
 'उद्देहिइ' ति अग्रावविष्यति, अथवा पमारिहिइ' ति भारविष्यति,  
 'उद्देहिइ' ति उपद्रवान् कर्षिष्यति, 'आच्छिदिहिइ' ति ईदत्तं छेदयति,

‘विच्छिन्देहिह’ ति विज्ञापण विविधतया वा छेत्स्यति, ‘मिदिहिह’ ति  
 स्फाटयिष्यति पात्रारोहमेतत्, ‘अयहरिहिह’ ति अयहरिष्यति—उद्दालयिष्यति,  
 ‘निन्नगरे करेहिह’ ति ‘निर्नगरान्’ नगरनिष्कान्तान् करिष्यति, ‘रज्जस्म घ’  
 चि रायस्य वा, राज्ञ्यं च राजादिपदार्थसमुदाय, आह च— “स्वाम्यमात्यभ  
 र्णं च, कोशो दुर्मिल सुहृत्। सताङ्गमुच्यते राज्ञ्यं, बुद्धिसत्त्वसमभयम् ॥१॥” ०  
 एणदयन्तु तदिशोषा, सिन्तु एण्ट्—जनपदैकदेश, ‘विरमतु ण देवाणु  
 पिया’ एयस्स अट्टस्स अकरणयाण’ ति विरमणं क्लिप्तवचनाद्योशेषयाऽपि  
 स्यादन उच्यते—अकरणतया—करणनिरपस्वतया। ‘विमलस्स’ ति  
 विमलजिनं क्लिलोत्सर्पिण्यामेकविंशतितम ‘समराये’ वृश्यते, स पावसर्पिणी  
 चतुर्थजिनस्थाने प्राप्नोति तस्माच्चार्वाचीनजिनान्तरेषु षडप सागरोपम 10  
 कोटयोऽनिकान्ता लभ्यन्ते, अयं च महापद्मो द्वाविंशते सागरोपमाणामन्ते  
 भविष्यतीति दुःखगममिदं, अथवा यो द्वाविंशते सागरोपमाणामन्ते तीर्थकृदु  
 त्सर्पिण्यां भविष्यति तस्यापि ‘विमल’ इति नाम सभाव्यते, अनेकाभिधाना  
 भिधेयत्वा महापुरुषाणामिति, ‘पउप्पए’ ति शिष्यसन्तान, ‘जहा धम्म  
 घोसस्स घण्णओ’ ति यथा धर्मघोषस्य—एकादशशतेकादशोदेशका 15  
 मिहितस्य वर्णस्तथाऽस्य वाच्य, स च ‘जाइसपप्पे कुलसपप्पे  
 षलसपप्पे’ इत्यादिसिद्धि, ‘रत्थरिय’ ति रथचर्या, ‘नोल्लायेहिह’ ति  
 नोदयिष्यति—मेरयिष्यति, सहितमित्यादय एकार्था । (सू ५५७—५५९)

सू ५६० गोशालकस्य सप्तारे भ्रमणम् ।

‘सत्ययज्झ’ ति शस्रवध्यं सन्, ‘दाहवज्जतीए’ ति दाहोत्पत्त्या काल 20  
 कृत्वोति योग, दाहपुत्त्वान्तिको वा मूलेति शेष, इह च यथोक्तक्रमेण वा-  
 सत्रिंशत्भूतयो रत्नमभादिषु यत् उत्पद्यन्त इत्यसौ तथैवात्पादित, यदाह—  
 “अस्सण्णी खलु पम्म दोष्च च सिरीसिवा तइय पक्खी। सीहा जांति



- चउत्थि उरगा पुण पचमि पुन्विं ॥ १ ॥ छट्ठिं च इत्थियाआ मच्छा मणुया  
 सत्तमिं पुन्विं ॥ ” [ असंज्ञिन खलु मयमां द्वितीयां च सरिसुपा तृतीयां  
 पथिण । सिंहा यान्ति चतुर्थीं पञ्चमीं पुन पथ्वीमुत्ता ॥ १ ॥ षष्ठीं च त्रियो  
 मत्स्या मनुष्याश्च सप्तमीं पृथ्वीम् ॥ ] इति, ‘खट्चरविहाणाई’ ति इह  
 5 विधानानि—भेदा, ‘चम्मपक्खीण’ ति वा गुलामभतीना, ‘ल्लौमपक्खीण’  
 ति हसप्रभतीना, ‘समुग्गपक्खीण’ ति समुद्गकाकारपभवतां मनुष्यक्षेत्र  
 बहिर्वर्तिना, ‘विययपक्खीण’ ति विस्तारितपभवतां समयक्षेत्रादिवर्तिनामेवेति,  
 ‘अणेगसयसहस्सखुत्तो’ इत्यादि तु यदुक्त्त तत्तान्तरभवसेयं, निरन्तरस्य  
 पथेन्द्रियत्वलाभस्योत्पत्तौऽप्यष्टभवप्रमाणस्यैव भावात्, यदाह—‘पार्थिविय  
 10 तिरिपनरा सत्तट्ठुभावा भवग्गोणे’ ति, [ पथेन्द्रियतिर्यग्रत्वात् सत्ताट्ठुभावा  
 भवग्रहणे ] इति ‘जहा पल्लवणापप’ ति प्रज्ञापनाया प्रथमपदे, तत्र चैवमिद-  
 ‘सरह्हाण सह्हाण’ मित्यादि, ‘एगखुराण’ ति अश्वादीनां, ‘हुखुराण’  
 ति गवादीनां, ‘गह्ठीपयाण’ ति हस्त्यादीनां, ‘सणहप्पयाण’ ति  
 सनसपदानां सिंहादिनखराणां, ‘क्कच्छुमाण’ ति इह यावत्करणादिद्  
 15 दृश्य—‘गाहाण मगराण पात्तियाण’ इत्यत्र ‘जहा पल्लवणापप  
 ति अनेन पत्सूचितं तदिद्—‘मच्छिउयाण मसगियाण’ मित्यादि,  
 ‘उवचियाण’ इह यावत्करणादिद् दृश्य—‘रोहिणियाण कुयूण पियि  
 लियाण’ मित्यादि, ‘पुलाक्किमियाण’ इत्यत्र यावत्करणादिद् दृश्य—  
 ‘हुच्छिउक्किमियाण गह्ल्लमाण गोलोमाण’ मित्यादि, ‘रुक्ख्खाण’  
 20 ति वृक्षाणामेकास्थिकबहुबीजम्भेदेन द्विविधाना, तत्रैकास्थिका निम्बाद्यादय,  
 बहुबीजा—अस्थिकतिन्दुकादय, ‘गुच्छाण’ ति वृन्ताकीमभृतीनां, याव  
 त्करणादिद् दृश्य—‘गुम्माण लयाण वल्लीण पच्चयाण तणाण वलयाण  
 हरियाण ओसहीण जलरहाण’ ति तत्र ‘गुमाना’ नवमालिकाप्रभृतीनां,  
 ‘लताना’ पत्रलतादीनां, ‘वल्लीनां’ पुष्पकलाप्रभृतीनां, ‘पर्वाकाणाम्’ इह

प्रभतीना, 'तृणानां' दर्भकुशादीना, 'बलयानां' तान्त्रमालादीनां, 'हरितानाम्'  
 अज्जगहस्तदुलीयरादीनाम्, 'श्रीपधानां' शालिगोधूमप्रभतीना, 'जल-  
 रहाणां' कुमुदादीनां, 'सुराणां' ति कुट्टणानाम्, आउरुपप्रभतिभूमी  
 र्फाणाम्, 'उस्तत्र च ण' ति बाहुल्येन पुन, 'पार्श्ववायाण' ति  
 पूरकानां, यावत्तरणादत्र दृश्य—'पार्श्ववायाण दाक्षिणवायाण' मित्यादि, 5  
 'सुद्धवायाण' ति मद्दस्तिमितवायूनाम्, 'दृग्गालाण' इह यावत्तरणादेव  
 दृश्य—'जालाण मुम्भुराण अचच्चीण' मित्यादि, तत्र च 'ज्वालानाम्'  
 अज्जगहस्तदुलीयरादीनाम्, 'मुम्भुराण' कुम्भुरादा मसृणाक्षिपाणाम्, 'अर्धिपाम्'  
 अज्जगहस्तदुलीयरादीनामिति । 'जोस्ताण' ति रात्रिजालानाम्, इह यावत्तरणा  
 दिद दृश्य—'हिमाणं महियाण' ति, 'राश्रोदयाण' ति राश्रोदया—भूमी 10  
 या सुदरा ति तानि स्वानादराणि, 'पुट्टणीण' ति मत्तिराना, 'सक्कराण' ति  
 शर्करिकाणा, यावत्तरणादिद दृश्य—'वालुयाण उवलण' ति, 'सूरकताण'  
 ति मणिविशपाणां, 'घाटिं सरियत्ताण' ति नगरबहिर्विनिवेश्यात्वेन, मान्तज  
 येस्यात्वेनेत्यथे, 'अतोसरियत्ताण' ति नगरान्यन्तरदेश्यात्वेन, विशिष्येस्या  
 त्नेत्यथ । ( सू ५९ )

15

म् ५६१ दारिकामम्यस्त्रररणशुता भग दृष्टप्रतिभयथ ।

'पट्टिह्वणण सुक्केण' ति 'मतिरूपेण' उचितेन शुभ्र-शोभे,  
 'भट्टकरडगसमाणे' ति आभरणभाजनतुल्या आदेयेत्यर्थ, 'तेल्लकला  
 इत्त सुम्भगोप्रिय' ति तेलकला इव-तेलाभया भजनविशेष हीराण्मसिद्ध,  
 सा च सुप्तु सर्गापत्तिया भजत्यथथा लुठति ततश्च तेलदानि स्यादिति, 'चेल 20  
 येत्ता इत्त सुम्भपरिगट्टिय' ति चेलपटावत्-वस्त्रमञ्जुषेः सुप्तु सपरिवत्ता  
 ( गीता )—निष्पद्भवे स्थाने निवशिता । 'दात्तिणिह्लेसु असुरकुमारोसु  
 धेरेसु देवत्ताण उप्पज्जिदि' ति विरागितशामण्यत्त्वाद् यथाऽनगराणां

- यमानिरेष्ववापत्ति स्यादिति, यच्च 'दाहिणित्तु' ति प्राच्यते तत्तस्य  
 मूरुमत्वम दक्षिणक्षेत्रेष्वेत्याद् इतिहृत्वा, 'अत्रिराहियसामण्ये' ति  
 आराधितचरण इत्यथ, आराधितचरणता चेह चरणप्रतिपत्तिसमयात्तस्य  
 मरणात् यान्त्रित्तिचारतया तस्य पालना, आह च—“आराधना य एत्थ चरण  
 5 पडित्तिसमयजा पभिट् । आमरणतमजसस सजमपरिपालण विहिणा ॥१॥” इति  
 [ आराधना चान् चारित्रप्रतिपत्तिसमयत आरभ्य । आमरणान्तमजसस विधिना  
 सयमपरिपालना ॥ १ ॥ ] एव चेह यत्रपि चारित्रप्रतिपत्तिभवा विराधनायुक्ता  
 अशिक्षुमाख्यभवापरिज्यातिष्पत्तरतुभवसङ्गिता इति अविराधनाभवास्तु यथात्  
 सोधमादिदेवत्यासर्गधमिद्वच्युत्पात्तिहेतव सप्ताण्यश्च सिद्धिगमनभन इत्यव  
 10 मष्टादश चारित्रभवा उक्ता, श्रूयते चाप्येव भवाश्चारित्र भवति तथाऽपि न  
 विराध, अविराधनाभगनामव ग्रहणात्ति, जय त्वाह — “जट्ट भवा उ  
 चरित्ते” [चारित्र श्री मवा ] इत्यत्र सूत्र आदानभवाना वृत्तिकृता चारिणात्त्वात्  
 चारित्रप्रतिपत्तिविशारिता एव भवा वाह्या, नाराधनाविराधनाविशेषण कार्यम्,  
 अन्यथा यद् भगवता श्रीमन्महाश्रीरेण हासिक्राय प्रमज्या बीजमिनि  
 15 दापिता तन्निरवक स्यात्, सम्यग्त्वमात्रेण वाजमानस्य सिद्धत्वात्, यत्तु  
 चारित्रदान तस्य तद्व्यभवारिने सिद्धरतस्य स्यादिति, चिरल्यापपन्न स्यादिति,  
 यच्च दशसु विराधनाभयेषु तस्य चारित्र्यपराजिन तद्व्यवतोऽपि स्यादिति न  
 दाव इति, अथ त्वाह — न हि वृत्तिकारणमनावाप्यम्भोदराविकृतसुत्रमथथ  
 चारयय भवति, आर्ययकचूर्णिकारणाप्याराधनापथम्य समर्थित्वादिती ।  
 20 एव जहा उपवाहण इ यादि भावितमेव अममहपरिवाजकवयानक इति ।  
 पञ्चदश शत वृत्तिर समाप्तमिति ।

श्रीमन्महाश्रीरजिनप्रभावाद् गोशालाकाहङ्कृतिवदगतेषु ।

समस्तत्रिंशेषु समापितेय वृत्ति शते पञ्चदश मयेति ॥ १ ॥

॥ इति श्रीमद्भगवदेवमूरित्रयत्रिहितत्रिरणयुत पञ्चदश

20 गोशालास्य शतक समाप्तम् ॥

## ॥ प्रथमं परिशिष्टम् ॥

[ श्रीमत्सूत्रवृत्ताद्गे द्वितीयं श्रुतस्कन्धं पञ्च अध्ययनम् ]

गोसाले—

पुरारूढ ऋद् इम सुणेह मेगन्तयारी समणे पुरासी ।  
से भिक्खुणो उरणेत्ता अणेगे आइक्खण्णं पुटो वित्थरेण ॥ १ ॥  
सार्जाविया पट्टवियाविरेण सभागओ गणओ भिक्खुमज्जे ।  
आइक्खमाणो बहुजन्नमत्थ न सधयाई अरणेण पुच्च ॥ २ ॥  
एगन्तमेव अट्टवा वि ण्हिंह दीयन्नमज्ज न समेद जग्हा ।

अद्दे—

पुंवि च ण्हिंह च अणामय वा एगन्तमेव पडिसधयाइ ॥ ३ ॥  
समिच्च लोण तसथावराण खमकरे समणे माहणे वा ।  
आइक्खमाणो वि सहस्समज्जे एगतय सारयई तहच्चे ॥ ४ ॥

धम्म कहतस्स उ नत्थि दोसो  
खतस्स दतस्स जिददियस्स ।  
भासाय दोसे य विज्जगस्स  
शुणे य भासाय निसेवगस्स ॥ ५ ॥

मट्ठवण पच अणुव्यण य तहेव पचासण सणरे य ।  
विरइ इट्ठ स्सामणियम्मि पुण्णे एणारसक्की समणे त्ति वेमिं ॥ ६ ॥

गोसाले—

स्त्रीओद्दग सेणउ बीयकाय आहायकम्मं तद्द इत्थियाओ ।  
एगन्तचारिस्सिह अग्घ धम्मे तरस्सिणो नाभिसमेद पाव ॥ ७ ॥

अद्दे—

सीओदग वा तह वीयकाय आहायकम्म तह इत्थियाओ ।  
 एयाइ जाण पडिमेरमाणा अगारिणो अस्समणा भवन्ति ॥ ८ ॥  
 सिया य वीओदग इत्थियाओ पडिसेवमाणा समणा भवतु ।  
 अगारिणो वी समणा भवतु सेवति क त पि तहप्पगार ॥ ९ ॥  
 जे यापि वीओदगभोइ भिक्खू भिक्खु विह जायइ जीवियट्ठी ।  
 ते नाइसजोगमविप्पहाय कायोऽग्गा णतकरा भवति ॥ १० ॥

गोसाले—

इम वय तु तुम पाउकुब्ब पावाइणो गरिहसि सब्ब एव ।

अद्दे—

पायाइणो पुट्ठी पुट्ठी किट्ठयन्ता सय सय विट्ठि करन्ति पाउ ॥ ११ ॥  
 ते अन्नमन्नस्स उ गरहमाणा अक्खति भो समणा भाट्ठणा य ।  
 सओ य अत्थी असओ य नत्थि गरहामु विट्ठि न गरहामु किंचि ॥ १२ ॥  
 न किंचि रुवेणऽभिधारयामो सविट्ठिमाग्ग तु करेमु पाउ ।  
 मग्गे इम किट्ठिप आरिण्हि अणुत्तरे सण्णुरिसेहि अज्जू ॥ १३ ॥  
 उट्ठु अहेय तिरिय दिसासु तसा य जे थारर जे य पाणा ।  
 भूयाहिसकामि इगुउमाणा नो गरहइ बुस्सिम किंचि लोए ॥ १४ ॥

गोसाले—

आगन्तगारे आरामगारे समणे उ मीए न उणेइ वास ।  
 दक्खता हु सत्ती बहणे मणुस्सा ऊणाइरित्ता य एवाएण य ॥ १५ ॥  
 मेहाविणो सिक्खित्तय बुद्धिमता सुत्तेहि अत्थेहि य निचउयत्ता ।  
 पुच्छिउसु मा णे अणगार अन्ने इर सकमाणो न उणेइ तत्थ ॥ १६ ॥

अद्दे—

नाकामकिञ्चा न य बालकिञ्चा यथाभिओगेण कुओ मपण ।  
 वियागेरज्ज पसिण न या वि सकामकिच्चोणिह आरियाण ॥ १७ ॥  
 गता च तत्या अदुया अगता वियागेरज्जा समियासुपप्पे ।  
 अणारिया दसणओ परित्ता इइ संकमाणो न उवेइ तत्य ॥ १८ ॥

गोसाले—

पण्ण जहा वणिण उदयट्ठी आयस्स हेउ पगेरेइ सग ।  
 तऊरमे समणे नायपुत्त इच्चेय मे होइ मई वियक्का ॥ १९ ॥

अद्दे—

नय न कुज्जा त्रिनुणे पुराणं चिच्चामइ ताइ य साह पय ।  
 एयावया बभउइ सि धुत्ता तस्सोदयट्ठी समणे ति वेमि ॥ २० ॥  
 समारभते धणिया भूयगाम परिग्गह चेव ममायमाणा ।  
 ते नाइसओगमाविप्पहाय आयस्स हेउ पगेरति सर्ग ॥ २१ ॥  
 वित्तेमिणो मेणुणसपगाट्ठा ते भोयणट्ठा वणिया ययति ।  
 यय तु कामसु अज्जोवयन्ना अणारिया पेमरसेसु गिद्धा ॥ २२ ॥  
 आरंभग धेव परिग्गह च अविउस्सिया निस्सिय आयदढा ।  
 तेसिं च से उदप ज धयासी चउरतणताय इहाय नेह ॥ २३ ॥  
 नेगति नच्चति य ओदप सो ययति ते दो विगुणोदयम्मि ।  
 से उदप साइमणत्तपत्ते तमुदय साहयइ ताइ नाइ ॥ २४ ॥  
 अहिंसय सव्वपयाणुकपी धम्मे ठिय कम्मविवेगहेउ ।  
 तमायदडेहिं समायरता अबोहिण ते पडिरूवमेय ॥ २५ ॥

## ॥ द्वितीय परिशिष्टम् ॥

[ दीर्घनिकायस्यसामञ्जसफलधृत्वात् ]

१९ एकमिदाह भन्ते समय येन मङ्गललिगोसालो तेनुपसर्कर्म ।  
उपसर्कर्मिन्वा मङ्गललिगोसालेन मन्दि समोर्दि समोदनीय कथं  
5 सावर्णीय र्धातिसारेत्या एङ्मन्त निसीर्दि । एकमन्त निसिद्धो खो अद्  
भन्त मङ्गललिगोसाल एतद्वोच । “ यथा नु खो इमानि, भो गोसाल,  
पुषुसिप्पायतनानि सव्यर्थाद् एत्याराहा पे सक्का नु खो भो  
गोसाल एवमेव दिद्वेय धम्मे सदिद्विक सामञ्जसले पज्जापेतु ! ” ति ॥

२० एङ् युक्ते भन्ते मङ्गललिगोसालो म एतद्वोच । ' नत्थि  
10 महाराज हेतु, नत्थि पच्चयो सत्तान सकिलेसाय अहेतुअपच्चया  
सत्ता सकिलिस्सन्ति । नत्थि हेतु, नत्थि पच्चया सत्तान विसुद्धिया,  
अहेतुअपच्चया सत्ता विसुज्झन्ति । नत्थि अत्तकारे, नत्थि परकारे

[ सुमङ्गलविलासिर्नीनाम्न्या दीर्घनिकायटीकाया ]

१९ एत्थ पन मङ्गललीति तस्स नाम, गोमालाय जातत्ता गोसालो ति  
15 द्वुतिये नाम । त किर सकदमाय भूमिया तत्तण्ण गहेत्वा मञ्जन्त ' तात, मा  
खलि ' इति सामिको आह । सो पमादेन सलित्वा पतित्वा सामिकस्स भयेन  
पलायित्तु आरब्धो । सामिको उपधावित्वा दत्ताकरण अग्गइसि । सो साटक  
छट्टेत्वा अचेत्तसो हुत्वा पलायि ॥

२० ' मङ्गललिवादे पच्चयो इतुवचनमेव । उभयेनापि विचमानमेव काम  
20 दुच्चरितार्दि सकिलेसपच्चय, कायसुचरितार्दि च विसुद्धिपच्चय  
पठिकेसपति । अत्तकारे ति अत्तकारो । येन अत्तना क्तकम्मेन इमे सत्ता देवत्तं  
पि मारत्त पि मङ्गलत्तं पि सावकत्तोर्दि नि पञ्चेरुत्तोर्दि पि सवञ्जन्त पि पाणुणन्ति,

नत्थि पुरिसकारे, नत्थि बल, नत्थि विरिय नत्थि पुरिसयामो, नत्थि  
पुरिसपरक्कमो । सत्त्वे सत्ता सत्त्वे पाणा सत्त्वे भूता सत्त्वे जीवा  
अत्ता अत्ता अत्थिरिया नियतिसगतिभावपरिणता छस्सेयाभिजातिसु  
सुएदुक्ख पटिसवदेन्ति । सुदस एो पणिमानि योनिपमुखसतसह-  
स्सानि सट्ठि च सतानि छ च सतानि, पत्थ च कम्मूनी सतानि पत्थ 5

त पि पत्थिक्खिपति । दुनियराद्धन य परकारं परस्म ओवादानुगासनि निम्माय  
ठोत्ता महामत्त अवमसो जनो मनुस्ससोभगपत्त आदिं कत्ता याव अरहत्त  
पापुणानि, त परकार पत्थिक्खिपति । एवमय बालो जिनचक्र पहार देति नाम ।  
नत्थि पुरिसकारे ति येन पुरिसकारेण सत्ता वुत्तप्पमारत्तपत्थिया पापुणन्ति  
तं बल पत्थिक्खिपति । नत्थि विरिय ति जादीनि सत्त्वानि पुरिसकार- 10  
वचनानेव ' इदं नो विरियं इदं पुरिसत्थानेन इदं पुरिसपरक्कमेण पवत्त ' ति,  
एव पवत्तरचनपत्थिक्खेपकरणवत्तेन पनेतानि विमु आदियति । सत्त्वे सत्ता  
ति ओट्टुगाणमद्दभादयो अनवमेणे परिगण्हाति । सत्त्वे पाणा नि एक्किद्वियो  
पाणो द्विद्वियो पाणो निआदिरत्तन वदात्त । सत्त्वे भूता ति अण्डकोस  
वत्थिक्कोसेमु भूते सभूते सधाय वदति । सत्त्वे जीवा ति सालियवगोधूमादयो 15  
सधाय वदति । तेसु हि सो विरुद्धनभावेन जीवसञ्जी । अवसा अत्ता  
अत्थिरिया ति तस अत्तनो वसो वा बल वा विरिय वा नत्थि । नियति  
सगतिभावपरिणता ति । एत्थ नियती ति नियत्ता, सगती ति छन्न  
अभिजातीन तत्थ तत्थ गमने, भायो ति सभावो येव । एव नियतिया च  
सगतिया च भावेन च परिणता नानप्पकारत्त पत्ता । येन हि यथा भवित्तम् 20  
सो तथेव भरति, येन न भवित्तं च सो न भवतीति दस्सेति । छस्सेयाभिजातिसु  
ति छसु एव अभिजातिसु उत्ता सुग च दुक्ख च पत्थिवेदेन्ति । अत्ता  
सुवदुक्खभूमि नत्थीति दस्सेति योनिपमुखसतसहस्सानीति प्पुखयोनीन



य कम्मानी तीणि य कम्मानी कम्मे य अहकम्मे य, इन्द्रियपटिपदा,  
 इन्द्रन्तरकप्पा, छट्ठीभजातियो, अट्ट पुरिसमृमिया पण्हनपञ्जास  
 आजीवसते, पण्हनपञ्जास परिव्याजकसते, पण्हनपञ्जास नागायास  
 सते, यीसे इन्द्रियसते, तिसे निरयसते, छत्तिम रजोधातुयो, सत्त  
 5 सज्जिगग्मा, सत्त असज्जिगग्मा, सत्त निगण्ठिगग्मा, सत्त देवा,

उत्तमयोर्नानं शुद्धसत्तसहस्रानि अञ्जानि य सट्ठिसताति, अञ्जानि  
 य छसतानि, पय य कम्मनो सतानीति पय कम्मानी चाति केवलं  
 तत्रमत्तंन निरत्यरु दिट्ठि दीयति । पय य कम्मानी तीणि य कम्मानीति  
 आदिमु वि एमेव नयो । केचि पनट्ट-पय कम्मानीति पथिदिपवसेन  
 10 भणाति, तीणी ति तीणि कायकम्मदिस्सेनाति । कम्मे य अहकम्मे चाति,  
 एत्थ पनसा कायकम्म य वर्वाकम्म य कम्म नि लद्धि, मनाकम्म उपट्टकम्म  
 ति । इन्द्रियपटिपदा ति इन्द्रिय पटिपदा ति वदति । इन्द्रन्तरकप्पा ति  
 एकस्मि कप्पे चतुसट्ठि अन्तरकप्पा नाम होन्ति । अयं पन अञ्ज हे  
 अजानन्तो एवमाह । छट्ठीभजातियो ति कण्ठाभिजाति नीलाभिजाति  
 15 लोहिताभिजाति इलिदाभिजाति मुक्काभिजाति परममुक्काभिजाति इति इमा छ  
 अभिजातिया वदति । तत्थ आरभिका सूकरिका साकुन्तिहा भागविका लुहा  
 मच्छपातका चारा चोरपातका बधनागारिका य वा पनञ्जे पि केचि  
 कुररकम्मन्ता, अयं कण्ठाभिजातीति वदति । भिक्खु नीलाभिजातीति वदति ।  
 ते किर चतुसु पञ्चयसु कण्ठके ( कन्दके ) पक्खित्वा रादन्ति । भिक्खु य  
 20 कण्ठक ( कन्दक ) बुत्तिका ति अयं हिस्स पालि येव । अथवा कण्ठरुत्तिका  
 एव नाम एके पन्नजिता ति वदति । इमे किर पुरिमेहि हीहि पण्हतरा ।  
 गिदी ओदातवसना अपेलकसापका इलिदाभिजातीति वदति । अय अचनो  
 पच्चयदायके निगण्ठे हि पि जेटुकतरे करोति । आजीविका आजीविनियो अयं

सत्त मानुसा, सत्त पेसाचा, सत्त सरा, सत्त पडुवा, सत्त पडुया-  
सतानि, सत्त पपाता सत्त पपातसतानि, सत्त सुपिना सत्त सुपिन  
सतानि शुल्लासीति महाकप्पुनो सतसहस्सानि यानि बाले च  
पण्डिते च सधावेत्या ससरित्वा इक्खस्सन्त फरिस्सन्ति । तत्थ  
नत्थि-इमिनाह सीलन वा वतेन वा तपेन वा ब्रह्मचरियेन वा 5

सुक्काभिजाताति वदति । ते किर पुरिमिहि चतुहि पण्डरतण । नन्दो वच्छो, कित्तो  
सनिच्चो मक्खालिगोसालो परमसुक्काभिजातीति वदति । ते किर सव्वेहि पि  
पण्डरतरा । अट्ट पुरिमभूमियो ति, मन्दभूमि खिड्डामूमि विमत्तनभूमि उशुगत  
भूमि सेखभूमि समणभूमि जिनभूमि पन्नभूमि ति इमा अट्ट पुरिसभूमियो ति वदति ।  
तत्थ जातदिनसतो पट्टाय सत्तद्विक्खे सधाधत्तानतो निक्खन्तत्ता सत्ता मन्दा 10  
होन्ति मोग्घा । अय मन्दभूमिनि वदति । ये पन दुग्गतितो आगता होन्ति, ते  
अभिण्ह रादन्ति च्च वित्थन्ति च्च, सुगतितो आगता तं अनुस्परित्वा  
अनुस्सरित्वा हसन्ति । अय खिड्डामूमि नाम । मातापितुञ्च हत्थ वा पाद्  
वा मञ्च वा पीठ वा गहत्वा भूमियं पदनिक्खतमन पन धीमत्ताभूमि नाम ।  
पद्दसा गत्तु समत्थकालो उशुगतभूमि नाम । सिप्यानि सिक्खत्तनकालो सत्त 15  
भूमि नाभ । धरा निक्खत्तम्म पच्चजनकालो समणभूमि नाम । आचरिय सेवित्वा  
विजाननकालो जिनभूमि नाम । भिक्खु च्च पन्नको जिनो न किञ्चि आहानि  
एव अलाभिं समण पन्नभूमि ति वदति । एकूनपञ्जास आजीयसत्ते ति  
एहनपञ्जास आजीववुत्तिसतानि । परिट्वाजकसत्ते ति परि वाजकपञ्जा-  
सतानि । नागावाससत्ते ति नागमण्डलसतानि । वीसे इन्द्रियसत्ते ति वीस 20  
इन्द्रियसतानि । तिंसे निरयसत्ते ति तिंस निरयसतानि । रजोधातुयो ति  
रजआकिण्णट्टानानि हत्थपाठपादपीठानि सधाय वदति । सत्त सञ्जिगव्मा  
ति ओट्टुगोणगद्दभअजपसुमिगमहिसे सधाय वदति । असञ्जिगव्मा ति

अपरिपक्व वा कम्म परिपाचेस्सामि, परिपक्व वा कम्मं फुस्स फुस्स  
 द्यन्तिकरिस्सामि इति । देव नत्थि दोणमिते सुखदुक्खे परियन्तकटे  
 ससारे, नत्थि हायनवहुने नत्थि उक्कसात्तकसे । सेत्थथापि नाम  
 सुत्तगुटे खित्ते निवेडियमानमेव फलेति, पप्रमय घाले च पाण्डिते

- 5 सालिपवगोधूमसुग्गकुवरक्कुद्दसके सधाय वदति । निगण्ठिग्गभा ति  
 गण्ठिग्गि जातगग्गभा, उच्चुवेच्चुनाग्गदपा सधाय वदति । सत्त देवा ति बह  
 देवा, सो पन सत्ता ति वदति । मानुसा पि अनन्ता, सो सत्ता ति वदति ।  
 सत्त पिसाचा नि पिसाचा महन्तामहन्ता सत्ता ति वदति । सरा नि  
 महासरा । कण्णसुण्णरथररअनात्तससीहपपातनियग्गग्गमुच्चत्तिन्दुकुणान्दहे  
 10 गहेत्वा वदति । पच्चुटा (१) ति गण्ठिका । पपाता ति महापपाता । पपात  
 सतानीति सुद्धकपातसतानि । सुपिना ति महासुपिना व । सुपिन  
 सतानीति सुद्धकसुपिनासतानि । महाक्कप्पुनो ति महाक्कप्पान । तत्थ  
 एकम्हा महासरा वस्ससते कुसग्गेन एक उद्धव्विद्धु नीहरित्वा सत्तवल्लु  
 त्थिं सरे निरुद्धे कते एकी महाक्कप्पो ति वदति । एवरूपान महाक्कप्पान  
 15 चतुरासीतिसनसहस्सानि सेपेत्वा घाले च पाण्डिते च हुक्कएस्सन्त फरोन्तीनि  
 अयमम्म लद्धि । पण्डितो पि किर अन्तरा मुज्झितु न सक्कोति, बालो पि  
 ततो उद्ध न गच्छति । सीलेन वा ति अचेत्तकत्तिलेन वा अज्जेन वा येन  
 ऋन चि । वत्तेना ति तादिसेनेय । तपेना ति तपोक्कम्मेन । अपरिपक्व  
 परिपाचेति नाम, यो 'अह पण्डितो' ति अन्तरा विसुज्झति । परिपक्व  
 20 फुस्स फुस्स द्यन्तिकरोति नाम यो अहं बालो ? ति सुत्तपरिमाण काल  
 अतिक्रमित्था याति । हेव नत्थीति एव नत्थि, तं हि उभयं पि न सक्का कातु  
 ति दीपेति । दोणमिते ति दोणन मिते, दोणन मित विय । सुखदुक्खे ति  
 सुख दुक्ख । परियन्तकटे ति सुत्तपरिमाणेन कालेन कटपरियन्ते । नत्थि

च सघाधित्वा ससारित्वा इक्खस्सन्त करिस्सन्तीति ॥ इत्य रसो  
मे भन्ते मक्खलिगोसालो सदिट्ठिक सामञ्जफल पुट्टो समानो  
ससारविसुद्धिं व्याकासि ॥

---

हायनवट्टने ति नत्थि हायनवट्टनानि । न ससारो षण्ढितस्स हायति, न षालस्स  
वट्टतीति अत्थो । उक्खसायकसे ति उक्खसायकमानि, हायनवट्टनानेमेवेत षवचन 5  
इदानि त अत्थ उपमाय सापेत्तो सेट्ठयथापि नामा ति आदिमाह । तथ  
सुत्तगुळे ति षेठेत्वा कत्तसुत्तगुळ । निम्बेठियमानमेव फलेतीति पच्चते वा वा  
रुक्खगे वा ठत्वा सित्त सुत्तप्पमाणन निम्बेठियमानमेव गच्छति, सुत्ते र्सीणे  
तत्थेव तिट्ठति न गच्छति । एवमेव बुत्तकालतो उद्ध न गच्छतीति दस्सेति ॥

---



# ARDHAMĀGADHĪ AND PRAKRIT WORKS

Edited By

Prof. N V VAIDYA, M A

Fergusson College POONA 4 (India)

- (1) **ANTAGADADASĀO &**  
**ANUTTAROVAVĀIYADASĀO** *Out of print*
- (2) **BAMBHADATTA & AGADADATTA** *Out of print*
- (3) **RĀYAPASENAIJJASUTTAM** *The Second*  
*Uṣāḅga of the Jain Canon* *Out of print*
- (4) **NĀYĀDHAMMAKAHĀO** *The Sixth Anga*  
*of the Jain Canon* *Complete Text only* 7-8 0  
*Critically Edited for the first time*
- (5) **NĀYĀDHAMMAKAHĀO**  
*Chapters IV-VIII & IX & XVI-Two Volumes* 7-0-0
- (6) **PAUMACARIYA** of Vimalasūri *Chapters I-IV* 4 0-0
- (7) **SAMARĀICCAKAHĀ** Of Haribhadrasūtri:  
*Chapter VI* *Out of print*
- (8) **DASAVEYĀLIYASUTTAM** *The Second*  
*Mūlasūtra of the Jain Canon* *Chapters I-VI* 2 0-0
- (9) **USĀNIRUDDHAM :**  
**BY** **CANTOS I & II** 2-4-0  
**RĀMA PĀNIVĀDA**
- (10) **NALAKAHĀ & VARUNAKAHĀ** *From*  
**KUMĀRAPĀLAPRATIBODHA**
- (11) **UTTARĀDHYAYANASŪTRAM**  
*The First Mūlasūtra Of The Jain Canon*  
*Complete Text Only*

Edited By

R D Vadekar & N V Vaidya

2 0 0

Fergusson College Poona-4

Text Edited with English Translation, Notes and Introduction

# JAINISM IN GUJARAT

( 1100 A. D To 1600 A D )

By C B SHETH, M. A.

Some Opinions

With great interest, I read your book ' Jainism in Gujarat ' It is a very helpful work, being a mine of information which you have put together with great industry Please accept my greetings

Dr A N Upadhye  
Vice-Principal Rajaram College  
Kolhapur

---

Jainism in Gujarat is an original work on the history of Gujarat It was written at the invitation of the University of Bombay It fills up a gap in the Literature on the history of Gujarat that has not taken adequate account of the unique contributions made by Jainism to the history and culture of Gujarat. This work dealing with a rich and glorious heritage preserved by Jainism in Gujarat will be very useful to students of Indian History

( Agian )

---

I have read with great interest the comprehensive and well-documented narrative of the Jain contribution to the history and culture of Gujarat and Saurashtra written by Mr Chimanlal B Sheth in English The writer has consulted all available literature which is extant in Sanskrit Prakrit and Gujarati on the subject and he has tried his utmost to connect it with the relevant Persian literature on that period The treatment is lucid and balanced

K H Kamdar  
Professor of History and Politics  
Vallabh Vidyanagar

